ISSN 2394-756X

एग्रोक्सी फसल क्रांति

मूल्य: एक प्रति 60 रुपये

वर्ष – 12 अंक – 10 | www.fasalkranti.in | अक्टूबर 2025

BKT
GROWING TOGETHER
bkt-tires.com
भारत का विकास
भारत का टायर
COMMANDER
BKT COMMANDER REAR
गेहूं की खेती के लिए
उत्तम पिछला टायर

MONTRA ELECTRIC
125 Years Trust
murugappa
अपनाएं खेती का
भविष्य
चुनिए विकास, चुनिए इलेक्ट्रिक
कम खर्चा
कम देखभाल
ज़्यादा बचत
आज ही अपने ट्रैक्टर को
1800 833 3301
पर प्री-बुक करें
India's 1st Electric Tractor
E-27

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा

सभी किसान भाईयों को
धनतेरस एवं दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएं।

ACE
TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4
सिलिण्डर का
4088 CC
दमदार इंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्यूल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

आई. पी. एल. ट्राईफोर्स
ट्रिपल सुपरफॉस्फेट (टी. एस. पी.)

Triforce

ट्राईफोर्स के उपयोग से लाभ

1. **फसलों को अधिक फॉस्फोरस की आपूर्ति:** ट्राईफोर्स जल मे 92% तक घुलनशील है, जो फसलों को शीघ्र व अधिक फॉस्फोरस की आपूर्ति करता है।

2. **बेहतर मृदा स्वास्थ्य:** ट्राईफोर्स उर्वरक मृदा में फसलों की जड़ों का अत्याधिक विकास कर मृदा जैविक कार्बन को बढ़ाता है, जिससे मृदा के भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणों मे सुधार होता है।

3. **जड़ों का अत्याधिक विकास:** ट्राईफोर्स उर्वरक के उपयोग से फसलों की जड़ों का फैलाव अधिक होने की वजह से यह मृदा से जल एवं सभी पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ाता है।

4. **कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त:** ट्राईफोर्स उन क्षेत्रों के लिए एक बेहतर उर्वरक है जहां सिंचाई के कम साधन है या वर्षा कम होती है।

5. **दलहनी फसलों के लिए वरदान:** ट्राईफोर्स के उपयोग से दलहनी फसलों की जड़ों में अधिक गाठें बनती हैं जिससे वायुमंडलीय-नाइट्रोजन स्थिरीकरण बढ़ता है।

6. **बेहतर फसल उपज और गुणवत्ता:** ट्राईफोर्स मे फॉस्फोरस के अलावा कैल्शियम भी होता है, जो सभी फसलों की उत्पादकता व गुणवत्ता में सुधार करता है।

7. **क्षारीय मृदाओं के लिए अद्भभुत उर्वरक:** क्षारीय मृदाओं मे ट्राईफोर्स के उपयोग से मृदा पी. एच. घटती है जिससे सभी पोषक तत्वों की उपलब्धता में वृद्धि होती है।

8. **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी:** ट्राईफोर्स ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करता है।

9. **पर्यावरण अनुकूल उर्वरक:** ट्राईफोर्स एक विशुद्ध उत्पाद है एवं पर्यावरण अनुकूल उर्वरक है।

ट्राईफोर्स का वादा
लागत कम - लाभ ज्यादा

ट्राईफोर्स सभी फसलों के उपयुक्त उर्वरक

IPL
इंडियन पोटाश लिमिटेड
3 गोखले मार्ग, लखनऊ-226 001.
फोन: 0522 - 2208863/2208864/9918678301, फैक्स: 2208864/2207640
ईमेल: ipllkw@potindia.com / ipllkw@gmail.com, वेबसाइट: www.indianpotash.org

ADV 414
ADVANTA
सरसों का सरताज
करे हर खेत में राज
ADV414
ADV414
ADVANTA
ADV 414
HYBRID MUSTARD SEED
मोटे एवं
वजनदार दाने
तेल की
अधिक मात्रा
ज्यादा शाखाएँ,
फलियाँ
एवं ज्यादा दानों
की संख्या
प्रमुख
बीमारियों के
प्रति बेहतर
सहनशीलता

ADV 427
ADVANTA
मोटा दाना
मोटा मुनाफा
मोटे एवं
वजनदार दाने
तेल की अधिक मात्रा
ज्यादा शाखाऐं, फलियां एवं फलियों
में ज्यादा दानों की संख्या
हर प्रकार की जमीन,
कम पानी में भी बेहतर प्रदर्शन
ADVANTA
ADV 427
HYBRID MUSTARD SEED
अधिक जानकारी के लिए कृपया व्हाट्सएप करें
98870 91390

ऑस्कर
Saffire
GROW TOGETHER
सही है
सफल मुकाम
दमके फसल, चमके किसान
AAUSKAR
ऑस्कर
ऑस्कर
ऑस्कर
ऑस्कर
CSA
शक्तिशाली
फफूंदनाशक
आइये बढ़ें
सबके साथ, एक साथ

RMPCL
महावीरा
सुनहरे रबी की पहली किरण
Zironवाले खेतों के संग
इस रबी, अपने **आलू, सरसों, गन्ना, गेहूं, किन्नू** और **चने** की फसलों को दें Ziron के पाँच तत्वों की शक्ति!
Zn
Ca
S
P
B
ZIRON
ZINC+BORON
एक ही उर्वरक,
रबी के फसलों की करें पूरी
हर ज़रूरत!
www.rmphosphates.com
Toll free: 8956926412

देहात
बीज से बाज़ार तक
ख़बरदार!
गेहूँ की उपज वज़नदार
अधिक उपज
अधिक कल्ले
गिरने के प्रति सहनशील
KUBER-86
DWS-187
DWS-555
DWS-777
DBW-303
DWS-909
URJA-27
बीज संबंधित जानकारी के लिए नज़दीकी देहात केंद्र पर जायें
या 1800-1036-110 पर कॉल करें।

Coromandel
FUTURE POSITIVE
GROMOR SURAKSHA
बेनोफिट
आलू फिट
उपज सुपर हिट
पछेती झुलसा
अगेती झुलसा
नया आविष्कारी पेटेंटेड उत्पाद
GROMOR SURAKSHA
BENOFIT
Propineb 70.0% + Cymoxanil 6.0% WP
Fungicide
800 gm
Coromandel
मात्रा
८०० ग्राम/एकड़
लंबी अवधि का नियंत्रण
बेहतर परिणाम देता है
फसल के लिए सुरक्षित
कोरोमंडल इन्टरनेशनल लिमिटेड, कोरोमंडल हाउस,
१-२-१०, सरदार पटेल रोड, सिकंदराबाद-५०० ००३, तेलंगाना, भारत।

provimi

Cargill | Nourishing the world

भरोसेमंद मिनरल मिक्सचर...

MHA - चिलेटेड

बेस्टमिन® गोल्ड

मिनरल्स और विटामिन्स का सही संतुलन

- 13 ˘ यलिह इफेंल4 ˘ श्ठ्ठैयन्ह

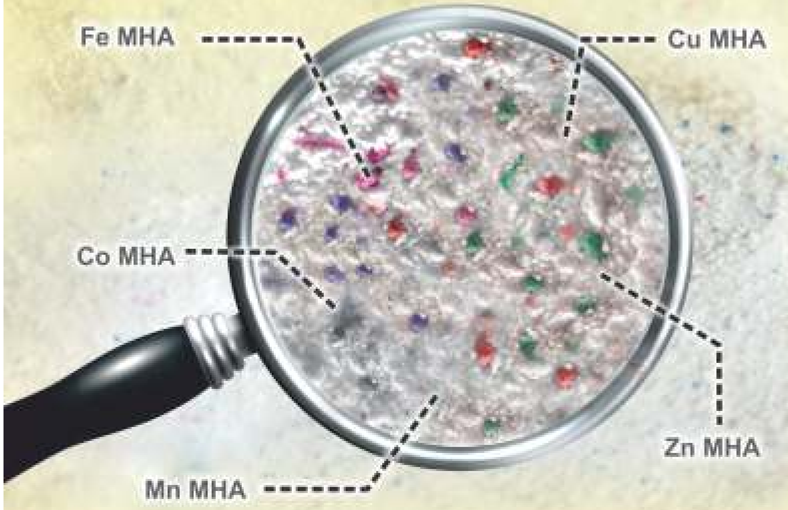

फ़ायदे

- दूध का उत्पादन और वसा का प्रतिशत बढ़ाये
- प्रजनन क्षमता बढ़ाये
- संपूर्ण स्वास्थ्य में सुधार लाये
- खुर और खाल की स्थिति सुधारे

20 YEARS OF TRUST

1.2 किग्रा, 6 किग्रा और 24 किग्रा में उपलब्ध

उपयोग

- *40-80 ग्राम/दिन/जानवर

*पोषण विशेषज्ञ द्वारा सुझाया गया

Provimi Animal Nutrition India Pvt. Ltd. IS-40, KHB Industrial Area, Yelahanka New Town, Bengaluru-560064.
9606077510 www.provimi.in customercare@cargill.com

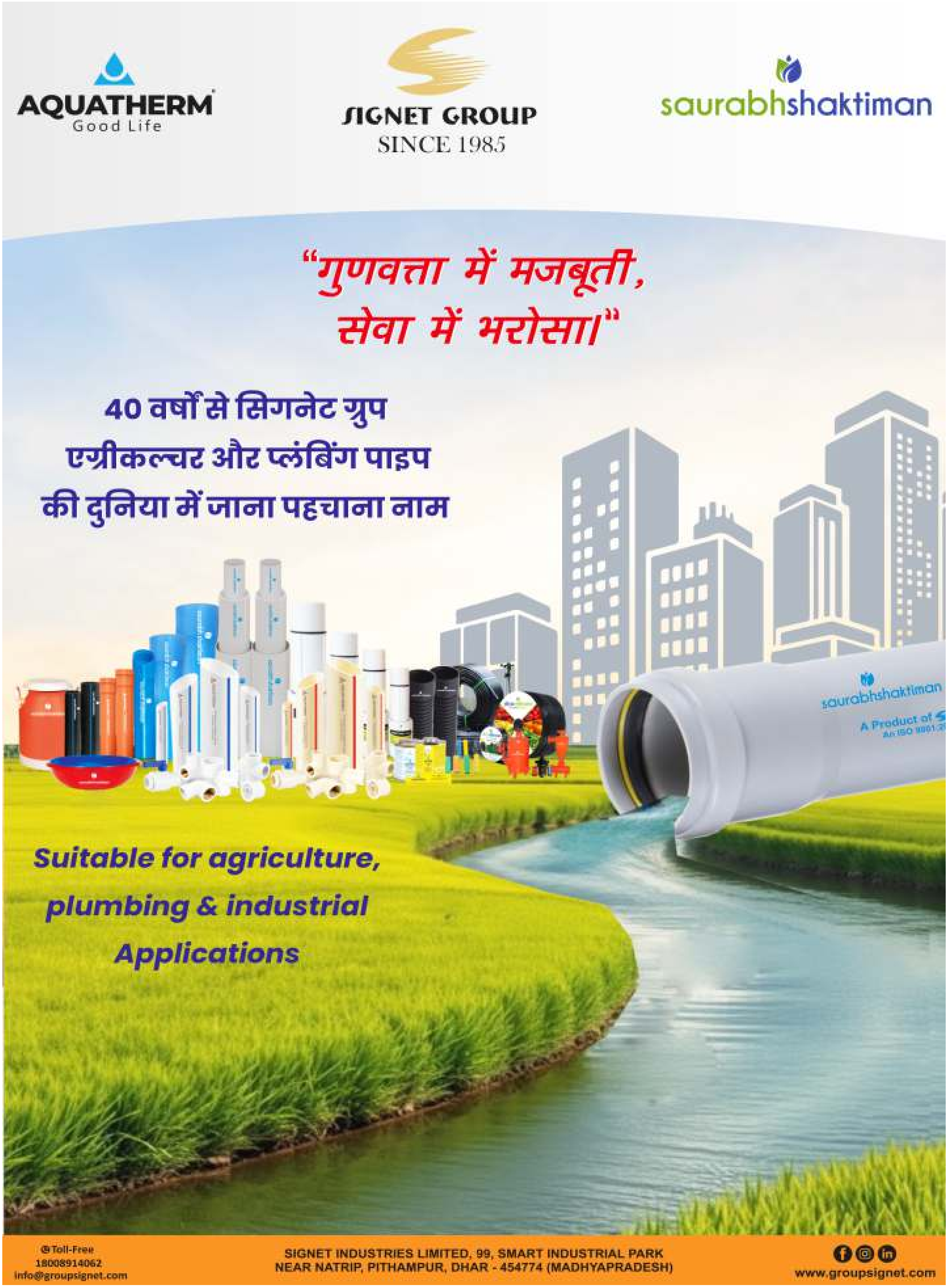
AQUATHERM
Good Life
SIGNET GROUP
SINCE 1985
saurabhshaktiman
"गुणवत्ता में मजबूती,
सेवा में भरोसा।"
40 वर्षों से सिगनेट ग्रुप
एग्रीकल्चर और प्लंबिंग पाइप
की दुनिया में जाना पहचाना नाम
saurabhshaktiman
Suitable for agriculture,
plumbing & industrial
Applications
Toll-Free
18008914062
info@groupsignet.com
SIGNET INDUSTRIES LIMITED, 99, SMART INDUSTRIAL PARK
NEAR NATRIP, PITHAMPUR, DHAR - 454774 (MADHYAPRADESH)
www.groupsignet.com

Modesto®
नाम है विश्वास का...
मोडेस्टो परिवार की ओर से आप सभी को
दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएं
गेहूँ की फसल से मंडूसी का करें खात्मा
अपनाएं मोडेस्टो का मोड़ोरा और पेंडीमोड़
फसल आपकी सुरक्षा हमारी
PENDIMETHALIN 30% EC
PENDI MOD
HERBICIDE
PYROXASULFONE 85% WG
MODORA
+91 89300-04553
info@modestocrop.com
www.modestocrop.com

विषयावली

एग्रोक्सी
फसल क्रांति
मासिक कृषि पत्रिका

वर्ष 12 | अक्टूबर 2025 | अंक 10

संपादकीय....................15

एग्री न्यूज....................16

कम्पनी न्यूज....................28

BASAI एग्री सॉल्यूशन इंडस्ट्री की एक सामूहिक आवाज है– विपिन सैनी....................46

वर्डेशियन लाइफ साइंस किसानों को दे रहा है टिकाऊ समाधान– आर.के. गोयल....................48

डिजिटल कृषि और टिकाऊ खेती की ओर अग्रसर हो किसान– सावेश कुमार....................52

नींबू की खुशबू से महका पोथरे....................53

सरसों की वैज्ञानिक खेती की तकनीक....................54
डॉ. डी.के राना

मिल्किंग मशीनः व्यवसायिक डेयरी का महत्वपूर्ण स्तंभ....................56
राकेश ठाकुर –रोहित कुमार

वर्तमान परिपेक्ष्य में हरित पुस्तकालय की आवश्यकता....................64
विजय पाराशर, मनीष कुमार, लक्ष्मी नारायण बैरवा, हनुमान प्रसाद परेवा, अशोक चौधरी एवं सौरभ सिंगला

अक्टूबर महीने के कृषि कार्य....................70
राज सिंह – मंजेश कुमार गौतम

रसोई....................74

सेहत....................76

कुल पृष्ठ संख्या 100

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के निजी हैं प्रकाशक / सम्पादक इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

प्रकाशक एवं मुद्रक राजबीर सिंह **द्वारा स्वामी** एग्रोक्सी क्रॉप्स सोल्यूशंस प्रा. लिमिटेड **के लिए** रावत प्रिंटर्स, सी –177, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेस –1, नई दिल्ली –110028 **से मुद्रित** तथा एक्स–96 / 1, गली न. 12, ब्रह्मपुरी, शाहदरा, दिल्ली–110053 **से प्रकाशित, सम्पादक** राजबीर सिंह।

सम्पर्क

ए–9, वेस्ट ज्योति नगर, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा, दिल्ली – 110094
011–45062737 | in.linkedin.com/in/fasal-kranti-972698129
info@fasalkranti.in | www.fasalkranti.in
facebook.com/fasalkranti | instagram.com/fasalkranti/
twitter.com/fasalkranti | +91 9625941688, 9811250220

सलाहकार मण्डल

डॉ. एम.एल. जाट, सचिव (डीएआरई) एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
डॉ. बलराज सिंह, कुलपति, श्री करण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान
डॉ. ए.एस. पंवार, पूर्व निदेशक, आई.आई.एफ.एस.आर., मेरठ
डॉ. आनंद शर्मा, उप–महानिदेशक, भारतीय मौसम विभाग
डॉ. सौमित्र दास, निदेशक–इंडिया इण्टरनेशनल जिंक एसोसिएशन
डॉ. एस. एन. भेंड़े, कन्ट्री एग्रोनोमिस्ट, मोजैक इंडिया प्रा.लि., गुड़गांव

सम्पादक मण्डल

डॉ. के. एन. तिवारी, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, लखनऊ
डॉ. जे.पी.एस. डबास, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा
डॉ. जे. पी. सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, मृदा विज्ञान, चौ.च.सिं.ह.कृ.वि.वि., हिसार
डॉ. एस. एस. लठवाल, प्रधान वैज्ञानिक, एन.डी.आर.आई., करनाल
डा. धीरज कुमार तिवारी, वैज्ञानिक शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान केंद्र, उन्नाव
डॉ. गजानन्द जाट, सहा. आचार्य (मृदा विज्ञान), म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर
डॉ. आर. एच. मीणा, सहा. आचार्य (मृदा विज्ञान), म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर
श्री राम निवास चौधरी, सहा. अनु. वैज्ञानिक, आनंद कृषि वि.वि., आनंद, गुजरात

संस्थापक	– राजबीर सिंह
निदेशक	– राजबीर सिंह
सम्पादक	– राजबीर सिंह
कानूनी सलाहकार	– संतोष प्रताप
वरिष्ठ पत्रकार	– विपिन मिश्र
	– इमरान इदरीसी
पत्रकार	– फिजा काजमी
सोशल मीडिया मुखी	– प्रदीप राणा
विडियो एडिटर	– अयूष कुमार
निदेशक (मार्केटिंग)	– रितिक कुमार
उपाध्यक्ष (मार्केटिंग)	– फरहा खान
महाप्रबंधक (मार्केटिंग)	– आरिफा खान
प्रबन्धक (विपणन)	– तन्नू सिंह
सीनियर मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव	– निशा गुप्ता
मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव	– अंजली सिंह
	अंशिका वर्मा
	हिमांशी सैन
एकाउंट्स	– एम सिद्दीकी
प्रसार सहायक	– सनी चौधरी
	मोहित सिंह
सोशल मीडिया प्रबंधक	– निशा शर्मा
	मनप्रीत कौर
डिजाइनिंग	– धर्मेंद्र कुमार
कार्यालय सहायक	– अंकित चौधरी
	ममता

बदलते समय में कृषि की दिशा और किसानों की भूमिका

सम्पादक की कलम से,

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और गाँव की धड़कन खेतों में गूंजती है। कृषि केवल अन्न उत्पादन का साधन नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, हमारी परंपरा और हमारे सामाजिक जीवन का आधार है। आज जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, तकनीकी बदलाव और आर्थिक असमानता जैसी चुनौतियों से जूझ रही है, तब भारत की कृषि भी इन बदलावों से अछूती नहीं है। किसान, जो कभी सिर्फ खेती के पारंपरिक तरीकों से जुड़ा था, अब नए दौर की मांगों के अनुसार खुद को ढाल रहा है। यह समय है जब कृषि जगत को केवल उत्पादन की दृष्टि से नहीं, बल्कि स्थिरता, नवाचार और बाजार से जुड़ाव की दृष्टि से देखना होगा।

पिछले कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं। कहीं बेमौसम बारिश तो कहीं सूखा–ये परिस्थितियाँ फसल उत्पादन और किसानों की आय पर सीधा असर डालती हैं। धान, गेहूँ और गन्ने जैसी परंपरागत फसलों पर अत्यधिक निर्भरता किसानों को जोखिम में डालती है। ऐसे में फसल विविधीकरण, सूक्ष्म सिंचाई तकनीक और जल–संरक्षण उपायों की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। सरकारें भी माइक्रो–इरिगेशन फंड, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना जैसी योजनाओं के माध्यम से किसानों को प्रोत्साहित कर रही हैं। परंतु असली बदलाव तभी आएगा जब किसान स्वयं जल के महत्व को समझेंगे और प्रत्येक बूंद का सदुपयोग करेंगे।

आज के दौर में तकनीकी नवाचार कृषि क्षेत्र के लिए वरदान साबित हो रहे हैं। ड्रोन के माध्यम से खेतों की निगरानी, मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर उर्वरकों का सही उपयोग, मोबाइल एप्स से मौसम की जानकारी और बाजार भाव की तत्क्षण उपलब्धताकृये सब किसान को सशक्त बना रहे हैं। खासकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और डिजिटल प्लेटफॉर्म खेती को अधिक वैज्ञानिक और लाभकारी बना सकते हैं।

समस्याओं का एक बड़ा पहलू किसानों की आय और बाजार से जुड़ा है। भारत में किसान अक्सर बिचौलियों पर निर्भर रहते हैं, जिसके चलते उन्हें फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। ई–नाम जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म और किसान उत्पादक संगठन (FPO) इस समस्या का समाधान हो सकते हैं। यदि किसान संगठित होकर अपनी उपज सीधे बाजार तक पहुँचाएँ, तो न केवल उन्हें बेहतर दाम मिलेगा बल्कि उनकी सौदेबाजी की ताकत भी बढ़ेगी।

कृषि को सतत बनाने के लिए पर्यावरणीय संतुलन का ध्यान रखना भी उतना ही आवश्यक है। रासायनिक खाद और कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग ने मिट्टी की उर्वरता और भूजल की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। इस परिस्थिति में जैविक खेती, प्राकृतिक कृषि और कम–लागत वाली तकनीकें किसानों के लिए बेहतर विकल्प हो सकती हैं। भारत के कई राज्यों में पहले से ही शून्य बजट प्राकृतिक खेती जैसे प्रयोग सफल हो रहे हैं। ये न केवल लागत घटाते हैं, बल्कि किसानों को बाहरी बाजार पर निर्भरता से भी मुक्त करते हैं।

आज की परिस्थितियों में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि खेती को अगली पीढ़ी के लिए आकर्षक कैसे बनाया जाए। गाँवों में युवा तेजी से खेती छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। यदि खेती में तकनीक, उद्यमिता और मुनाफे की संभावना को बढ़ाया जाए, तो यह पलायन रुक सकता है। कृषि आधारित स्टार्टअप्स, एग्री–टूरिज्म और मूल्य संवर्धन उद्योग ग्रामीण युवाओं के लिए नए अवसर प्रस्तुत कर सकते हैं।

कुल मिलाकर, भारत की कृषि एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहाँ चुनौतियाँ भी अपार हैं और संभावनाएँ भी अनगिनत। यदि जलवायु के अनुरूप खेती की तकनीक अपनाई जाए, बाजार से सीधा जुड़ाव बढ़े, पर्यावरण को सुरक्षित रखा जाए और युवा शक्ति को इस क्षेत्र से जोड़ा जाए, तो निश्चित ही भारतीय कृषि एक नई क्रांति की ओर अग्रसर होगी। यह केवल किसानों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि नीति–निर्माताओं, शोध संस्थानों, समाज और उपभोक्ताओं सभी की साझा जिम्मेदारी है।

आइए, हम सब मिलकर एक ऐसे भारत का निर्माण करें जहाँ किसान गर्व से कह सके– हम न केवल देश को अन्न दे रहे हैं, बल्कि भविष्य को सुरक्षित बना रहे हैं।

राजबीर सिंह
संपादक

एग्री न्यूज

अगले रबी सीजन से और अधिक राज्य फसल बीमा योजना में शामिल होंगे

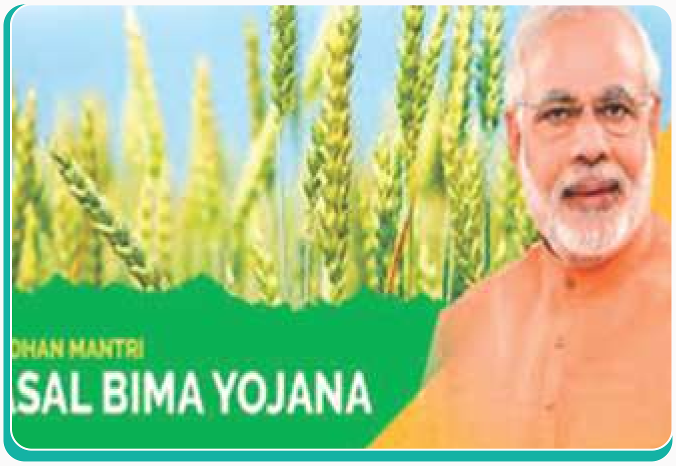

अगले रबी सीजन से बिहार, तेलंगाना, नागालैंड, मिजोरम और लद्दाख सहित कई राज्य प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में शामिल हो सकते हैं। खरीफ 2016 में इसकी शुरुआत के बाद से, 27 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने कई सीजन में इस योजना को लागू किया है। हालाँकि, बिहार, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, झारखंड, पश्चिम बंगाल और गुजरात ने वित्तीय बाधाओं सहित कई कारणों से इस योजना से बाहर निकलने का विकल्प चुना। हालाँकि, आंध्र प्रदेश और झारखंड फिर से इसमें शामिल हो गए हैं।

संसद में कृषि मंत्रालय द्वारा दिए गए एक बयान के अनुसार, कृषि विभाग नियमित रूप से उच्चतम स्तर पर, व्यक्तिगत बैठकों के साथ–साथ राष्ट्रीय समीक्षा सम्मेलनों में, योजना का कार्यान्वयन न करने वाले राज्यों को इस योजना में भाग लेने के लिए प्रेरित कर रहा है।

वर्तमान में फसल बीमा 23 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में लागू किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का उद्देश्य फसलों की बुवाई से पहले से लेकर कटाई के बाद तक व्यापक जोखिम कवरेज प्रदान करना है। किसान रबी फसलों के लिए बीमित राशि का केवल 1.5% और खरीफ फसलों के लिए 2%, जबकि नकदी फसलों के लिए 5% का एक निश्चित प्रीमियम देते हैं।

शेष प्रीमियम केंद्र और राज्यों के बीच समान रूप से साझा किया जाता है, पूर्वोत्तर राज्यों को छोड़कर जहाँ प्रीमियम केंद्र और राज्यों के बीच 9:1 के अनुपात में विभाजित होता है। प्रीमियम भुगतान के संदर्भ में, योजना के शुभारंभ के बाद से केंद्र, राज्य और किसानों की हिस्सेदारी क्रमशः 40%, 48% और 12% रही है। इस बीच, नामांकित किसानों की संख्या 2022–23 में 3.17 करोड़ से बढ़कर 2024–25 में 4.19 करोड़ हो गई है, जो 32% की वृद्धि है। नोट के अनुसार, योजना के तहत 2024–25 में नामांकित किसानों की संख्या योजना की शुरुआत के बाद से अपने उच्चतम स्तर पर है।

कृषि मंत्रालय के अनुसार, 2016 में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की शुरुआत के बाद से अब तक किसानों को मुआवजे के रूप में 1.82 लाख करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया जा चुका है, जो इस योजना के तहत उनके द्वारा भुगतान किए गए कुल प्रीमियम 35,864 करोड़ रुपये का पाँच गुना है।

जीएसटी दरों में कटौती से 10 करोड़ डेयरी किसानों को लाभ होगा– सहकारिता मंत्रालय

सहकारिता मंत्रालय ने कहा कि डेयरी उत्पादों, कृषि आदानों और खाद्य प्रसंस्करण वस्तुओं पर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की दरों में कटौती से 10 करोड़ से ज्यादा डेयरी किसानों को सीधा लाभ होगा और सहकारी क्षेत्र मजबूत होगा।

मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि यह पुनर्गठन उर्वरक निर्माण में उल्टे शुल्क ढांचे को संबोधित करता है और इससे किसानों के लिए मूल्य वृद्धि पर अंकुश लगने के साथ–साथ बुवाई के मौसम में आदानों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित होने की उम्मीद है।

डेयरी किसानों के लिए, दूध और पनीर पर छूट के साथ–साथ प्रसंस्करण उपकरणों पर कम दरों से व्यक्तियों और सहकारी समितियों, दोनों के लिए मार्जिन में सुधार होने की संभावना है। अमूल सहित प्रमुख डेयरी ब्रांडों ने इस कदम का स्वागत किया है। ट्रैक्टरों और कलपुर्जों की कम कीमतों से मिश्रित खेती और पशुपालन में लगे छोटे किसानों को मदद मिलने की उम्मीद है, क्योंकि इन मशीनों का व्यापक रूप से चारा उगाने और उपज के परिवहन के लिए उपयोग किया जाता है।

Zydex®
Innovating for Sustainability

ज़ायटॉनिक के संग
खुशहाली रहे हर दम

अंदाज़ नया,
विश्वास वही पुराना अब है...ज़ायटॉनिक का ज़माना!

- हवादार मिट्टी – बड़ा और घना जड़तंत्र
- पानी की बचत – कम पानी, सिंचाई में बचत
- जैविक पोषण – पोषण की लगातार उपलब्धता
- प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि – रासायनिक दवाओं में बचत
- गुणवत्ता युक्त उत्पादन – पोषणयुक्त फसलों का बेहतर बाज़ार मूल्य

ज़ायटॉनिक की ओर से सभी **किसान भाइयों** और
विक्रेता बंधुओं सहित परिवार को
दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं!

For Trade And Product Enquiries Contact At
info@zydexgroup.com
Toll free : 1800-12300-7666   Follow us :

एनसीईएल और एपीडा ने सहकारी कृषि निर्यात को बढ़ावा देने के लिए समझौता किया

राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (एनसीईएल) और कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) ने भारत के सहकारिता–आधारित कृषि निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक रणनीतिक साझेदारी स्थापित करने हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। सहकारिता मंत्रालय के सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी की उपस्थिति में इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए और यह सहकारिता मंत्रालय तथा वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की क्षमताओं के समन्वय के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। एपीडा के अध्यक्ष अभिषेक देव और एनसीईएल के प्रबंध निदेशक अनुपोम कौशिक ने अपने–अपने संगठनों की ओर से इस समझौते पर हस्ताक्षर किए।

इस अवसर पर बोलते हुए, भूटानी ने कहा कि एनसीईएल के नेटवर्क को एपीडा की निर्यात सुविधा के साथ जोड़ने से किसानों के लिए मूल्य प्राप्ति में वृद्धि होगी, ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा मिलेगा और नई राष्ट्रीय सहयोग नीति के उद्देश्यों के अनुरूप अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भारत की स्थिति मजबूत होगी, जैसा कि एक आधिकारिक बयान में बताया गया है। यह साझेदारी क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण, निर्यात के लिए गुणवत्ता अनुपालन, बुनियादी ढाँचे का समर्थन और पुनरुद्धार, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों में भागीदारी, अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडिंग और बाजार स्थिति निर्धारण और डेटा विश्लेषण, और वस्तु–विशिष्ट निर्यात रणनीति निर्माण पर केंद्रित होगी। इस समझौता ज्ञापन के माध्यम से, सहकारी समितियाँ संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के माध्यम से वैश्विक गुणवत्ता मानकों, खाद्य सुरक्षा और निर्यात दस्तावेजीकरण के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगी।

एपीडा के निर्यात सुविधा प्रयासों को एनसीईएल के आउटरीच नेटवर्क के साथ एकीकृत किया जाएगा ताकि फलों, सब्जियों, मसालों, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों, अनाज और पशु उत्पादों के अनुपालन को सुव्यवस्थित किया जा सके। सहकारिता मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव, पंकज कुमार बंसल ने कहा कि यह समझौता ज्ञापन एनसीईएल को एपीडा की तकनीकी विशेषज्ञता और नीतिगत समर्थन से सशक्त बनाता है, जिससे इसके सदस्य निर्यात उत्कृष्टता प्राप्त कर सकेंगे, नए बाजारों तक पहुँच सकेंगे और अपने उत्पादों के लिए प्रीमियम मूल्य प्राप्त कर सकेंगे।

यह साझेदारी सहकारी निर्यात के लिए राष्ट्रीय छत्र संगठन के रूप में एनसीईएल की भूमिका और भारत के सहकारी क्षेत्र में निर्यात तैयारी, ब्रांडिंग, बुनियादी ढाँचे के विस्तार और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए बाजार विकास और निर्यात संवर्धन को सुविधाजनक बनाने के एपीडा के अधिदेश का लाभ उठाएगी।

नीति आयोग ने 2047 तक दाल उत्पादन को दोगुना करने के लिए रणनीतियाँ सुझाई

नीति आयोग ने भारत को 2030 तक दालों के मामले में आत्मनिर्भर बनाने और 2047 तक दालों का उत्पादन दोगुना करने के लिए सरकार द्वारा अपनाई जाने वाली रणनीतियों और उपायों की सिफारिश की है। रिपोर्ट में कहा गया है कि आने वाले वर्षों में भारत के दाल उत्पादन में लगातार वृद्धि होने की संभावना है और 2030 तक उत्पादन बढ़कर 34.45 मिलियन टन और 2047 तक 51.57 मिलियन टन होने का अनुमान है, जो 2022 में 26.06 मिलियन टन था।

रिपोर्ट में कहा गया है कि ये अनुमान समग्र और फसल–वार, दोनों पूर्वानुमानों पर आधारित हैं। अलग–अलग फसल–स्तरीय अनुमानों के अनुसार 2030 तक उत्पादन 32.1 मिलियन टन और 2047 तक 50.7 मिलियन टन होगा, जो समग्र अनुमानों के साथ निकटता से मेल खाता है। रिपोर्ट में दाल क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए कई सुझाव दिए गए हैं। इसमें लक्षित फसल–वार क्लस्टरिंग के माध्यम से क्षेत्र प्रतिधारण और विविधीकरण, विभिन्न कृषि–पारिस्थितिक उप–क्षेत्रों के लिए अनुकूलित तकनीकों को अपनाना, 111 उच्च क्षमता वाले जिलों पर केंद्रित उच्च गुणवत्ता वाले बीज वितरण और उपचार किटों पर जोर, साथ ही एक ब्लॉक एक बीज गाँव क्लस्टर आधारित खेती शामिल है।

रिपोर्ट में सक्रिय जलवायु परिवर्तन अपनाने के उपायों और व्यापक निगरानी एवं निर्णय समर्थन प्रणाली के माध्यम से डेटा–आधारित परिवर्तन को आगे बढ़ाने पर भी जोर दिया गया है जो आत्मनिर्भरता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

NUZIVEEDU
SEEDS
नये बीज, नई शुरुआत
इस दिवाली खेतों में खुशहाली,
नुजिवीडू के साथ !
शुभ
दीपावली
Armita
NPH-X4
NPH-X8
Kranthi
Capsule
Talent
Aishwarya
Badshah
Winner Gold
Zordar
Basanti
Kanak
Kavita
Veer
Bheema
Sunday
Most Preferred Seed Brand. Always

बाढ़ से फसलों को नुकसान, पंजाब फसल बीमा योजना में शामिल हो सकता है

कई जिलों में बाढ़ से प्रभावित, जिससे खड़ी फसलें प्रभावित हुई हैं, पंजाब अत्यधिक सब्सिडी वाली प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में शामिल हो सकता है। पंजाब के कृषि एवं किसान कल्याण निदेशक जसवंत सिंह ने बताया कि हम जल्द ही केंद्र की फसल बीमा योजना में शामिल होने के तौर–तरीकों पर चर्चा करेंगे। सिंह ने कहा कि वर्तमान में राज्य सरकार का ध्यान किसानों को राहत प्रदान करने पर है, जबकि प्रारंभिक अनुमानों के अनुसार, उत्तरी क्षेत्र में अत्यधिक वर्षा के कारण 3.2 मिलियन हेक्टेयर फसल क्षेत्र में से 0.4 मिलियन हेक्टेयर (मिलियन हेक्टेयर) बाढ़ से प्रभावित हुआ है। पंजाब सरकार ने सभी 23 जिलों को बाढ़ प्रभावित घोषित कर दिया है। इससे पहले, राज्य ने यह भी कहा था कि राज्य के खजाने पर भारी वित्तीय बोझ पड़ता है, जबकि राज्य में सिंचाई का एक मजबूत बुनियादी ढाँचा है, इसलिए जोखिम का स्तर देश के वर्षा आधारित क्षेत्रों की तुलना में बहुत कम है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का उद्देश्य फसलों की बुवाई से पहले से लेकर कटाई के बाद तक व्यापक जोखिम कवरेज प्रदान करना है। किसान रबी फसलों के लिए बीमित राशि का केवल 1.5% और खरीफ फसलों के लिए 2% का एक निश्चित प्रीमियम देते हैं, जबकि नकदी फसलों के लिए यह 5% है। शेष प्रीमियम केंद्र और राज्यों के बीच बराबर–बराबर बाँटा जाता है, पूर्वोत्तर राज्यों को छोड़कर, जहाँ प्रीमियम केंद्र और राज्यों के बीच 9:1 के अनुपात में बँटा होता है।

खरीफ, 2016 में इसकी शुरुआत के बाद से, 27 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने कई मौसमों में इस योजना को लागू किया है। हालाँकि, बिहार, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, झारखंड, पश्चिम बंगाल और गुजरात ने वित्तीय बाधाओं सहित कई कारणों से इस योजना से बाहर निकलने का विकल्प चुना। हालाँकि, आंध्र प्रदेश और झारखंड फिर से इसमें शामिल हो गए हैं। नवंबर 2022 में, पंजाब ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में शामिल होने की घोषणा की थी, हालाँकि बाद में उसने घोषणा की कि राज्य की अपनी फसल बीमा योजना होगी। मार्च 2023 में, मुख्यमंत्री भगवंत मान ने घोषणा की थी कि राज्य जल्द ही एक फसल बीमा योजना लेकर आएगा।

भारत ने 12 प्रमुख जैव–कीटनाशकों पर जीएसटी घटाकर 5 प्रतिशत किया

टिकाऊ और पर्यावरण–अनुकूल खेती की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए, भारत सरकार ने जैव–कीटनाशकों पर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में भारी कटौती की घोषणा की है। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने कई जैविक फसल सुरक्षा उत्पादों पर जीएसटी दर को 12% से घटाकर केवल 5% कर दिया है। इस कदम का उद्देश्य रासायनिक कीटनाशकों के पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित विकल्पों को व्यापक रूप से अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है।

संशोधित सूची के अनुसार, इस निर्णय के अंतर्गत आने वाले 12 जैव–कीटनाशकों में बैसिलस थुरिंजिएंसिस वर. इजरायलेंसिस, बैसिलस थुरिंजिएंसिस वर. कुर्स्ताकी, बैसिलस थुरिंजिएंसिस वर. गैलेरिया, बैसिलस स्फेरिकस, ट्राइकोडर्मा विरिडे, ट्राइकोडर्मा हार्जियानम और स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस जैसे सूक्ष्मजीवी सूत्र शामिल हैं। इसमें ब्यूवेरिया बेसियाना जैसे कीट–रोगजनक कवक, हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा के एनपीवी और स्पोडोप्टेरा लिटुरा के एनपीवी जैसे विषाणुजनित कीटनाशक, साथ ही नीम–आधारित कीटनाशक और सिंबोपोगोन अर्क सहित पादप–व्युत्पन्न उत्पाद भी शामिल हैं।

इन जैव–कीटनाशकों को एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) में उनकी भूमिका के लिए व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है और सिंथेटिक रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। ये मृदा स्वास्थ्य, जैव विविधता और कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता की रक्षा करते हुए कीट आबादी को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में मदद करते हैं। सरकार द्वारा जीएसटी कम करने के निर्णय से इन जैविक समाधानों को किसानों, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों, जो बढ़ती लागत से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, के लिए अधिक किफायती और सुलभ बनाने की उम्मीद है।

उद्योग के हितधारकों ने इस कदम का स्वागत किया है और कहा है कि कम कर दरें न केवल कीमतों को कम करेंगी, बल्कि जैविक क्षेत्र में नवाचार और निवेश को भी प्रोत्साहित करेंगी। वैश्विक कृषि उद्योग के हरित समाधानों की ओर बढ़ने के साथ, जीएसटी पर भारत के नीतिगत सुधार को स्थायी कृषि–इनपुट के लिए एक प्रमुख बाजार के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने की दिशा में एक कदम के रूप में देखा जा रहा है।

Serving Globe Through Agriculture
Best Agrolife Limited
उन्नत भविष्य के लिए सर्वोत्तम आविष्कार
ORISULAM
Herbicide
DANGER
Best Agrolife Limited
DEFENDER
Insecticide + Fungicide
DANGER
TRICOLOR
SHOT DOWN
RONFEN
Insecticide
FETAGEN
Insecticide
DANGER
जुड़िये हमसे हमारे सोशल मीडिया हैंडल्स पर
www.bestagrolife.com

भारत में जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से मक्का पैदावार में 10–15 प्रतिशत की वृद्धि होने की संभावना

जलवायु परिवर्तन और उपज में अंतर की चुनौतियों के बीच, खाद्य, चारा और ईंधन उद्योगों की ओर से भारत के मक्का क्षेत्र में बढ़ती माँग को देखते हुए, विशेषज्ञों ने पंजाब और शेष भारत में पैदावार बढ़ाने, लचीलापन मजबूत करने और किसानों की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए जैव प्रौद्योगिकी उपकरणों को तत्काल अपनाने का आह्वान किया। यह आह्वान मक्का में जैव प्रौद्योगिकी हस्तक्षेपरू चुनौतियाँ और अवसर विषय पर ICAR–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान (IIMR), लुधियाना में IIMR और बायोटेक कंसोर्टियम इंडिया लिमिटेड (BCIL) द्वारा भारतीय बीज उद्योग महासंघ (FSII) के सहयोग से आयोजित एक कार्यशाला में किया गया। इस विचार–विमर्श में वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं, छात्रों, शोधकर्ताओं और किसान प्रतिनिधियों ने एक साथ आकर इस बात पर चर्चा की कि आनुवंशिक संशोधन (GM) और जीनोम संपादन (GEd) भारत में मक्का के भविष्य को कैसे आकार दे सकते हैं।

भारत दुनिया का पाँचवाँ सबसे बड़ा मक्का उत्पादक देश है, जहाँ 12 मिलियन हेक्टेयर से अधिक भूमि पर मक्का की खेती होती है और 2024–25 में इसका वार्षिक उत्पादन लगभग 42.3 मिलियन टन होगा। फिर भी, औसत उपज लगभग 3.5 टन प्रति हेक्टेयर बनी हुई है, जो वैश्विक औसत 5.8 टन से काफी कम है। 2030 तक मांग दोगुनी होने का अनुमान है, खासकर पोल्ट्री, चारा, स्टार्च और इथेनॉल उद्योगों से, प्रतिभागियों ने इस बात पर जोर दिया कि तकनीक–संचालित नवाचार महत्वपूर्ण है।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पीएयू), लुधियाना के अनुसंधान निदेशक डॉ. अजमेर सिंह धत्त ने कहा कि मक्का भारत का अगला विकास इंजन बनने की क्षमता रखता है, न केवल खाद्यान्न के लिए, बल्कि पशुधन और जैव ईंधन अर्थव्यवस्था के चालक के रूप में भी। वैश्विक उत्पादकता मानकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी को अपनाना बेहद जरूरी है। उन्होंने नीति निर्माताओं से जैव प्रौद्योगिकी मक्का के लिए एक सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का आह्वान किया।

भारत सरकार ने इस वर्ष 3.8 करोड़ किसानों को मानसून पूर्वानुमान भेजे

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इस वर्ष 13 राज्यों के लगभग 3.8 करोड़ किसानों को एसएमएस के माध्यम से AI–आधारित मानसून पूर्वानुमान भेजे, मंत्रालय ने जानकारी दी। AI–आधारित मॉडलों ने किसानों की जरूरतों के अनुसार विशेष रूप से पूर्वानुमान तैयार करना संभव बनाया, जिससे किसानों को खरीफ की कृषि संबंधी निर्णय लेने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण मिला।

यह अब तक का अपनी तरह का पहला AI मौसम पूर्वानुमानों का लक्षित प्रसार है, जिसने किसानों को सीधे लाभ पहुँचाने के लिए AI मौसम पूर्वानुमान लागू करने में विश्व–अग्रणी के रूप में चिह्नित किया है।

भारत भर में करोड़ों किसान खरीफ की खेती के लिए वर्षा पर निर्भर हैं–जो उनकी आय और आजीविका का मुख्य स्रोत है। यदि किसानों को मानसून के बारे में अग्रिम पूर्वानुमान प्राप्त होते हैं, तो इससे उन्हें क्या, कितना और कब बोना है, इस बारे में बेहतर निर्णय लेने में मदद मिल सकती है।

यह अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) द्वारा संचालित मौसम पूर्वानुमान में क्रांति के कारण संभव हुआ है। कृषि भवन में आयोजित एक कार्यक्रम समीक्षा बैठक में, अतिरिक्त सचिव प्रमोद कुमार मेहरदा और संयुक्त सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने नोबेल पुरस्कार विजेता और शिकागो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर माइकल क्रेमर से मंत्रालय की इस अभूतपूर्व पहल और कार्यक्रम के विस्तार पर चर्चा की।

अतिरिक्त सचिव मेहरदा ने कहा, यह कार्यक्रम निरंतर वर्षा के आगमन की भविष्यवाणी करने के लिए एआई–आधारित मौसम पूर्वानुमान में क्रांति का उपयोग करता है, जिससे किसानों को अधिक आत्मविश्वास के साथ कृषि गतिविधियों की योजना बनाने और जोखिमों का प्रबंधन करने में मदद मिलती है। हम आने वाले वर्षों में इस प्रयास को और बेहतर बनाने की आशा करते हैं।

संयुक्त सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने कहा, चूँकि जलवायु परिवर्तन मौसम परिवर्तनशीलता को बढ़ाता है, इसलिए पूर्वानुमान किसानों को स्थिति के अनुकूल होने में मदद करने के लिए एक उपयोगी उपकरण हैं।

SEEDS OF SUCCESS

SOMANI SEEDZ®

HYB RADISH CROSS X-35

HYB CABBAGE TEZ (IMP)

HYB CARROT ROYAL RED-54

HYB CAULIFLOWER KHUSHI

सभी किसान भाईयों को
दिपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

Farmers First Choice

SOMANI KANAK SEEDZ PVT. LTD.

HEAD OFFICE: C-91/7, 2nd FLOOR, WAZIRPUR INDUSTRIAL AREA, NEW DELHI - 110052, PHONE: (+91) 47506228, 47503925, 47053925, 8587967987, EMAIL: CONTACT@SOMANISEEDZ.COM, WEBSITE: WWW.SOMANISEEDZ.COM

मत्स्य पालन क्षेत्र को और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए जीएसटी दरों में कटौती की जाएगी

सरकार ने कहा कि जीएसटी दरों में कटौती से मत्स्य पालन क्षेत्र घरेलू और निर्यात दोनों बाजारों में अधिक प्रतिस्पर्धी बनेगा। मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि मत्स्य पालन क्षेत्र में कर दरों में महत्वपूर्ण कटौती से परिचालन लागत में कमी आएगी, घरेलू और निर्यात बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ेगी और देश में अपनी आजीविका के लिए मत्स्य पालन और जलीय कृषि पर निर्भर लाखों मत्स्य पालकों और अन्य हितधारकों को सीधा लाभ होगा।

भारत लगभग 195 लाख टन (2024–25) के उत्पादन के साथ विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है। 2023–24 में समुद्री खाद्य निर्यात 60,000 करोड़ रुपये को पार कर गया। यह क्षेत्र आज 3 करोड़ से अधिक लोगों की आजीविका का आधार है।

संशोधित ढांचे के तहत, मछली के तेल, मछली के अर्क और तैयार या संरक्षित मछली और झींगा उत्पादों पर जीएसटी दरें 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दी गई हैं। जलीय कृषि कार्यों और हैचरी के लिए आवश्यक डीजल इंजन, पंप, एरेटर और स्प्रिंकलर पर अब केवल 5 प्रतिशत जीएसटी लगेगा, जो पहले 12 प्रतिशत से 18 प्रतिशत था, जिससे मछली पालकों की परिचालन लागत में उल्लेखनीय कमी आएगी।

तालाब तैयार करने और जल गुणवत्ता प्रबंधन में उपयोग किए जाने वाले अमोनिया और सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे महत्वपूर्ण रसायनों पर भी 5 प्रतिशत कर लगाया जाएगा, जो पहले 12 प्रतिशत से घटकर 18 प्रतिशत हो जाएगा, जिससे चारा, तालाब कंडीशनिंग और कृषि–स्तरीय प्रक्रियाओं की लागत में कमी आएगी। जलकृषि कार्यों और हैचरी के लिए आवश्यक डीजल इंजन, पंप, एरेटर और स्प्रिंकलर पर अब केवल 5 प्रतिशत जीएसटी लगेगा, जो पहले 12 प्रतिशत से घटकर 18 प्रतिशत हो जाएगा, जिससे मछली पालकों की परिचालन लागत में उल्लेखनीय कमी आएगी।

सरकार ने 2025–26 के लिए 46.35 मीट्रिक टन चावल खरीद का लक्ष्य रखा

सरकार ने खरीफ विपणन सत्र 2025–26 (अक्टूबर–सितंबर) के लिए 46.35 मिलियन टन (एमटी) चावल खरीद का लक्ष्य तय किया, जो चालू 2024–25 सत्र में 47.38 मीट्रिक टन अनाज खरीद से थोड़ा कम है। राज्यों के खाद्य सचिवों और खाद्य मंत्रालय के अधिकारियों की बैठक के बाद अगले खरीद सत्र का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

चालू 2024–25 सत्र में, भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) और राज्य एजेंसियों ने किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर धान के बराबर 54.49 मीट्रिक टन – 47.38 मीट्रिक टन (खरीफ) और 7.1 मीट्रिक टन (रबी) – चावल खरीदा है। 2023–24 में, एजेंसियों ने 52.44 मीट्रिक टन चावल – 46.65 मीट्रिक टन (खरीफ) और 5.78 मीट्रिक टन (रबी) खरीदा था।

धान की खरीद मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश सहित अधिशेष अनाज उत्पादक राज्यों से की जाती है। इस वर्ष खरीफ धान की बुवाई पिछले वर्ष की तुलना में अधिक मानसूनी वर्षा के कारण हुई है।

पंजाब, हरियाणा और अन्य उत्तरी राज्यों में धान की खरीद 1 अक्टूबर से शुरू होती है, जबकि पूर्वी और दक्षिणी राज्यों में एमएसपी संचालन दिसंबर में शुरू होता है। फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए, खाद्य मंत्रालय ने राज्यों से 2025–26 में 1.91 मीट्रिक टन बाजरा या मोटे अनाज की खरीद पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया है।

सूत्रों के अनुसार, केंद्रीय पूल चावल का स्टॉक 53 मीट्रिक टन से अधिक है, जो 1 अक्टूबर के लिए 10.25 मीट्रिक टन के बफर मानक से चार गुना अधिक है। अधिकारियों ने कहा कि इस स्टॉक में 14 मीट्रिक टन से अधिक अनाज शामिल है जो अभी मिल मालिकों से प्राप्त होना बाकी है।

चावल के उच्च भंडार का श्रेय हाल के वर्षों में किसानों से एमएसपी के तहत सालाना 52–53 मीट्रिक टन चावल की खरीद और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) के तहत लगभग 36–38 मीट्रिक टन चावल की आपूर्ति को दिया जाता है। मई में, कैबिनेट ने 2025–26 खरीफ सीजन (जुलाई–जून) के लिए धान के एमएसपी में पिछले वर्ष की तुलना में 3% की वृद्धि करके ₹2,369 प्रति क्विंटल करने को मंजूरी दी थी।

शुभ दिवाली
FertiGlobal®
Powered by Folimac® Technology
Powered by Folistim Technology
DINAMICO
COLORE
DOLCE
FORTITUDO
Powered by EnNuVi® Technology
Powered by Foliflo® Technology
Semia
Mantus
Turan
Cautha
EGE
MAIA
फर्टिग्लोबल परिवार के सौजन्य से
आप सभी को दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएँ
Larderello Group
Italian tradition, global horizons. Since 1818
SCL India
sclindia@fertiglobal.com, www.fertiglobal.com

सोयाबीन की फसल पर पीला मोजेक वायरस का हमला, किसानों को मुआवजा देने की कवायद शुरू

भारत के मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में सोयाबीन की फसलों में पीला मोजेक वायरस का भयंकर प्रकोप देखा जा रहा है, जिससे किसानों की उपज में भारी नुकसान की चिंता बढ़ गई है। इस वायरल संक्रमण ने कई गाँवों में फसलों की सेहत और उत्पादकता को स्पष्ट रूप से प्रभावित किया है। स्थिति को देखते हुए, जिला कलेक्टर अदिति गर्ग ने फसल क्षति का तत्काल सर्वेक्षण कराने के आदेश दिए हैं। राजस्व और कृषि विभागों के अधिकारियों और स्थानीय पटवारियों की संयुक्त टीमों को जमीनी हकीकत का आकलन करने और नुकसान की मात्रा का आकलन करने के लिए खेतों में तैनात किया गया है।

कलेक्टर गर्ग ने कहा कि जिले के सभी विकासखंडों में सर्वेक्षण तेजी से पूरा किया जाएगा। इसके बाद, प्रभावित किसानों को समय पर वित्तीय राहत और मुआवजा मिले, यह सुनिश्चित करने के लिए समेकित रिपोर्ट राज्य सरकार को सौंपी जाएगी। जिला प्रशासन ने किसानों को आश्वासन दिया है कि इस संकट में उन्हें अकेला नहीं छोड़ा जाएगा। कलेक्टर गर्ग ने किसान समुदाय से शांत रहने की अपील की और जोर देकर कहा कि प्रशासन और कृषि विभाग दोनों ही पूरी मदद देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। किसानों को सहायता और जानकारी के लिए अपने स्थानीय कृषि कार्यालय या पटवारी से संपर्क करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

इसके साथ ही, कृषि विभाग को प्रभावित गाँवों में संपर्क कार्यक्रमों को तेज करने के निर्देश दिए गए हैं। कृषि वैज्ञानिक और विस्तार अधिकारी किसानों को अनुशंसित नियंत्रण उपायों के बारे में सलाह दे रहे हैं, जिनमें खड़ी फसलों की सुरक्षा के लिए उपयुक्त कीटनाशकों का समय पर प्रयोग और एकीकृत प्रबंधन पद्धतियाँ शामिल हैं। भारत के प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्य मध्य प्रदेश में सोयाबीन सबसे महत्वपूर्ण खरीफ फसलों में से एक है। फसल के मौसम के इस चरण में पीले मोजेक वायरस का प्रसार न केवल किसानों की आय को प्रभावित कर सकता है, बल्कि 2025 के लिए क्षेत्रीय तिलहन उत्पादन लक्ष्यों को भी प्रभावित कर सकता है।

CIMMYT
International Maize and Wheat Improvement Center

अंतर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूँ सुधार केंद्र ने गेहूँ की जीन संपादन पर ध्यान केंद्रित किया

अंतर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूँ सुधार केंद्र (सीआईएमएमवाईटी) गेहूँ की फसल की सहनशीलता बढ़ाने के लिए जीन संपादन तकनीक में निवेश बढ़ा रहा है। महानिदेशक ब्रैम गोवार्ट्स ने आनुवंशिक रूप से संशोधित गेहूँ के सामने मौजूद नियामक और तकनीकी चुनौतियों के बीच इसे भविष्य की तकनीक बताया है।

गोवार्ट्स ने स्वीकार किया कि जीएम या ट्रांसजेनिक गेहूँ की किस्में व्यावसायिक सफलता हासिल करने में विफल रही हैं, और ट्रांसजेनिक तकनीक को पुरानी तकनीक बताया।

गेहूँ की फसलों में सूखा, बाढ़ और रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने की इस तकनीक की क्षमता पर प्रकाश डालते हुए, गोवार्ट्स ने कहा, हम जीन संपादन में तेजी से निवेश कर रहे हैं।

गोवर्ट्स के अनुसार, पारंपरिक आनुवंशिक संशोधन के विपरीत, जीन संपादन, बिना किसी विदेशी जीन को शामिल किए, उसी फसल प्रजाति में सटीक परिवर्तन करके पारंपरिक प्रजनन को गति प्रदान करता है।

उन्होंने कहा, सीआईएमएमवाईटी जीन–संपादित गेहूँ पर काम कर रहा है। हमें लगता है कि यह एक ऐसी तकनीक है जो कारगर हो सकती है। उन्होंने पारंपरिक प्रजनन से लेकर जैव प्रौद्योगिकी तक, सभी विकल्पों को खुला रखने की संगठन की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

गोवार्ट्स ने कहा, सीआईएमएमवाईटी के लिए, यह बहुत जरूरी है कि अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक हित के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र में सभी विभिन्न विकल्प उपलब्ध हों। उन्होंने कहा कि सीआईएमएमवाईटी के पास सार्वजनिक डोमेन में ट्रांसजेनिक तकनीकें तो हैं, लेकिन उनका उपयोग तभी किया जाता है जब देश उनका अनुरोध करते हैं और नियामक ढाँचे सुरक्षित कार्यान्वयन की अनुमति देते हैं।

10 YEARS OF GROWING TOGETHER
"Trusted Crop Solutions - Empowering Farmers"

IFFCO - MC
CROP SCIENCE
(A Joint Venture of IFFCO & Mitsubishi Corporation)

Happy Diwali

दीपों का यह पावन पर्व आपके जीवन में प्रगति, समृद्धि और नई ऊर्जा लेकर आए। आपके विश्वास, सहयोग और साझेदारी से सशक्त, इफको-एमसी कृषि विकास और उज्ज्वल भविष्य के लिए निरंतर प्रयासरत है।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ!

www.iffcomc.in

Connect With Us

Surinder Jakhar Bhavan, Tower B, 3rd Floor, Sector 32, Gurugram, Haryana-122003 | Contact: +919599947001

आईसीएल और बायोप्राइम ने मृदा और फसल स्वास्थ्य समाधानों के विस्तार के लिए गठबंधन किया

फसल पोषण के क्षेत्र में वैश्विक अग्रणी, आईसीएल ने, बायोप्राइम के अग्रणी बायोनेक्सस प्लेटफॉर्म द्वारा संचालित, भारत में उन्नत मृदा और फसल स्वास्थ्य समाधान लॉन्च करने के लिए, एक अग्रणी कृषि–जैविक नवप्रवर्तक, बायोप्राइम के साथ एक रणनीतिक दीर्घकालिक साझेदारी की है। इस साझेदारी के माध्यम से, प्रारंभिक ध्यान पोषक तत्व उपयोग दक्षता (एनयूई) को बढ़ाने वाले उत्पादों पर होगा। फसल पोषण और पौध स्वास्थ्य प्रबंधन में आईसीएल की विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए, समाधानों का पहला सेट फॉस्फोरस (P) और जिंक (n) दक्षता को लक्षित करेगा–जो भारतीय किसानों के लिए दो सबसे सीमित और महंगे पोषक तत्व हैं। भारत दुनिया के लगभग 12% फॉस्फेट का उपभोग करता है, लेकिन आयात पर अत्यधिक निर्भर है, जहाँ 85% तक प्रयुक्त फॉस्फोरस मिट्टी की स्थिति के कारण अवरुद्ध या निक्षालित हो जाता है। इसी प्रकार, 48% भारतीय मिट्टी में जिंक की कमी है, जिसके घटती उर्वरता के साथ, विशेष रूप से दक्षिणी राज्यों में, बढ़कर 63% होने का अनुमान है।

फॉस्फोरस एक गंभीर चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है। भारत एक अनोखी समस्या का सामना कर रहा है जहाँ फास्फोरस का अधिकांश भाग आयरन (Fe) और एल्युमीनियम (Al) के साथ जुड़ जाता है, जबकि अन्य क्षेत्रों में यह कैल्शियम (Ca) के साथ अधिक बंधता है – जो एक बहुत ही सरल यौगिक है। परिणामस्वरूप, अधिकांश वर्तमान समाधान उपयोगी फास्फोरस को मुक्त करने में अप्रभावी हैं, जिससे फास्फोरस उपयोग दक्षता (PUE) में उत्तरोत्तर गिरावट आ रही है। ये समाधान मिलकर किसानों को संसाधन उपयोग को अनुकूलित करने, पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ाने और उर्वरक की बर्बादी को कम करने में मदद करेंगे – साथ ही सटीकता, स्थिरता और कठोर गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करेंगे। यह सहयोग बायोप्राइम की बायोनेक्सस लाइब्रेरी के लिए पहली साझेदारी है, जो एक स्वामित्व वाला प्लेटफॉर्म है जिसमें 18,000 से ज़्यादा अद्वितीय माइक्रोबियल स्ट्रेन मौजूद हैं। प्रत्येक स्ट्रेन में विशिष्ट विशेषताएँ हैं जो मिट्टी और फसल के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए डिजाइन की गई हैं, जो इसे भारतीय कृषि के लिए एक अभूतपूर्व मील का पत्थर बनाती हैं। भारत में आईसीएल की दशकों पुरानी उपस्थिति और मजबूत ब्रांड प्रतिष्ठा के साथ, ये उत्पाद पूरे देश में व्यापक रूप से उपलब्ध होंगे।

कॉर्टेवा एग्रीसाइंस ने अंगूर और आलू के लिए नया कवकनाशी जोरवेक एंटेक्टा लॉन्च किया

कॉर्टेवा एग्रीसाइंस ने जोरवेक एंटेक्टा के लॉन्च की घोषणा की है, जो भारत में अंगूर और आलू दोनों की खेती में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाला एक नया कवकनाशी है। विश्व स्तर पर सफल जोरवेक तकनीक पर आधारित, यह उन्नत समाधान अंगूरों में डाउनी मिल्ड्यू (प्लास्मोपारा विटिकोला) और आलू में लेट ब्लाइट (फाइटोफ्थोरा इन्फेस्टैन्स) जैसी विनाशकारी बीमारियों से उत्पादकों को सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे फसलें स्वस्थ होती हैं, जिससे उपज बढ़ती है और उत्पादन की गुणवत्ता बेहतर होती है। जोरवेक एंटेक्टा उन्नत रसायन विज्ञान और शक्तिशाली प्रदर्शन का एक अनूठा संयोजन प्रदान करता है। इसके सक्रिय तत्व ऊमाइसीट्स पौधों के रोगों के खिलाफ मजबूत और विश्वसनीय नियंत्रण प्रदान करते हैं। यह अभिनव समाधान उत्पादकों को बेजोड़ स्थिरता और नियंत्रण प्रदान करता है, जो चुनौतीपूर्ण जलवायु परिस्थितियों में भी शक्तिशाली और दीर्घकालिक सुरक्षा प्रदान करता है। इसकी उद्योग–अग्रणी वर्षा प्रतिरोधकता का अर्थ है कि यह उपयोग के केवल 20 मिनट बाद ही सुरक्षित और धुलने से सुरक्षित है, जिससे उत्पादकों को अपने निवेश पर विश्वास होता है।

यह उत्पाद दो शक्तिशाली सक्रिय अवयवों का संयोजन करता है जो दो अलग–अलग तरीकों से एक साथ मिलकर काम करते हैं, जिससे यह रोग प्रतिरोधक क्षमता के प्रबंधन और समय के साथ इसकी प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए एक उत्कृष्ट उपकरण बन जाता है। इसके अतिरिक्त, जोरवेक एंटेक्टा का पर्यावरणीय प्रोफाइल अनुकूल है, जो कॉर्टेवा एग्रीसाइंस की स्थायी कृषि के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। अंगूर उत्पादकों के लिए, जोरवेक एंटेक्टा डाउनी मिल्ड्यू के विरुद्ध बेहतर और दीर्घकालिक सुरक्षा प्रदान करता है, जो प्रमुख विकास चरणों में रोग प्रबंधन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आलू उत्पादकों के लिए, जोरवेक एंटेक्टा पछेती झुलसा रोग के प्रबंधन के लिए सबसे मजबूत आधार साबित हुआ है, जो कठिनतम पर्यावरणीय परिस्थितियों में भी उनके रोग नियंत्रण कार्यक्रम की एक स्वच्छ शुरुआत सुनिश्चित करता है। जोरवेक पहले से ही दुनिया भर के अन्य प्रमुख कृषि बाजारों में एक सफल ब्रांड है, जो दुनिया भर के किसानों के लिए अपनी सिद्ध प्रभावशीलता और मूल्य का प्रदर्शन करता है। कोर्टेवा एग्रीसाइंस आने वाले महीनों में जोरवेक एंटेक्टा को विभिन्न क्षेत्रों में लागू करेगा, जिससे यह परिवर्तनकारी तकनीक अधिक किसानों तक पहुँचेगी।

CHARMINAR
birlanu

BUILD YOUR WORLD

अल्ट्राकूल फाइबर सीमेंट रूफ

तापमान 8°C* तक कम करे
सोलर रिफैल्क्टेंस इंडेक्स (SRI) 99**
ज़्यादा मज़बूत और टिकाऊ

1800 425 425 99 | customer.care@birlanu.com | www.birlanu.com

*SRI और अंदर के तापमान में कमी बाहर के तापमान के अनुसार बदल सकती है। **भारत के प्रतिष्ठित भवन विज्ञान एवं तकनीकी शोध प्रयोगशाला में परीक्षित।

कोरोमंडल इंटरनेशनल ने 1000वां ग्रोमोर रिटेल स्टोर खोला

कृषि समाधान प्रदान करने वाली मुरुगप्पा समूह की कंपनी कोरोमंडल इंटरनेशनल ने महाराष्ट्र के अहिल्यानगर के कश्ती गाँव में अपने 1000वें ग्रोमोर रिटेल स्टोर का उद्घाटन किया है।

कोरोमंडल ने वर्ष 2007 में माई ग्रोमोर ब्रांड के तहत ग्रामीण रिटेल केंद्रों में प्रवेश किया और दक्षिणी राज्यों के कृषक समुदाय को कृषि इनपुट और सेवाएँ प्रदान कीं।

कंपनी दक्षिणी राज्यों से आगे अपने नेटवर्क का विस्तार कर रही है और महाराष्ट्र में प्रवेश कर चुकी है, जहाँ इसने 1000वें स्टोर का मील का पत्थर पार कर लिया है और अगले 2 वर्षों में नेटवर्क को दोगुना करने की योजना बनाई है।

इसके साथ ही, कोरोमंडल के रिटेल स्टोरों में आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में 766 माना ग्रोमोर, कर्नाटक में 195 नम्मा ग्रोमोर, तमिलनाडु में 23 नामादु ग्रोमोर और महाराष्ट्र में 16 अप्ला ग्रोमोर शामिल हैं। इन आउटलेट्स को 5,000 से ज़्यादा लोगों की एक टीम का समर्थन प्राप्त है, जो किसानों से रोजाना जुड़कर विभिन्न विस्तार गतिविधियों के जरिए उनकी उपज और कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मदद करते हैं।

कोरोमंडल इंटरनेशनल के कार्यकारी अध्यक्ष अरुण अलगप्पन ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में, माई ग्रोमोर केंद्र कृषक समुदाय के लिए विश्वसनीय भागीदार बनकर उभरे हैं। ये पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देते हैं, साथ ही गुणवत्तापूर्ण कृषि इनपुट, नवीन तकनीकों और व्यक्तिगत सलाहकार सेवाओं तक समय पर पहुँच सुनिश्चित करते हैं जिससे उत्पादकता बढ़ती है और आजीविका में सुधार होता है।

कोरोमंडल पुणे जिले में 20 और ग्रोमोर स्टोर खोलने की योजना बना रहा है, जिनमें से पाँच कश्ती के पास होंगे।

जॉर्डन फॉस्फेट माइंस कंपनी और भारत की कोरोमंडल ने फॉस्फेट आपूर्ति के लिए प्रमुख समझौते पर हस्ताक्षर किए

जॉर्डन फॉस्फेट माइंस कंपनी (जेपीएमसी) और भारत की कोरोमंडल इंटरनेशनल ने एक रणनीतिक आपूर्ति समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत अप्रैल 2026 से कोरोमंडल की नई उत्पादन सुविधाओं को सालाना पाँच लाख टन जॉर्डन फॉस्फेट भेजा जाएगा। यह कदम उच्च गुणवत्ता वाले फॉस्फेट के एक प्रमुख वैश्विक आपूर्तिकर्ता के रूप में जॉर्डन की स्थिति को और मजबूत करता है। यह समझौता अकाबा स्थित फॉस्फेट औद्योगिक परिसर में जेपीएमसी के सीईओ अब्दुल वहाब अल–रवाद और कोरोमंडल के सीईओ शंकर सुब्रमण्यन द्वारा जेपीएमसी के अध्यक्ष मुहम्मद थनैबत और कोरोमंडल के अध्यक्ष अरुण अलगप्पन की उपस्थिति में हस्ताक्षरित किया गया। भारत की सबसे बड़ी कृषि समाधान कंपनियों में से एक और भारतीय बाजार में दूसरी सबसे बड़ी फॉस्फेट उर्वरक उत्पादक कंपनी कोरोमंडल, जेपीएमसी की सहायक कंपनी जॉर्डन इंडिया फर्टिलाइजर कंपनी (जिफको) द्वारा उत्पादित फॉस्फोरिक एसिड की भी एक प्रमुख खरीदार है। भारतीय कंपनी भारत के बाहर भी अपनी मजबूत अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति और साझेदारियाँ बनाए हुए है।

थनैबत ने इस समझौते को एक रणनीतिक छलांग बताया, जो अंतरराष्ट्रीय फॉस्फेट आपूर्ति श्रृंखला में जॉर्डन की महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि करता है। उन्होंने कहा कि यह साझेदारी भारतीय उद्योग जगत के दिग्गजों के साथ वर्षों के विश्वास और सहयोग को दर्शाती है और जेपीएमसी की वैश्विक निवेश आकर्षित करने और जॉर्डन के आर्थिक विकास में योगदान देने की क्षमता को बढ़ाएगी।

उन्होंने आगे कहा कि डाउनस्ट्रीम और मूल्यवर्धित उद्योगों का विस्तार जेपीएमसी की 2030 की रणनीति का केंद्रबिंदु है, जिसका उद्देश्य उत्पाद प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देना, निर्यात बढ़ाना, उच्च मूल्य वाली नौकरियाँ पैदा करना और सतत औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना है।यह समझौता नवाचार और उन्नत विनिर्माण में व्यापक रणनीतिक सहयोग की नींव भी रखता है, जो जेपीएमसी के वैश्विक उपस्थिति को बढ़ाने और बाजार पहुँच का विस्तार करने के दीर्घकालिक लक्ष्य का हिस्सा है।

Synergy of

CSR + ISR = THANK YOU FARMERS CLUB

CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY+INDIVIDUAL SOCIAL RESPONSIBILITY

किसान की दुनिया दुनिया का किसान

अन्नदाता हम आपके साथ है-धन्यवाद

THANK YOU MY FARMER

AN INITIATIVE TO SUPPORT FARMERS GLOBALLY-RESPECT FOR FARMING

IAS FUTURISTIC 500

INDIA AGRI-INPUT INDUSTRY SUMMIT YEAR BOOK 2025

100 - AGRI INPUT MANUFACTURING COMPANIES

100 - AGRI INPUT COMPANY PROMOTERS

100 - EXECUTIVES (CEO/ CFO/ HR/SCM/ REGULATORY)

100 - POLICY MAKERS - ICAR-IARI-CIB-FCO- UNIVERSITIES...

100 - FARMERS & CHANNEL PARTNERS - NGOS

500 AGRI BUSINESS LEADERS : IAS FUTURISTIC 500

Website launching soon: for the well being of Indian Agricultural Services.
(Stay connected @ +91 9390757567) info.farmthan@gmail.com

LET'S WORK FOR THE FUTURE OF AGRICULTURE

FAACT

Federation of All India Agro Clubs & Associations
Together we can make a positive difference

ONE TEAM - ONE DREAM

ONE GLOBAL FARM FAMILY LET'S GROW TOGETHER

FGF

FARMTHAN GLOBAL FOUNDATION

H.No. 5-35-263, Shakthipuram I.E. Prashanthi Nagar, Kukatpally, HYDERABAD - 500 072.

डीसीएम श्रीराम लिमिटेड और आरती इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने क्लोरीन आपूर्ति पर दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी की

डीसीएम श्रीराम लिमिटेड और आरती इंडस्ट्रीज लिमिटेड (एआईएल) ने क्लोरीन की आपूर्ति के लिए एक दीर्घकालिक रणनीतिक समझौते की घोषणा की है। इस समझौते के तहत, डीसीएम श्रीराम केमिकल्स अपने क्लोर–क्षार संयंत्र से एआईएल के आगामी डाउनस्ट्रीम केमिकल्स प्लांट, जोन प्ट, झगड़िया, गुजरात को क्लोरीन का एकमात्र आपूर्तिकर्ता होगा। इस साझेदारी के तहत, दोनों कंपनियाँ अपने संयंत्रों के बीच एक अत्याधुनिक, जैकेटेड भूमिगत क्लोरीन पाइपलाइन स्थापित करेंगी। सटीक इंजीनियरिंग के साथ डिजाइन की गई यह पाइपलाइन सुरक्षा, विश्वसनीयता और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करती है। पूरी तरह से चालू होने के बाद, एआईएल द्वारा डीसीएम श्रीराम केमिकल्स से वर्तमान में खरीदे जा रहे 150 टन क्लोरीन के अलावा, स्थिर अवस्था में प्रतिदिन 200 टन अतिरिक्त क्लोरीन खरीदने की उम्मीद है।

घोषणा पर टिप्पणी करते हुए, डीसीएम श्रीराम केमिकल्स के कार्यकारी निदेशक और सीईओ, सबालील नंदी ने कहा कि यह समझौता डीसीएम श्रीराम लिमिटेड और आरती इंडस्ट्रीज के बीच गहरे विश्वास और सहयोग को मजबूत करने में एक मील का पत्थर है। विश्वस्तरीय बुनियादी ढाँचे के माध्यम से दीर्घकालिक क्लोरीन आपूर्ति की प्रतिबद्धता जताकर, हम सुरक्षित, टिकाऊ और विश्वसनीय रासायनिक एकीकरण में अपनी अग्रणी स्थिति को मजबूत कर रहे हैं। यह साझेदारी न केवल एक पसंदीदा आपूर्तिकर्ता के रूप में डीसीएम श्रीराम की विश्वसनीयता को पुष्ट करती है, बल्कि हमें अपने अप्रत्यक्ष क्लोरीन एकीकरण को और बेहतर बनाने में भी सक्षम बनाती है–जो मूल्य को अधिकतम करने और हमारी कास्टिक सोडा क्षमताओं का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण कारक है।

घोषणा पर टिप्पणी करते हुए, एआईएल के सीईओ, सुयोग कोटेचा ने कहा कि एआईएल और डीसीएम श्रीराम लिमिटेड के बीच यह साझेदारी महत्वपूर्ण रसायनों के लागत–प्रभावी विनिर्माण को समर्थन देने हेतु आपसी तालमेल पर आधारित है। यह एआईएल की दीर्घकालिक, रणनीतिक साझेदारियों के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है जो लागत–कुशल तरीके से परिचालन सुरक्षा और स्थिरता को प्राथमिकता देते हुए आपूर्ति सुरक्षा को मजबूत करती हैं। क्लोरीन हमारी मूल्य श्रृंखला के लिए महत्वपूर्ण है और एक समर्पित पाइपलाइन के माध्यम से इसे सुरक्षित करना विश्वसनीयता और दक्षता सुनिश्चित करता है।

यूपीएल की यूके शाखा ने थाईलैंड की ग्रो केमिकल में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल की

यूपीएल लिमिटेड की यूके स्थित सहायक कंपनी यूपीएल ग्लोबल लिमिटेड ने थाईलैंड स्थित ग्रो केमिकल कंपनी लिमिटेड में 49% हिस्सेदारी हासिल करने के लिए एक शेयर सब्सक्रिप्शन समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

यूपीएल ने स्टॉक एक्सचेंजों को दी गई एक फाइलिंग में कहा कि इस निवेश में ग्रो केमिकल की नई इक्विटी पूंजी में 0.76 मिलियन डॉलर का नकद निवेश शामिल है। यह अधिग्रहण 31 दिसंबर, 2025 को या उससे पहले पूरा होने की उम्मीद है, जो अंतिम शर्तों के अधीन है।

बाका कंपनी लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी के रूप में 2011 में स्थापित, ग्रो केमिकल रसायनों, उर्वरकों और कृषि उत्पादों, जिनमें शाकनाशी, कीटनाशक, कवकनाशी और पादप पोषक तत्व शामिल हैं, की सोर्सिंग और बिक्री में लगी हुई है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2024 में 7.4 मिलियन डॉलर का राजस्व दर्ज किया, जो वित्त वर्ष 2023 में 8.8 मिलियन डॉलर और वित्त वर्ष 2022 में 9.5 मिलियन डॉलर से कम है।

यूपीएल ने कहा कि यूपीएल ग्लोबल और बाका के बीच रणनीतिक साझेदारी का उद्देश्य नवाचार को मजबूत करना और थाई किसानों के लिए स्थायी कृषि समाधान प्रदान करना है। इसका ध्यान संयुक्त अनुसंधान एवं विकास, वितरण और विपणन पर होगा, तथा थाईलैंड के कृषि विकास लक्ष्यों के अनुरूप उत्पाद पोर्टफोलियो और विनियामक पंजीकरण के विस्तार पर जोर दिया जाएगा।

रेडियल साइज़	समान बायस साइज़	रेडियल साइज़	समान बायस साइज़
320/85R28	12.4-28	380/85R28	14.9-28
340/85R28	13.6-28	420/85R28	16.9-28

यह छवि केवल उदाहरण के लिए बनाई गई है।

MADAAN TYRES HOUSE
MADAAN TYRES LLP

Sunny Madaan +91 9812608880
Inderjeet Madaan +91 828680007
Near Ambedksr Park, GT Road, Fatehabad-125050

पीएमएफएआई ने औषधीय, पशु चिकित्सा और कीटनाशकों के लिए अमेरिकी टैरिफ छूट की मांग की

कीटनाशक निर्माता एवं सूत्रकार संघ (पीएमएफएआई) ने कृषि–रसायनों के आयात पर 50% टैरिफ लगाने के अमेरिका के हालिया फैसले पर तत्काल चिंता व्यक्त की है और चेतावनी दी है कि इस कदम से भारतीय निर्यातकों पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है और फार्मास्यूटिकल्स, पशु चिकित्सा, खाद्य सुरक्षा और जन स्वास्थ्य में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ बाधित हो सकती हैं। टैरिफ में यह वृद्धि अमेरिकी व्यापार घाटे को कम करने के उद्देश्य से पारस्परिक टैरिफ ढाँचे के तहत आयातों को विनियमित करने वाले एक आदेश से उत्पन्न हुई है। हालाँकि फार्मास्युटिकल उत्पादों को छूट दी गई है, लेकिन सिद्ध औषधीय और पशु चिकित्सा उपयोग वाले फार्मास्युटिकल–ग्रेड कीटनाशकों को इससे बाहर रखा गया है क्योंकि वे कृषि–रसायनों के एचएस कोड के अंतर्गत वर्गीकृत हैं।

इस मामले की तात्कालिकता पर प्रकाश डालते हुए, पीएमएफएआई के अध्यक्ष प्रदीप दवे ने कहा कि अमेरिकी टैरिफ वृद्धि केवल एक व्यापार बाधा नहीं है, बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा और खाद्य सुरक्षा के लिए एक सीधी चुनौती है। भारत महत्वपूर्ण कृषि रसायनों का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता है, और घरेलू उद्योग तथा अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं, दोनों की सुरक्षा के लिए समय पर नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक है।

पीएमएफएआई इस बात पर जोर देता है कि पर्मेथ्रिन (मानव जूँ और खुजली के उपचार के लिए अमेरिकी फार्माकोपिया में सूचीबद्ध) और फिप्रोनिल (एक आवश्यक पशु चिकित्सा बाह्य परजीवीनाशक) जैसे उत्पाद फार्मास्यूटिकल छूट के अंतर्गत शामिल किए जाने योग्य हैं। एसोसिएशन का तर्क है कि एचएस अध्याय 30 के अंतर्गत ऐसे पदार्थों का पुनर्वर्गीकरण उनके वास्तविक उपयोग को बेहतर ढंग से दर्शाएगा और मानव एवं पशु चिकित्सा स्वास्थ्य दोनों क्षेत्रों में निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करेगा। पीएमएफएआई विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अनुशंसित जन स्वास्थ्य कीटनाशकों पर छूट की भी माँग करता है, जो मलेरिया, डेंगू और अन्य वेक्टर जनित रोगों के नियंत्रण के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनमें पर्मेथ्रिन, डेल्टामेथ्रिन, अल्फा–साइपरमेथ्रिन और लैम्ब्डा–साइहैलोथ्रिन जैसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले अणु शामिल हैं–जिनमें से कई भारत से बड़ी मात्रा में निर्यात किए जाते हैं।

प्राइमा एयरोस्पेस को कृषि में सहायता के लिए अर्जुन ड्रोन के लिए डीजीसीए की मंजूरी मिली

ड्रोन निर्माता प्राइमा एयरोस्पेस को अपने अर्जुन ड्रोन के लिए नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (DGCA) का प्रमाणन प्राप्त हुआ है, जिससे कंपनी कृषि संबंधी गतिविधियों के लिए इस मशीन का उपयोग कर सकेगी। प्राइम ग्रुप की संस्थापक और सीईओ धनश्री मंधानी ने बताया कि यह प्रगति ऐसे समय में हुई है जब विमानन सुरक्षा नियामक ने हाल ही में समूह के ड्रोन स्कूल ऑफ एक्सीलेंस को रिमोट पायलट ट्रेनिंग ऑर्गनाइजेशन (RPTO) के रूप में मंजूरी दी है और इसे सलाम किसान के राष्ट्रव्यापी प्लेटफॉर्म के माध्यम से ड्रोन निर्माण, पायलट प्रशिक्षण और बड़े पैमाने पर तैनाती के लिए भारत का पहला संपूर्ण मार्ग बनाया है।

कंपनी ने बताया कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मंधानी को क्ळ६। प्रमाणपत्र प्रदान किया। इस साल की शुरुआत में, प्राइमा ग्रुप ने ड्रोन अपनाने और कौशल विकास में तेजी लाने के लिए दावोस में विश्व आर्थिक मंच में राज्य सरकार के साथ 300 करोड़ रुपये के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। यह प्रमाणन एक नियामक मील का पत्थर से कहीं अधिक हैय यह इस बात का प्रमाण है कि भारत विश्व स्तरीय स्वदेशी ड्रोन तकनीक का निर्माण और विस्तार कर सकता है। उन्होंने कहा कि सलाम किसान ने ड्रोन छिड़काव और सटीक कृषि समाधानों से तीन लाख किसानों को सशक्त बनाया है।

मंधनी के अनुसार, प्रशिक्षण और हार्डवेयर दोनों के लिए डीजीसीए की मंजूरी के साथ, कंपनी सलाम किसान की सेवाओं को अखिल भारतीय स्तर पर विस्तारित करने और किसानों व ग्रामीण उद्यमियों के लिए एक स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए तैयार है। ड्रोन तकनीक का उपयोग किसान बड़े पैमाने पर फसल निगरानी और उच्च परिशुद्धता के साथ कीटनाशकों और उर्वरकों के छिड़काव, फसल की पैदावार में सुधार और रासायनिक अपशिष्ट को कम करने के लिए करते हैं। इसके अलावा, ये मशीनें मृदा और जल प्रबंधन के लिए विस्तृत डेटा प्रदान करती हैं, जिससे किसानों को अधिक कुशल, पर्यावरण के अनुकूल निर्णय लेने और समग्र कृषि प्रबंधन में सुधार करने में मदद मिलती है।

आरोग्यं रक्षाम:

Animax Pharma

एनिमैक्स फार्मा की तरफ से हमारे सभी डॉक्टरस, पशुपालकों, डिस्ट्रिब्यूटर्स व दवा निर्माताओं को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

ऐनिमैक्स फार्मा प्रा० लि०

120, पहली मंजिल, आर जी मॉल, सैक्टर-9, रोहिणी, नई दिल्ली - 110085

Email : animaxpharma@gmail.com | Visit us : www.animaxpharma.com

ग्राहक सेवा नम्बर :

09891321775

सुनील कटारिया ने गोदरेज एग्रोवेट के सीईओ और एमडी का पदभार संभाला

भारत में अग्रणी विविध कृषि व्यवसाय, गोदरेज एग्रोवेट लिमिटेड (गोदरेज एग्रोवेट) ने घोषणा की है कि सुनील कटारिया ने औपचारिक रूप से कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) और प्रबंध निदेशक (एमडी) के रूप में कार्यभार संभाल लिया है। उनका कार्यकाल 1 सितंबर, 2025 से पाँच वर्षों का होगा। श्री कटारिया को मई 2025 में गोदरेज एग्रोवेट का सीईओ और एमडी–पदनाम नियुक्त किया गया था। उन्हें मैरिको लिमिटेड, गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड और रेमंड लिमिटेड जैसे प्रमुख संगठनों में मार्केटिंग, बिक्री और नेतृत्वकारी भूमिकाओं में बीस वर्षों से अधिक का अनुभव है। उन्होंने वर्षों से व्यावसायिक परिवर्तन, बाजार विकास और संगठनों में सुधार लाने के लिए एक प्रतिष्ठा अर्जित की है। गोदरेज एग्रोवेट में, वह आज के विकसित होते व्यावसायिक परिदृश्य में उभरते क्षेत्रों में क्षमताओं के निर्माण पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए कंपनी को विकास और नवाचार के अगले चरण में ले जाएँगे। इस बदलाव पर टिप्पणी करते हुए, गोदरेज इंडस्ट्रीज लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, नादिर गोदरेज ने कहा कि हमें सुनील का स्वागत करते हुए बेहद खुशी हो रही है क्योंकि वह आधिकारिक तौर पर गोदरेज एग्रोवेट के सीईओ और एमडी की भूमिका में आ रहे हैं। चुनौतीपूर्ण परिचालन परिदृश्यों में व्यवसायों के निर्माण में समृद्ध अनुभव के साथ, सुनील गोदरेज एग्रोवेट के विभिन्न व्यवसायों का विस्तार करने के हमारे इरादे के साथ जुड़े हुए हैं। साथ ही लाभप्रदता को प्राथमिकता देते हुए और हमारे ब्रांड की पेशकशों को मजबूत करते हुए। मुझे विश्वास है कि उनके नेतृत्व में, एग्रोवेट सभी हितधारकों के लिए कृषि और स्थिरता में भारत के विश्वसनीय भागीदार के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत करेगा।

अपने एजेंडे की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए, गोदरेज एग्रोवेट लिमिटेड के सीईओ और एमडी, सुनील कटारिया ने कहा कि मैं गोदरेज एग्रोवेट का नेतृत्व करने के लिए उत्सुक हूँ, जो एक मजबूत नींव और प्रभावशाली विरासत वाली कंपनी है। प्रत्येक व्यवसाय विकास के विभिन्न चरणों में है, इसलिए मेरी प्राथमिकता क्षमता निर्माण में निवेश करके, हमारी बाजार–आधारित रणनीति के क्रियान्वयन को मजबूत करके और उच्च–संभावित व्यवसायों का विस्तार करके पूरे पोर्टफोलियो में मूल्य को अनलॉक करना होगा। मुझे विश्वास है कि हमारी टीम और हितधारकों के सहयोग से, गोदरेज एग्रोवेट सार्थक विकास को गति देता रहेगा और दीर्घकालिक मूल्य सृजन करता रहेगा।

स्वराज ट्रैक्टर्स ने पार किया 25 लाख यूनिट उत्पादन का ऐतिहासिक मुकाम

महिंद्रा समूह का हिस्सा और भारत के अग्रणी ट्रैक्टर ब्रांडों में से एक, स्वराज ट्रैक्टर्स ने आज पंजाब के मोहाली स्थित अपने विनिर्माण संयंत्र से 25 लाखवां ट्रैक्टर रोल–आउट करने की घोषणा की। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि 2022 में 20 लाख उत्पादन का आँकड़ा पार करने के सिर्फ तीन साल बाद हासिल हुई है, जो स्वराज ट्रैक्टर्स को भारत के घरेलू ट्रैक्टर उद्योग में सबसे तेजी से बढ़ने वाला ब्रांड सिद्ध करती है। स्वराज की यात्रा 1974 में शुरू हुई जब 20–25 एचपी श्रेणी में पहला मॉडल 'स्वराज 724' लॉन्च किया गया। यह भारत का पहला स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित ट्रैक्टर था। हरित क्रांति के दौर में आत्मनिर्भरता की भावना से जन्मा 'स्वराज' नाम स्वतंत्रता और स्वावलंबन के सशक्त भाव से प्रेरित है। स्वराज ने भारतीय इंजीनियरों द्वारा भारतीय खेतों के लिए तैयार किया गया मजबूत, भरोसेमंद और किफायती ट्रैक्टर पेश किया। दशकों में स्वराज ने ग्राहकों की जरूरतों से प्रेरणा लेकर, लगातार अपने ट्रैक्टर और कृषि मशीनीकरण समाधानों को बेहतर बनाया और किसानों के साथ अपने रिश्ते को और गहरा किया।

2002 में 5 लाख उत्पादन का आँकड़ा पार करने के बाद, मात्र 23 वर्षों में स्वराज 5 गुना बढ़कर 25 लाख यूनिट तक पहुंच गया। यह भारतीय कृषि में स्वराज की मजबूत उपस्थिति का प्रमाण है। स्वराज के पोर्टफोलियो में ऐसे ट्रैक्टर शामिल हैं जो मजबूत प्रदर्शन, सरलता और आधुनिकता का संतुलन प्रस्तुत करते हैं। इस रेंज में स्वराज 855, 735, 744, 960, 742, 963, स्वराज टारगेट और हाल ही में लॉन्च हुई 'नया स्वराज' श्रृंखला जैसे प्रतिष्ठित मॉडल शामिल हैं। यह ब्रांड की क्षमता को दर्शाता है कि वह बदलते समय और हल्के कृषि समाधानों की जरूरतों को भी पूरा कर सकता है।

इस उपलब्धि पर टिप्पणी करते हुए, विजय नाकरा, अध्यक्ष– फार्म इक्विपमेंट बिजनेस, महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड ने कहा, "स्वराज के 25 लाख उत्पादन की उपलब्धि किसानों की पीढ़ियों द्वारा ब्रांड पर जताए गए भरोसे को दर्शाता है। आत्मनिर्भर भारत की भावना से जन्मा स्वराज किसानों को सशक्त बनाता आ रहा है और खेती को बदलने व जीवन समृद्ध करने की हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है।"

SUZUKI
SUZUKI
ACCESS
Pickup Bhi, Mileage Bhi.
Shandaar Quality Ke Saath
NOW WITH
Bluetooth® Enabled Digital Console
One Way Clutch for Quieter Start
Front Lock Operated External Fuel Lid
LED Tail Lamp
BOOK A TEST RIDE ONLINE
OR CALL
1800-121-7996

Best Agrolife Ltd: विश्वस्तरीय कृषि समाधानों से समृद्ध हो रहा है किसान

Best Agrolife Ltd (BAL) एक अग्रणी रिसर्च–आधारित एग्रोकेमिकल कंपनी है, जो किसानों को आधुनिक, किफायती और पर्यावरण–हितैषी कृषि समाधान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। इसका लक्ष्य फसल सुरक्षा और पैदावार बढ़ाकर भारतीय किसानों को समृद्ध बनाना है। कंपनी के पास गजरौला, ग्रेटर नोएडा और जम्मू–कश्मीर स्थित चार अत्याधुनिक मैन्युफैक्चरिंग प्लांट हैं, जिनकी उत्पादन क्षमता 7,000 MTPA तकनीकी और 35,000 MTPA फॉर्मूलेशन है। BAL देशभर में 8,500 से अधिक वितरकों और 80,000 से ज्यादा रिटेल आउटलेट्स के नेटवर्क के जरिए 21 राज्यों के 15 लाख से अधिक किसानों तक पहुँच बनाती है।

Best Agrolife Limited

रिसर्च और नवाचार BAL की सबसे बड़ी ताकत है। गजरौला, नोएडा और मुंबई स्थित इसके R&D केंद्रों में पचास से अधिक कृषि विशेषज्ञ कार्यरत हैं। इसी कारण कंपनी को "Fastest Growing Agrochemical Company" और PMFAI 2025 Outstanding Innovation and Chemical Synthesis Award जैसे सम्मान प्राप्त हुए हैं। वर्तमान में BAL के पास 25 पेटेंट (एक अंतरराष्ट्रीय सहित) हैं। Ronfen, Tricolor और Nemagen जैसे सफल उत्पादों के बाद कंपनी ने हाल ही में BESTMAN, FETAGEN और SHOT DOWN जैसे पेटेंटेड उत्पाद लॉन्च किए हैं।

सस्टेनेबल खेती को बढ़ावा देने के लिए BAL ने बायो–स्टिमुलेंट्स और जैविक उर्वरकों की श्रेणी में भी कदम रखा है। फील्ड डेमोंस्ट्रेशन और स्थानीय मार्केटिंग से किसानों के साथ सीधा जुड़ाव कंपनी को और विश्वसनीय बनाता है। BAL का संकल्प है– 'मेक इन इंडिया' के तहत हर तिमाही नए सुरक्षित और प्रभावी उत्पाद लॉन्च करना, ताकि किसानों को उन्नत समाधान मिल सकें और कृषि को टिकाऊ एवं लाभकारी बनाया जा सके।

समृद्ध भारत की नयी पहचान, बेस्ट एग्रो का खुशहाल किसान।

आलू की उच्च उपज और गुणवत्ता के लिए महावीर जिरोन पावर प्लस का सही उपयोग

रबी सीजन में आलू की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। अब केवल पैदावार ही नहीं, बल्कि बेहतर गुणवत्ता और भंडारण क्षमता वाला आलू प्राप्त करना भी संभव है। इसके लिए किसानों को महावीर जिरोन पावर प्लस का उपयोग करना चाहिए, जो पारंपरिक डीएपी (डाय–अमोनियम फॉस्फेट) की तुलना में अधिक संतुलित पोषण उपलब्ध कराता है। जिरोन पावर प्लस बनाम डीएपी वरिष्ठ कृषि विज्ञानी प्रमोद पाण्डेय ने बताया कि डीएपी मुख्य रूप से नाइट्रोजन (18%) और फास्फोरस (46%) देता है, लेकिन इसमें जिंक, सल्फर, कैल्शियम, बोरॉन और मैग्नीशियम जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व नहीं होते। वहीं, जिरोन पावर प्लस फास्फोरस के साथ सल्फर, जिंक, कैल्शियम, बोरॉन और मैग्नीशियम जैसे तत्व प्रदान करता है, जो कंद के आकार, रोग प्रतिरोधक क्षमता और गुणवत्ता को बेहतर बनाते हैं।

क्यों है बेहतर विकल्प?

- जिरोन पावर प्लस, कंद दृढ़ता, रोगों से बचाव और भंडारण क्षमता को बढ़ाता है।
- लगातार डीएपी इस्तेमाल से मिट्टी में जिंक, कैल्शियम और बोरॉन की कमी हो जाती है, जबकि जिरोन पावर प्लस इसे पूरा करता है।
- आलू की अच्छी उपज और क्वालिटी के लिए पोटाश के साथ इसका संतुलित उपयोग जरूरी है।

अनुशंसित पोषण प्रबंधन

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार, आलू की फसल में उर्वरक की कुल अनुशंसित मात्रा 48:40:40 एनपीके होनी चाहिए। इसमें बुवाई के समय 250 किलो जिरोन पावर प्लस, 66 किलो MOP और 35 किलो यूरिया डालें। इसके बाद 25 से 55 दिन की अवधि में चरणबद्ध तरीके से यूरिया, सिमट्रॉन, अमित्रोन–जेड, बालेको, बोरट्री और एमजीएसओ का प्रयोग करें। साथ ही, 25–85 दिन की अवधि में जल घुलनशील उर्वरकों जैसे 19:19:19, 12:61:00 और सीएनबी का छिड़काव फसल की वृद्धि और स्टार्च संचय के लिए अत्यंत लाभकारी है।

निष्कर्ष– आलू की अधिक उपज और उच्च गुणवत्ता पाने के लिए किसानों को पारंपरिक डीएपी पर निर्भर रहने के बजाय महावीर जिरोन पावर प्लस के साथ संतुलित पोषण योजना अपनानी चाहिए।

श्रीराम का वादा
श्री राम
खर्च कम, मुनाफा ज्यादा
PYROXASULFONE 85% WG
HINATA
मंडूसी का करे जड़ से सफाया
श्री राम
HINATA
PYROXASULFONE 85% WG
Herbicide
60gm
SHREE RAM AGRO
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED CO.
60 ग्राम प्रति एकड़
किसान की समृद्धि - हमारा लक्ष्य
JAI SHREE RAM AGRO PVT. LTD.
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED CO.
FOLLOW US ON
+91-9350630589
@shreeramkarnal
@shreeramagroin1
shree ram agro india

एक स्थायी भविष्य के लिए भारतीय कृषि का रूपांतरण

भारतीय कृषि आज एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ परंपरा और नवाचार का संगम ही उसके भविष्य की दिशा तय करेगा। बदलते मौसम, बढ़ती लागत और मृदा स्वास्थ्य में गिरावट जैसी चुनौतियों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अब केवल पारंपरिक पद्धतियाँ पर्याप्त नहीं हैं। ऐसे समय में जैव–उत्तेजक आधुनिक खेती का एक महत्त्वपूर्ण साधन बनकर उभरे हैं, जो किसानों को टिकाऊ और जलवायु–अनुकूल खेती की ओर ले जाते हैं।

"इंडस्ट्री लीडरशिप अवार्ड का सम्मान श्री पीयूष गोयल, माननीय केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री और श्री नायाब सिंह सैनी, माननीय मुख्यमंत्री, हरियाणा द्वारा एग्रीकल्चर टुडे 16वें लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025 में प्रदान किया गया।

नई वास्तविकता और जैव–उत्तेजक की भूमिका

अनिश्चित वर्षा, बढ़ता तापमान और मिट्टी की बिगड़ती सेहत ने किसानों को नई तकनीकों की ओर बढ़ने को मजबूर किया है। जैव–उत्तेजक न तो परंपरा का विकल्प हैं और न ही केवल एक नया इनपुटय ये खेती की पुरानी विधियों को उन्नत बनाकर किसानों की उत्पादकता और मिट्टी की सेहत को संतुलित करते हैं। जिन किसानों ने इनका उपयोग किया है, उन्होंने फसलों में अधिक जीवंतता, बेहतर पैदावार और मिट्टी की नमी बनाए रखने की क्षमता में सुधार देखा है।

विज्ञान और समुदाय आधारित नवाचार

इंडोगल्फ क्रॉपसाइंसेज लिमिटेड इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। कंपनी केवल उत्पाद उपलब्ध नहीं कराती, बल्कि भारत की विविध कृषि परिस्थितियों के अनुरूप समाधान भी विकसित करती है।

- **इंडोब्रीजा और रूट–ओ–मैक्स गोल्ड**– समुद्री शैवाल से बने, जो पौधों की वृद्धि और लचीलापन बढ़ाते हैं।
- **एम्पायर**– प्रोटीन हाइड्रोलाइजेट्स और अमीनो एसिड से निर्मित, फसलों को ऊर्जा और मजबूती प्रदान करता है।
- **इंडोअपाचे**– ह्यूमिक और फुल्विक एसिड से भरपूर, जो मिट्टी की संरचना और पोषक तत्व अवशोषण को सुधारता है।

खेत से भविष्य तक

इन उत्पादों का असर केवल आँकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि खेतों में मूर्त रूप से दिखता है। किसानों ने बेहतर जड़ प्रणाली, एकसमान विकास, सूखे और गर्मी के प्रति अधिक सहनशीलता तथा स्थिर पैदावार का अनुभव किया है। विशेषकर जल–संकटग्रस्त क्षेत्रों में जैव–उत्तेजक ने फसलों को पानी की कमी से बचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

एक सतत मॉडल की ओर

जैव–उत्तेजक खेती को केवल लाभदायक ही नहीं बल्कि पर्यावरण–अनुकूल भी बनाते हैं। ये रसायनों पर निर्भरता घटाकर मिट्टी का संतुलन बहाल करते हैं और भारत की हरित कृषि नीतियों के अनुरूप टिकाऊ मॉडल तैयार करते हैं। यह न केवल खाद्य सुरक्षा बल्कि आर्थिक और पारिस्थितिक स्थिरता के लिए भी आवश्यक है।

त्योहारी सीजन में हीरो माटोकॉर्प की दोपहिया वाहनों की मांग में उछाल

नवरात्रि के शुरु होते ही हीरो माटोकॉर्प की दोपहिया वाहनों की मांग में जबर्दस्त बढोत्तरी देखने को मिल रही है। जीएसटी कटौती के बाद 100 सीसी और 125 सीसी जैसे किफायती सेगमेंट में पहली बार वाहन खरीदने वाले ग्राहको पर खर्च का बोझ कम होने से शोरुम में खरीदारों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साथ ही दिपावली व धनतेरस के लिए भी रिकॉर्ड बुकिंग हो रही है।

कंपनी ने कहा कि देशभर में शोरुम में ग्राहकों की आवाजाही पिछले साल की तुलना में 50 प्रतिशत से अधिक है। डिजिटल प्लेटफार्म और ऑनलाइन सर्च में भी लगभग तीन गुना वृद्धि दर्ज की गई है। हीरो माटोकॉर्प के इंडिया बिजनेस यूनिट के सीबीओ आशुतोष वर्मा ने कहा कि नवरात्रि के पहले दिन ही शोरुम में आनेवाले और वाहन खरीदने वाले ग्राहकों की संख्या दोगुने से अधिक रही। ग्राहकों को नई वाहनों को तुरंत खरीदने की मजबूत इच्छा साफ नजर आ रही है। इस साल कंपनी ने पहली बार हीरो गुडलाइफ फेस्टिव कैंपेन शुरु किया है। इसके तहत ग्राहकों को 100 फीसदी कैशबैक, सोने के सिक्के और अन्य लाभ दिए जा रहे हैं।

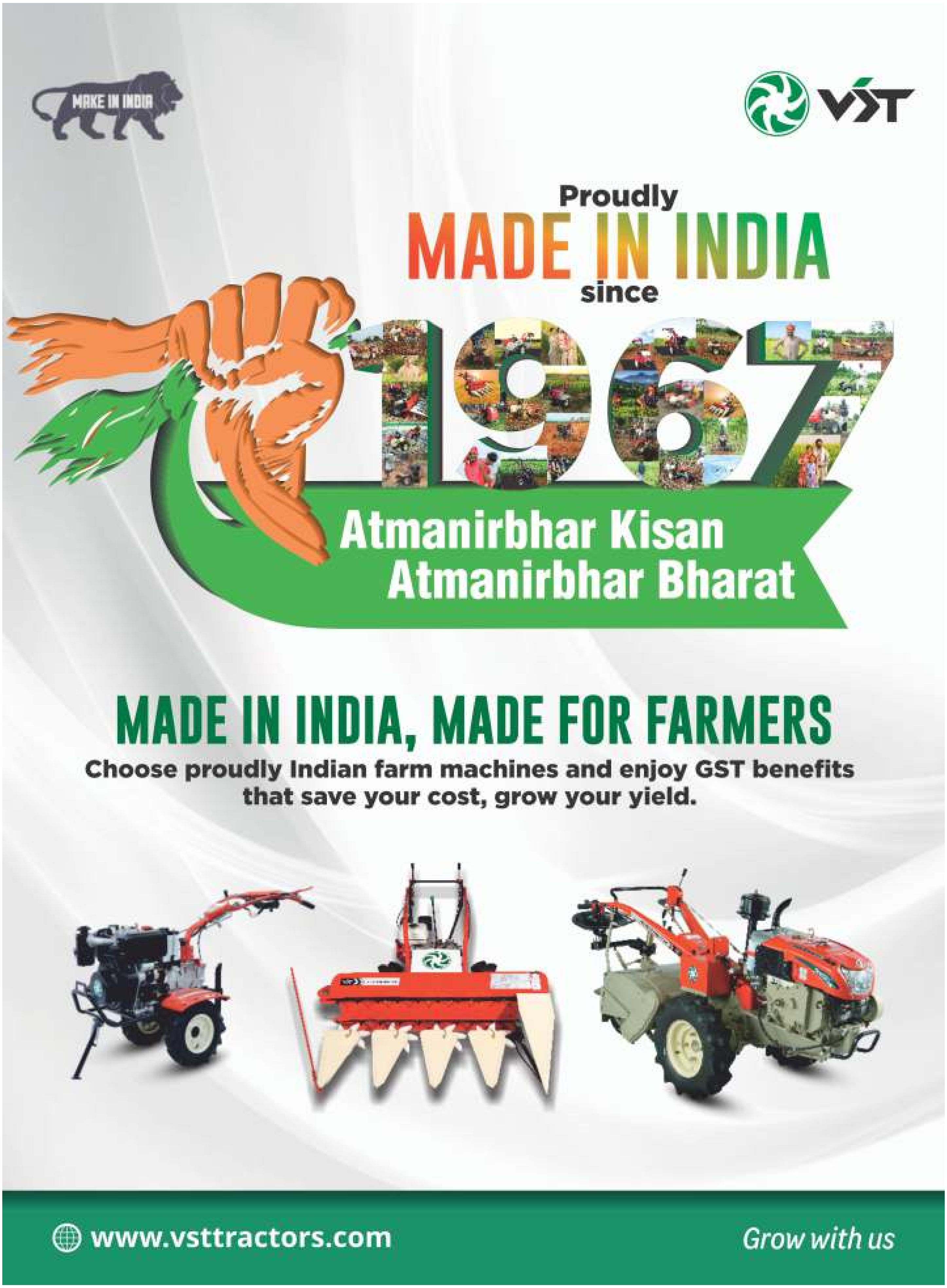
MAKE IN INDIA
VST
Proudly
MADE IN INDIA
since
1967
Atmanirbhar Kisan
Atmanirbhar Bharat
MADE IN INDIA, MADE FOR FARMERS
Choose proudly Indian farm machines and enjoy GST benefits
that save your cost, grow your yield.
www.vsttractors.com
Grow with us

जय बजरंग प्रतिष्ठान में शुरू हुआ नया कृषि प्रशिक्षण बैच, युवाओं को मिलेंगे स्वरोजगार के नए अवसर

उत्तर प्रदेश के बड़ौत स्थित जय बजरंग प्रतिष्ठान में कृषि से संबंधित प्रशिक्षण देने के लिए नए प्रशिक्षण बैच का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि जय किशोर उपस्थित रहे, जबकि जिला पंचायत सदस्य बसंत तोमर और फसल क्रांति के निदेशक डॉ. राजबीर सिंह ने विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के नोडल अधिकारी डॉ. जे.के. श्योराण ने की।

नए बैच का शुभारंभ

कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि जय किशोर द्वारा फीता काटकर की गई। इस दौरान उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। सरकार इस दिशा में अनेक योजनाएँ चला रही है, जिनका लाभ युवाओं को अवश्य लेना चाहिए। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे कृषि उद्यमिता (Agri&Entrepreneurship) के क्षेत्र में आगे बढ़ें और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दें।

कृषि उद्यमिता पर जोर

इस अवसर पर फसल क्रांति के निदेशक डॉ. राजबीर सिंह ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता आज समय की माँग है। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण लेकर युवा सफल कृषि उद्यमी बन सकते हैं और अपने गाँव में रहकर भी अच्छी आय अर्जित कर सकते हैं। डॉ. सिंह ने विशेष रूप से मधुमक्खी पालन, बकरी पालन और जैविक खेती जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण लेकर ग्रामीण स्तर पर स्वरोजगार के अवसरों का लाभ उठाने की अपील की। इसी दौरान उन्होंने संस्थान के कंप्यूटर लैब का फीता काटकर शुभारंभ भी किया।

युवाओं को प्रेरणा

जिला पंचायत सदस्य बसंत तोमर ने भी युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज के समय में युवाओं को केवल नौकरियों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि कृषि आधारित व्यवसाय अपनाकर युवा अपने ही क्षेत्र में स्वरोजगार शुरू कर सकते हैं और दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं।

संस्थान की पहल

संस्थान के निदेशक डॉ. जे.के. श्योराण ने जानकारी दी कि इस नए बैच में कुल 25 छात्र शामिल हुए हैं। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद छात्रों को कृषि उद्यमिता के लिए बैंक से ऋण (Loan) उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे वे अपना व्यवसाय शुरू कर सकें। उन्होंने यह भी बताया कि संस्थान द्वारा प्रशिक्षण निशुल्क प्रदान किया जाता है, साथ ही छात्रों के लिए रहने और खाने की पूर्ण व्यवस्था भी की जाती है।

सहयोग और मार्गदर्शन

कार्यक्रम में संस्थान के प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर वसीम खान, अधिकारी राहुल खोकले और अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। उन्होंने छात्रों को आश्वासन दिया कि प्रशिक्षण के दौरान उन्हें हर संभव मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया जाएगा।

ग्रामीण युवाओं के लिए सुनहरा अवसर

जय बजरंग प्रतिष्ठान द्वारा शुरू किया गया यह नया प्रशिक्षण बैच ग्रामीण युवाओं को कृषि उद्यमिता की दिशा में प्रोत्साहित करेगा और उन्हें स्वरोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराएगा। यह पहल निश्चित रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक सराहनीय कदम साबित होगी।

foragen®

Global Forage Company

चिकलेट गोल्ड

- चिकलेट गोल्ड एक बारहमासी चारा फसल है
- उत्कृष्ट एनडीएफ और कम एडीएफ के साथ प्रोटीन 25% से 35% होगा
- चिकलेट गोल्ड एकल फसल और किसी भी छोटी अनाज वाली फसल के साथ मिश्रित फसल हो सकती है
- कैल्शियम और फॉस्फोरस जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों के लिए भी चिकलेट गोल्ड सर्वोत्तम चारा है

चिकलेट

- चिकलेट बार-बार कटाई देने वाला चारा चिकोरी है।
- चिकलेट न्यूनतम 25 कट्स तक उपज देता है।
- उत्कृष्ट N.D.F और कम A.D.F के साथ प्रोटीन 25% से 35% होगा
- चिकलेट अकेला फसल और मिश्रित फसल हो सकती है।

Foragen Seeds Pvt Ltd, Hyderabad - 500034.
Ph: +91 93468 74844 www.foragenseeds.com

फार्मर न्यूज

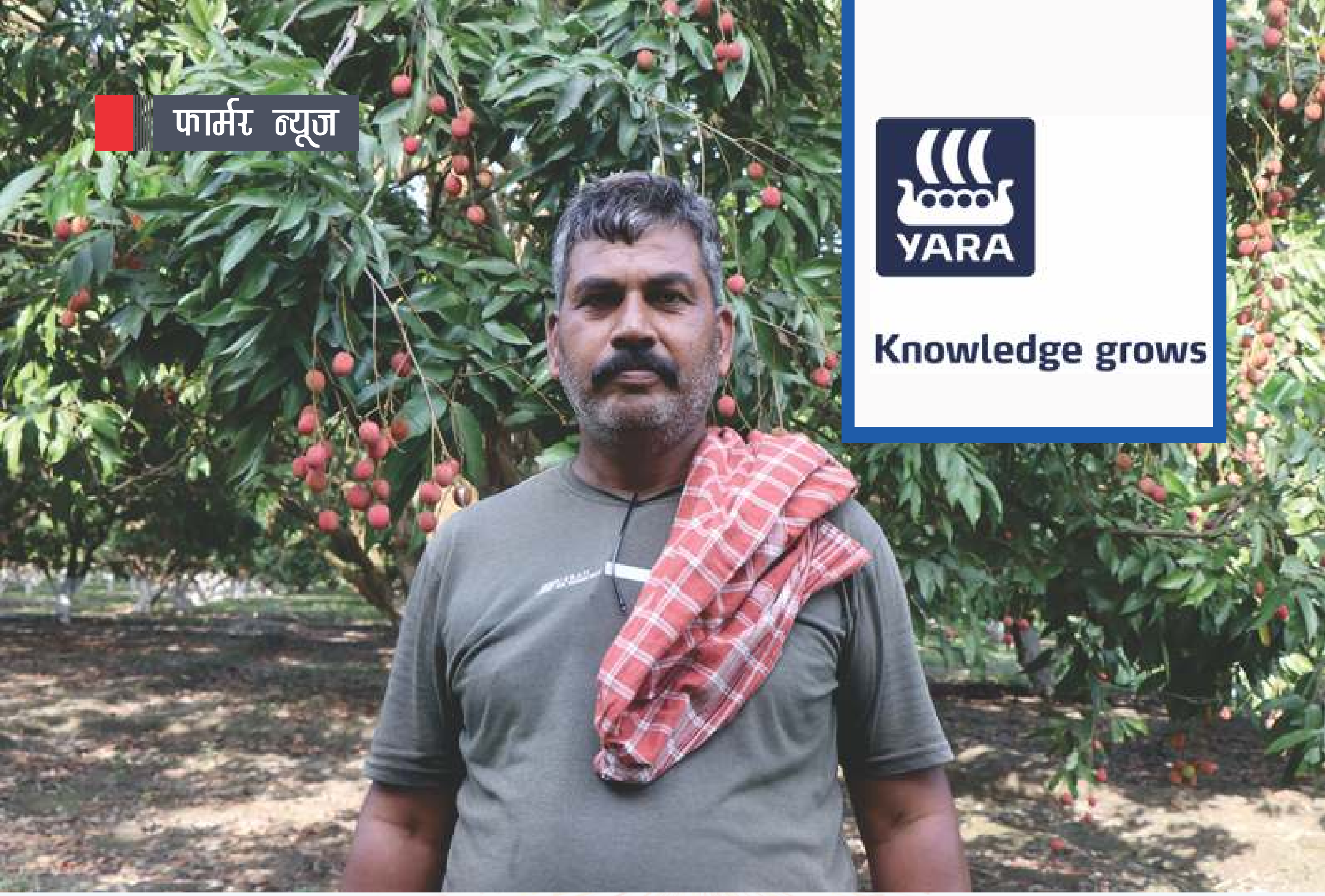

किसान केंद्रित अभियान से पैदावार और आय दोनों में हुई अभूतपूर्व वृद्धि

विश्व की अग्रणी क्रॉप न्यूट्रिशन कंपनी यारा इंडिया ने लीची किसानों को सशक्त बनाने और मुजफ्फरपुर की लीची को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कंपनी ने किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों – जैसे कि लीची का जल्दी खराब होना, गिरती गुणवत्ता, कम बाजार मूल्य, जलवायु संकट और कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए विज्ञान–आधारित रणनीति अपनाई।

समस्याओं पर सटीक वार

सामान्य धारणा के विपरीत, लीची की कम उत्पादकता केवल मौसम की मार से नहीं बल्कि असंतुलित पोषण, कमजोर फसल प्रबंधन और पोस्ट–हार्वेस्ट तकनीकों की अनदेखी से भी प्रभावित होती है। इन चुनौतियों को देखते हुए यारा इंडिया ने किसानों के लिए एक बहुआयामी क्रॉप क्लस्टर स्ट्रेटजी लागू की। कंपनी ने 20/20 रिटेलर नेटवर्क विकसित कर किसानों तक लगातार पहुँच बनाई और विशेष फोलियर उत्पाद– यारा वीटा जिंट्रैक और स्टॉपिट के इस्तेमाल से लीची की गुणवत्ता और शेल्फ लाइफ में उल्लेखनीय सुधार किया।

नतीजे: पैदावार और मुनाफे में उछाल

- वर्ष 2022 में प्रति एकड़ पैदावार औसतन 3 मीट्रिक टन थी, जिससे किसानों को करीब 1.35 लाख रुपये की आय होती थी।
- वर्ष 2024 तक पैदावार बढ़कर 4.5 मीट्रिक टन और आय 4.05 लाख रुपये प्रति एकड़ हो गई।
- मौजूदा वर्ष 2025 में पैदावार लगभग 4.9 मीट्रिक टन तक पहुँच गई और किसानों की औसत आय बढ़कर 4.9 लाख रुपये प्रति एकड़ हो गई।

सबसे बड़ा लाभ यह रहा कि पोस्ट–हार्वेस्ट नुकसान, जो 2022 में करीब 30% था, घटकर 2025 में 10% से भी कम रह गया। इससे उपभोक्ताओं तक बेहतर गुणवत्ता की लीची पहुँच सकी।

किसानों का आत्मविश्वास बढ़ा

यारा इंडिया की पहल से अब तक 400 से अधिक किसान जुड़े हैं और कुल मिलाकर पैदावार में 55% की वृद्धि दर्ज की गई है। इस कार्यक्रम ने न सिर्फ मुजफ्फरपुर की लीची को बाजार में प्रीमियम पहचान दिलाई, बल्कि इसे गाँवों में फसल पुनरोद्धार का अनुकरणीय मॉडल भी बना दियझं

मोज़ेक
बायोसाइंसेज़

रैनुविस
जगाये मिट्टी की ताक़त

फॉस्फोरस के साथ बढ़ाये अन्य 7 पोषक तत्वों की उपलब्धता!

जड़ों एवं पौधों का सम्पूर्ण विकास

भरपूर एवं दमदार उपज

फर्टिलाइजर कोटिंग के लिए भारत का
पहला जीवाणु उर्वरक

मोज़ेक
क्वालिटी ही पहचान

मोज़ेक- विश्व की सबसे बड़ी कंपनी जो फॉस्फेट व पोटाश का संयुक्त रुप से निर्माण करती है

Mosaic India | Mosaic India | www.mosaiccoindia.com | Toll Free - 1800 103 5684

साक्षात्कार

BASAI एग्री सॉल्यूशन इंडस्ट्री की एक सामूहिक आवाज है- विपिन सैनी

BASAI (Biological Agri Solutions Association of India) भारत में बायोलॉजिकल इनपुट्स जैसे बायोपेस्टीसाइड, बायोफंजीसाइड, बायोस्टिमुलेंट और बायोफर्टिलाइजर के विकास और नीतिगत मुद्दों पर केंद्र व राज्य सरकार के साथ मिलकर काम करती है। BASAI एक नॉन–फॉर–प्रॉफिट संस्था है जो इंडस्ट्री और किसानों दोनों की आवाज को सरकार तक पहुँचाने का कार्य करती है। फसल क्रांति के विशेष इंटरव्यू श्रृंखला में संस्था के सीईओ, डॉ. विपिन सैनी ने विशेष बातचीत में BASAI की भूमिका, चुनौतियों और भविष्य की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की।

BASAI का गठन क्यों किया गया और यह संस्था किस तरह से कार्य करती है?

BASAI दरअसल बायोलॉजिकल एग्री सॉल्यूशन इंडस्ट्री की एक सामूहिक आवाज है। यह नॉन–फॉर–प्रॉफिट संस्था है जो कंपनी एक्ट की धारा 8 के तहत पंजीकृत है। हम केंद्र और राज्य सरकारों के साथ मिलकर नीतिगत मामलों, एडवोकेसी और नियामक मुद्दों पर कार्य करते हैं। जब भी किसी सदस्य कंपनी को बायोलॉजिकल इनपुट्स–जैसे बायोपेस्टिसाइड, बायोफंजीसाइड या बायोस्टिमुलेंट से जुड़े किसी प्रकार की दिक्कत होती है, BASAI उस समस्या को सरकार के समक्ष रखती है और उसका समाधान ढूँढने का प्रयास करती है। इसका सीधा फायदा इंडस्ट्री के साथ–साथ किसानों को भी होता है।

बायोलॉजिकल और बायोस्टिमुलेंट पर सरकार के हालिया रुख को BASAI कैसे देखता है?

यह सही है कि 2021 से पहले बायोस्टिमुलेंट पर कोई नियमन नहीं था, लेकिन 2021 में यह रेगुलेट होना शुरू हुआ। इसके बाद कंपनियों को डेटा जेनरेट करना पड़ा और इस प्रक्रिया में काफी लागत भी आती है। हालांकि, यह एक सकारात्मक कदम है क्योंकि इससे इंडस्ट्री को मजबूती मिलेगी। आज लगभग 150 बायोस्टिमुलेंट उत्पाद नोटिफाई हो चुके हैं, जिससे यह साफ है कि इंडस्ट्री ने मेहनत की है और आगे भी इसका लाभ मिलेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि माननीय प्रधानमंत्री जी का जो सपना है कि खेती में रसायनों का उपयोग कम हो, उसमें बायोलॉजिकल इनपुट्स बहुत अहम भूमिका निभा रहे हैं। किसान इन उत्पादों को अपना भी रहे हैं और अच्छे परिणाम भी मिल रहे हैं।

जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है, लेकिन कई बार बायोलॉजिकल उत्पादों के दिशा–निर्देश किसानों के लिए समस्या बन जाते हैं। इस पर आपका क्या कहना है?

आपने बिल्कुल सही कहा, जो उत्पाद 30–40 वर्षों से सुरक्षित रूप से उपयोग हो रहे थे, उन्हें अचानक रोक देने से किसान और इंडस्ट्री दोनों को समस्या हुई है। राज्य सरकारों ने पहले ही प्रमाणित कर दिया था कि ये उत्पाद सुरक्षित हैं और इनका पर्यावरण, पशुओं या खेतों पर कोई नकारात्मक असर नहीं है। ऐसे में इनको रोकना उचित नहीं है। मेरा मानना है कि सरकार को इन उत्पादों की बिक्री की अनुमति तब तक देनी चाहिए जब तक इनके डेटा की प्रक्रिया पूरी नहीं होती। कम से कम उन उत्पादों को लिक्विडेशन का समय जरूर मिलना चाहिए जो 16 जून तक निर्मित हो चुके थे। साथ ही, हमें यह भी देखना चाहिए कि यह खेती का लगातार सीजन है पहले खरीफ, फिर आलू और उसके बाद रबी गेहूं। किसानों को इन उत्पादों की सख्त आवश्यकता है। BASAI लगातार इस विषय पर सरकार के संपर्क में है ताकि किसानों और इंडस्ट्री को राहत मिल सके।

BASAI 2025 क्या है और इसका क्या महत्व है?

BASAI 2025 वास्तव में हमारे वार्षिक कॉन्फ्रेंस का दूसरा संस्करण है। इसका आयोजन इस वर्ष 22 और 23 सितम्बर को दिल्ली के इंडिया हैबिटैट सेंटर में किया गया। इस कॉन्फ्रेंस का मुख्य उद्देश्य पूरी बायो–एग्री इंडस्ट्री को एक मंच पर लाना था। इसमें बायोफर्टिलाइजर, बायोपेस्टिसाइड और बायोस्टिमुलेंट क्षेत्र से जुड़े सभी विशेषज्ञ, कंपनियां और संस्थाएं शामिल हुए। इस मंच पर हमने न केवल इंडस्ट्री की चुनौतियों पर चर्चा की, बल्कि भविष्य की संभावनाओं और नीतिगत समाधान पर भी विचार किया। इससे इंडस्ट्री को दिशा और किसानों को टिकाऊ समाधान दोनों मिलेंगे।

आने वाले वर्षों में भारतीय किसानों और बायोलॉजिकल इंडस्ट्री के लिए आप कौन–सी संभावनाएं देखते हैं?

मुझे लगता है कि भारत में बायोलॉजिकल इंडस्ट्री का भविष्य बेहद उज्ज्वल है। किसानों में जैविक खेती और टिकाऊ समाधान की मांग बढ़ रही है। जैसे–जैसे रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग सीमित करने की दिशा में नीतियाँ बन रही हैं, बायोलॉजिकल इनपुट्स की भूमिका और बढ़ेगी। किसानों के लिए यह महत्वपूर्ण होगा कि वे इन उत्पादों को अपनाएँ, क्योंकि ये न केवल पर्यावरण को सुरक्षित रखते हैं बल्कि मिट्टी की सेहत भी सुधारते हैं। BASAI का उद्देश्य है कि किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित और आसानी से उपलब्ध उत्पाद मिलें। मेरा संदेश किसानों के लिए यही है कि बायोलॉजिकल उत्पाद खेती को टिकाऊ बनाने का सबसे प्रभावी रास्ता हैं और आने वाले समय में यही कृषि का भविष्य तय करेंगे।

इमरान इदरीसी
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

SONALIKA
HEAVY DUTY TRACTOR RANGE
दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं
सोनालीका
हैवी ड्यूटी धमाका
15 551 उपहार*
पूरे देश को जीतने का मौका लकी ड्रा द्वारा
*ऑफर 4 अगस्त से 31 अक्टूबर 2025 तक
16 सोनालीका DLX^ DI 60 TP 4WD
17 टाटा पंच कार^
111 रॉयल एनफील्ड^
175 होंडा शाइन^ (100 cc)
और भी ढेरों उपहार^
जैसे - रोटावेटर, AC, LED TV, मोबाइल फोन, डिनर सेट और वॉल क्लॉक
डबल बचत* ऑफर + GST का फायदा उठाएं
सिकंदर DLX MULTISPEED DI 55 III
डबल बचत* ₹1 08 000.*
₹8 29 900. ऑफर बचत* ₹7 69 900. GST बचत* ₹7 21 900.*
*नई GST दर 5% के साथ
DI 35 39 HP (28.8 kW) | सेंटर गियर
डबल बचत* ₹70 000.*
₹5 98 900. ऑफर बचत* ₹5 64 900. GST बचत* ₹5 29 900.*
*नई GST दर 5% के साथ
DI 734 P+ 37 HP श्रेणी | पॉवर स्टीयरिंग
डबल बचत* ₹63 000.*
₹5 49 900. ऑफर बचत* ₹5 19 900. GST बचत* ₹4 86 900.*
*नई GST दर 5% के साथ
सभी ट्रैक्टर रेंज पर ₹18 000.- ₹80 000. तक की GST बचत
मिस्ड कॉल: 9610123890

साक्षात्कार

वर्डेशियन लाइफ साइंस किसानों को दे रहा है टिकाऊ समाधान- आर.के. गोयल

फसल क्रांति के विशेष साक्षात्कार श्रृंखला में हमारे साथ मौजूद हैं आर.के. गोयल, प्रबंध निदेशक (एपीएसी रीजन), वर्डेशियन लाइफ साइंस। यह कंपनी कृषि क्षेत्र में बायोलॉजिकल और न्यूट्रिशन आधारित समाधानों की अग्रणी कंपनी मानी जाती है। 1981 में पहला बायोस्टिमुलेंट स्पीक साइटोजाइम लाने का श्रेय इसी कंपनी को जाता है। आज वर्डेशियन न केवल भारत में बल्कि एशिया के कई देशों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही है। इस खास बातचीत में आर.के. गोयल ने कंपनी की भारत में यात्रा, भविष्य की योजनाओं और किसानों के लिए उपलब्ध हो रहे नए अवसरों पर विस्तार से चर्चा की।

वर्डेशियन लाइफ साइंस की भारत में यात्रा कब और कैसे शुरू हुई?

हमारी कंपनी अनुसंधान आधारित है और इसका मुख्य केंद्र अमेरिका में स्थित है। सभी उत्पादों का निर्माण भी वहीं होता है। भारत में हमने काफी समय पहले कदम रखा। शुरू से ही हमने बी2बी मॉडल को अपनाया है, यानी हम सीधे किसानों को नहीं बल्कि कृषि क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों जैसे यूपीएल, घरदा केमिकल, कोर्टवा और सरस्वती जैसी कंपनियों के साथ काम करते हैं। ये कंपनियां अपने डीलर नेटवर्क के माध्यम से किसानों तक हमारे उत्पाद पहुंचाती हैं। भारत में हम लगातार अपनी पकड़ मजबूत कर रहे हैं और आज हम अग्रणी बायोलॉजिकल कंपनी के रूप में जाने जाते हैं।

भारतीय बाजार को ध्यान में रखते हुए कंपनी की आने वाले समय में क्या योजनाएं हैं?

वर्तमान में हमारे सभी उत्पाद अमेरिका से आयात किए जाते हैं, जिसमें 2 से 3 महीने का समय लग जाता है। लेकिन भारत और एशिया की जरूरतों को देखते हुए हमने गुजरात में अपनी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट शुरू करने का निर्णय लिया है। इससे न केवल भारतीय किसानों को समय पर उत्पाद मिलेंगे बल्कि हम इंडोनेशिया, फिलीपींस और अन्य एशियाई देशों में भी आसानी से सप्लाई कर सकेंगे। भविष्य में हमारा लक्ष्य है कि वर्डेशियन को एशिया की सबसे भरोसेमंद और बड़ी बायोलॉजिकल कंपनी के रूप में स्थापित करें। अभी हम भारत, मलेशिया, पाकिस्तान, थाईलैंड और चीन जैसे देशों में मजबूती से कार्य कर रहे हैं और इस कार्यक्षेत्र को और विस्तार देने पर काम कर रहे हैं।

वैश्विक कृषि बाजार और भारतीय कृषि बाजार में क्या विशेष अंतर आप देखते हैं?

भारतीय कृषि बाजार बहुत तेजी से विकसित हो रहा है। हमारी सीईओ क्लेयर डोयले भी मानते हैं कि यह विश्व का सबसे तेजी से बढ़ता हुआ कृषि बाजार है। यदि बायोलॉजिकल सेगमेंट की बात करें तो इसमें प्रतिवर्ष लगभग 12 प्रतिशत की ग्रोथ हो रही है। यह एक बहुत बड़ा अवसर है। हाल ही में हमने अमेरिका से सीड प्लस नामक उत्पाद भारत में लॉन्च किया है, जो बीजोपचार के लिए उपयोग होता है। यह पौधों की शुरुआती वृद्धि को तेज करता है और फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद करता है। भारत में ऐसी आधुनिक तकनीक किसानों को सीधे लाभ पहुंचा सकती है और यही हमें वैश्विक बाजार से अलग बनाता है।

भारत में बायोलॉजिकल उत्पादों के पंजीकरण आपका क्या कहना है ?

बायोलॉजिकल पंजीकरण की प्रक्रिया भारत में अभी नई है। इसमें कई तकनीकी पहलुओं को स्पष्ट करने की आवश्यकता है, जैसे कि टेस्टिंग के मानक और तरीके। हालांकि, हमें विश्वास है कि आने वाले समय में यह प्रक्रिया और पारदर्शी एवं सरल होगी। वर्डेशियन ने अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए पहले ही रजिस्ट्रेशन के लिए डोजियर जमा कर दिया है। हमारे सभी बिजनेस पार्टनर्स ने भी रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन किया है। हम मानते हैं कि थोड़े समय के बाद भारतीय किसान इन पंजीकृत और सुरक्षित उत्पादों का लाभ आसानी से ले सकेंगे।

भारतीय किसानों को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

किसान हमारे सबसे बड़े और अहम ग्राहक हैं। उनकी समस्याओं का समाधान देना ही हमारी पहली प्राथमिकता है। उदाहरण के लिए यदि मिट्टी का pH अधिक है और उसमें फॉस्फोरस की उपलब्धता कम है, तो तकनीकी उत्पादों का उपयोग करके फॉस्फोरस को बेहतर ढंग से पौधों द्वारा अवशोषित कराया जा सकता है। इससे किसान को सीधे लाभ मिलेगा और उसकी पैदावार में सुधार होगा। हमारा प्रयास हमेशा यही रहेगा कि हम किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले, टिकाऊ और आधुनिक समाधान दें, जिससे उनकी आय बढ़े और वे कृषि के बदलते दौर में आत्मनिर्भर बन सकें।

इमरान इदरीसी
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

नया
स्वराज
मेरा
SWARAJ
UNMATCHED
परफ़ॉर्मेंस
कम्फ़र्ट
पावर
मज़बूती
स्टाइल
6 YEAR WARRANTY
SWARAJ 744 FE
SWARAJ 855 FE
नया स्वराज अब 22.37kW - 37.28kW
(30 - 50 HP) में उपलब्ध
स्वराज ट्रैक्टर्स की अधिक जानकारी के लिए
1800 425 0735 (टोल फ्री नंबर) पर सम्पर्क करें.

जिंक की महत्वता

फसल उत्पादन में जिंक तत्व का महत्वपूर्ण योगदान है। पौधों में जिंक की कमी से फसल उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जिससे अनाज उत्पादन कम होता है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में फसल उत्पादन में 40 प्रतिशत तक की कमी देखने को मिली है जिसके कारण किसान भाइयों की आर्थिक स्थिति पर भी असर पड़ता है।

संतुलित उर्वरक उपयोग में जिंक को बढ़ावा देने की आवश्यकता है क्योंकि इससे मृदा स्वास्थ्य व फसलों के उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है जिसके फलस्वरूप खाद्य व पोषण सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

जिंक पोषक तत्व को बढ़ावा देने से मृदा, फसल व मनुष्यों में जिंक की कमी की पूर्ति होती है। इस सन्दर्भ में दीर्घकालीन स्थायी समाधान के लिए जिंक युक्त उर्वरक अनाज उत्पादन में अति आवश्यक है।

जिंक उर्वरक के बारे में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:–

Zinc ...essential for life

जिंक न्यूट्रियंट इनिशिएटिव
इंटरनैशनल जिंक एसोसिएशन
G1 & G5, ग्राउंड फ्लोर, एलाइड भवन
लोकल शॉपिंग कॉम्पलैक्स, कम्यूनिटी सेंटर, पुष्प विहार
नई दिल्ली – 110 062, भारत
+91-29960040 I sdas@zinc.org I www.zinc.org/crops

Zinc Nutrient Initiative

Swami Seed Agencies

Wholesaler of All kinds of Indian & Imported Seeds
INDOR, OUTDOOR & ORNAMENTAL PLANTS AND SEEDS

Deals In World Famous Companies Vegetable, Flower, Exotic and Herbs Seeds

CLAUSE VEGETABLE SEEDS
TOKITA
syngenta
SAKATA
PanAmerican Seed
Benary
bejo zaden
Kalash
ENZA ZADEN
NS
RIJK ZWAAN

northstar pacific

Distributors :
Northstar Pacific Hybrid Seeds

12, RAM DWARA MANDIR, MAIN BAZAR, Opp. INDRA MARKET,
OLD SUBZI MANDI, DELHI-7 Ph. : 9899600662, 9212461519, 9212160260
E-mail : accounts_swamiseedagency@yahoo.com Web. www.swamiseed.com

साक्षात्कार

डिजिटल कृषि और टिकाऊ खेती की ओर अग्रसर हो किसान- सावेश कुमार

कृषि क्षेत्र में तकनीक और नवाचार की भूमिका लगातार बढ़ती जा रही है। किसानों की समस्याओं को समझते हुए कंपनियाँ न केवल नए उत्पाद और समाधान लेकर आ रही हैं, बल्कि डिजिटल और सस्टेनेबल खेती की दिशा में भी काम कर रही हैं। इसी क्रम में फसल क्रांति ने बातचीत की सावेश कुमार, बिजनेस हेड इंडिया, SAS यूपीएल से। प्रस्तुत है उनके साथ खास साक्षात्कार

कृषि क्षेत्र में आपके करियर की शुरुआत कैसे हुई?

यदि मैं अपनी बात करूँ तो कृषि क्षेत्र में मेरा लगभग 16 वर्षों का अनुभव है। मैंने अपने करियर की शुरुआत फ्रंटलाइन सेल्स से की थी। उस समय मैं उर्वरक (फर्टिलाइजर), कीटनाशक (पेस्टिसाइड) और बीज (सीड)– तीनों से जुड़ा हुआ था। इसके बाद वर्ष 2014 में मैंने यूपीएल से जुड़ना शुरू किया और अब तक लगभग 34 देशों में कार्य कर चुका हूँ। वर्ष 2019 से मैं यूपीएल इंडिया में कार्यरत हूँ।

कृषि क्षेत्र में यूपीएल कैसे काम कर रही है?

यूपीएल आज सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर भी काम कर रही है। टर्नओवर के मामले में वर्तमान समय में कंपनी विश्व में पाँचवें स्थान पर है। यदि किसानों की दृष्टि से देखें तो उनकी सबसे बड़ी समस्या है– कम लागत में अधिक उत्पादन। लेकिन जलवायु परिवर्तन और मिट्टी की उर्वरता घटने के कारण उत्पादन में गिरावट देखी जा रही है। ऐसे में यूपीएल किसानों की मदद क्लाइमेट रेजिलिएंट टेक्नोलॉजी के माध्यम से कर रही है। डिजिटल कृषि के जरिए किसानों को सही तापमान, वर्षा की जानकारी, कीट नियंत्रण और मौसम आधारित सुझाव उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इसके लिए हमारी टीम जमीनी स्तर पर कार्यरत है।

किसानों तक सटीक उत्पादों की जानकारी पहुँचाने के लिए यूपीएल क्या कर रही है?

यह एक बड़ी चुनौती है। कई बार किसानों की वास्तविक समस्या कंपनी तक समय पर नहीं पहुँच पाती, और उत्पाद की सही जानकारी भी किसानों तक नहीं जाती। उदाहरण के तौर पर यदि कोई नया उत्पाद लॉन्च होता है तो किसानों को यह जानना जरूरी है कि उसका उपयोग कब, कैसे और कितनी मात्रा में करना है। इस जानकारी को किसानों तक पहुँचाने के लिए हम एक्सटेंशन नेटवर्क, मीडिया, सोशल मीडिया, वीडियो और अन्य माध्यमों का उपयोग करते हैं। इससे किसानों को उत्पाद के सही उपयोग की स्पष्ट जानकारी मिलती है। हमारे फील्ड वर्कर इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और किसानों तक यह जानकारी सीधे लेकर जाते हैं।

यूपीएल के प्रमुख उत्पाद कौन–कौन से हैं?

हमारे लगभग सभी प्रमुख उत्पाद किसान जानते हैं। यूपीएल का उद्देश्य है–"किसानों की जरूरत के अनुसार समाधान उपलब्ध कराना"। धान की फसल में स्टेम बोरर की समस्या के लिए हाल ही में हमने केवुका लॉन्च किया है। इसके अलावा साथी कई वर्षों से किसानों के बीच लोकप्रिय है। कपास की खेती में इरोस, इरोस गोल्ड और उलाला प्रसिद्ध उत्पाद हैं। मक्का के लिए हमने बुसिया, जो एक मेज हर्बीसाइड है, लॉन्च किया है। सोयाबीन किसानों के लिए सेंचुरियन उपलब्ध है, जिसने बेहतर परिणाम दिए हैं। इस तरह, यूपीएल किसानों को फसलों की सुरक्षा और उन्नत उत्पादन के लिए उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध कराता है।

आपकी नजर में टिकाऊ खेती क्या है?

कृषि में टिकाऊ खेती को समझना बहुत आवश्यक है, क्योंकि भोजन के बिना इंसान जीवित नहीं रह सकता। टिकाऊ खेती का अर्थ है–ऐसी खेती जो लंबे समय तक संसाधनों को संरक्षित रखते हुए उत्पादन दे सके। यूपीएल एक जिम्मेदार कंपनी होने के नाते सस्टेनेबल प्लांट प्रोटेक्शन पर विशेष ध्यान दे रही है, ताकि प्राकृतिक फसल सुरक्षा दी जा सके। हमारा उद्देश्य है कि किसानों को संसाधनों का सही उपयोग और भविष्य के लिए संरक्षण की जानकारी दी जाए। इसके लिए यूपीएल द्वारा कई ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं, जिनसे किसानों को व्यवहारिक और तकनीकी ज्ञान मिल रहा है। यूपीएल किसानों को आधुनिक तकनीक, डिजिटल जानकारी और टिकाऊ समाधानों से सशक्त बना रहा है।

फिजा काजमी
पत्रकार, फसल क्रांति
Email: fiza@fasalkranti.in

नींबू की खुशबू से महका पोथरे

बंजर जमीन से समृद्धि और सामाजिक बदलाव की मिसाल

कभी एक समय था जब महाराष्ट्र का छोटा सा गाँव पोथरे निराशा की गिरफ्त में था। बारिश कम होती थी, खेत बंजर पड़े रहते थे और कर्ज का बोझ इतना बढ़ गया था कि बैंक भी ऋण देने से कतराने लगे। हालात इतने कठिन थे कि पड़ोसी गाँव अपनी बेटियाँ पोथरे के लड़कों से ब्याहने से भी हिचकते थे।

48 वर्षीय भाऊसाहेब झिंझाड़े याद करते हैं–

"कुछ साल पहले हमारा गाँव घोर गरीबी में डूबा था। बैंक हमें कर्ज नहीं देते थे और लोग अपनी बेटियाँ यहाँ की शादी के लिए नहीं भेजते थे।" लेकिन इसी निराशा के बीच एक किसान की दूरदर्शिता ने वह बीज बोया, जिसने पोथरे की तकदीर बदल दी।

नींबू क्रांति की शुरुआत

1980 के दशक की शुरुआत में गाँव के एक किसान ने साहसिक कदम उठाया– उन्होंने पोथरे का पहला नींबू का बाग लगाया। नींबू को कम पानी चाहिए और यह शुष्क जमीन पर भी आसानी से फलता है। देखते ही देखते यह प्रयोग गाँव के अन्य किसानों के लिए प्रेरणा बन गया।

पोथरे की काली मिट्टी, जो धान या गन्ने जैसी फसलों के लिए अनुपयुक्त थी, नींबू के लिए वरदान साबित हुई। धीरे–धीरे गाँव के खेत सुनहरे नींबुओं से लहलहाने लगे।

आज 2,500 एकड़ कृषि योग्य जमीन में से लगभग 750 एकड़ पर नींबू की खेती होती है। यह खेती सैकड़ों परिवारों को नियमित आय दे रही है और गाँव की अर्थव्यवस्था पूरी तरह बदल चुकी है।

भाऊसाहेब गर्व से कहते हैं–

"लिंबु आपला तारक आहे... पोथरेची जीवनरेखा (नींबू हमारा रक्षक है, पोथरे की जीवन रेखा)।"

हर सुबह कण उजाला

पोथरे की सुबह सूरज से भी पहले शुरू होती है। सुबह 4 बजे ही किसान खेतों में और व्यापारी सड़कों पर सक्रिय हो जाते हैं। ताजे तोड़े गए नींबू सावधानी से छाँटे जाते हैं और ट्रकों में भरकर जयपुर, पुणे, मुंबई और ठाणे जैसे बड़े बाजारों के लिए निकल जाते हैं।

किस्में और कमाई

यहाँ दो विशेष किस्में उगाई जाती हैं–फुले शरबती और साई शरबती, जिन्हें राहुरी स्थित महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ ने विकसित किया है।

- एक एकड़ में लगभग 110 पेड़ लगाए जाते हैं।
- प्रति सीजन तीन टन उपज होती है।
- किसान एक कटाई में ₹1.5 से 2 लाख तक कमा लेते हैं।
- अच्छे प्रबंधन से कई बार उत्पादन 25 टन प्रति एकड़ तक पहुँच जाता है।

इन नींबुओं का पतला छिलका, सुगंध और खट्टा–मीठा स्वाद इन्हें बाजार में बेहद लोकप्रिय बनाता है।

गाँव की तस्वीर बदली

नींबू की खुशबू सिर्फ खेतों तक सीमित नहीं रही, इसने पूरे गाँव का जीवन बदल दिया।

- अधिकांश घर अब पक्के मकान बन चुके हैं।
- दरवाजों के बाहर दोपहिया और चारपहिया वाहन खड़े रहते हैं।
- बच्चे अब बेहतर शिक्षा पा रहे हैं।
- किसान आस–पास के गाँवों को भी नींबू की खेती पर सलाह देने लगे हैं।

छह पड़ोसी गाँव– कामोने, अरजापुर, रावगाँव, खंबेवाड़ी, धायखिंडी और नीलाज– भी अब पोथरे के नक्शेकदम पर चलते हुए नींबू की खेती अपना चुके हैं।

खेती से सामाजिक बदलाव तक

2022 में ग्राम पंचायत ने एक ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया– विधवाओं के खिलाफ भेदभावपूर्ण प्रथाओं पर प्रतिबंध। यह कदम इस क्षेत्र के लिए मिसाल बन गया और अन्य गाँवों ने भी इसका अनुसरण किया।

गाँव के सरपंच अंकुश शिंदे कहते हैं–

"हमने साबित कर दिया कि असली प्रगति खेतों से लेकर समाज तक दोनों में होती है।"

निष्कर्ष

पोथरे की कहानी केवल कृषि सुधार की नहीं है। यह एक आशा की कहानी है–जहाँ बंजर जमीन से फलते–फूलते बाग बने, गरीबी से समृद्धि आई और सामाजिक रूढ़ियाँ टूट गईं।

यह गाँव आज पूरे महाराष्ट्र और देश के लिए एक संदेश देता है–

अगर एक किसान सपने देखने की हिम्मत करे और पूरा गाँव उसके साथ खड़ा हो जाए, तो बंजर भूमि भी नींबू की तरह मीठी–खट्टी खुशबू से महक सकती है।

सरसों की वैज्ञानिक खेती की तकनीक

देश में सरसों का रबी मौसम में तिलहनी फसल का प्रमुख स्थान है। दिल्ली देहात सरसों की खेती विभिन्न फसल चक्र के साथ की जाती है। सरसों की उत्पादकता को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं, जिन पर किसानों को बुवाई से पूर्व ध्यान देना आवश्यक है। जैसे

1 विश्वसनीय संस्थानों से उन्नत किस्मों का चयन

2 बीज एवं मृदा उपचार

3 संतुलित उर्वरको का प्रयोग

4 पादप रोगो, कीटो एवं खरपततवारों का प्रबंधन ठीक से समय पर करना आदि

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थान, कृषि विश्वविद्यालयों एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों की निम्नलिखित उन्नत तकनिकीयों एवं सलाह को अपनाया जाये तो निश्चित रूप से सरसों की उत्पादकता के साथ साथ कम लागत में वैज्ञानिक खेती कर सकते है।

उन्नत किस्में का चयन– कृषक सरसों की फसल के अधिकत्तम उत्पादन एवं तेल प्रतिशत वाली किस्मों का चयन कर सकते है। जैसे गिरिराज, आर.एच. 1424, आर.एच. 749, आर.एच. 725, पूसा सरसों–25, पूसा सरसों–26, पूसा सरसों 28, पूसा सरसों–30, पूसा सरसों–32, पूसा सरसों 33 आदि किस्मों का चयन कर सकते है।

खेत का चुनाव एवं तैयारी – सरसों की फसल के लिए बलुई दोमट से दोमट मिट्टी वाली भूमि उपयुक्त रहती है। वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद खेत की एक–दो जुताई इस तरह से करें कि भूमि में नमी संरक्षण के साथ–साथ खरपतवार न जमने पायें एवं बुवाई से पहले खेत को दो बार जुताई करके तैयार करें।

बुवाई का समय एवं विधि – सिंचित क्षेत्रों में सरसों की बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा होता है। असिंचित क्षेत्रों में सरसों की बुवाई का उपयुक्त समय सितम्बर का द्वितीय पखवाडा होता है। (विलम्ब से बुवाई करने पर माहू एवं अन्य कीटो एवं बीमारियों की प्रकोप के संभावना रहती है।)

पोषक तत्व प्रबंधन – उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी परीक्षण की संस्तुतियों के आधार पर किया जाना चाहिए। सिचित क्षेत्रो मे नत्रजन 80 किग्रा., फास्फोरस 50–60 किग्रा. एवं पोटाश 30–40 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करने से अच्छी उपज प्राप्त होती है। फास्फोरस का प्रयोग सिंगल सुपर फास्फेट के रूप में अधिक लाभदायक होता है। क्योंकि इससे सल्फर की उपलब्धता भी हो जाती है। यदि सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग न किया जाये तो सल्फर की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए 25–30 किग्रा प्रति हेक्टर की दर से सल्फर का प्रयोग बुवाई के समय करना चाहिए।

यदि डी.ए.पी. का प्रयोग किया जाता है तो इसके साथ बुवाई से पूर्व 300 किग्रा0 जिप्सम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना फसल के लिए लाभदायक होता है तथा अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए 60 कुन्तल प्रति हे. की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए। सिंचित क्षेत्रों में नत्रजन की आधी मात्रा व फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिए। नत्रजन की शेष मात्रा पहली सिंचाई के बाद टापड्रेसिंग से रूप में डाली जानी चाहिए।

बीज एवं मृदा उपचार

बीज को जैव फफूदीनाशी ट्राईकोडर्मा विरिडी (5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज) अथवा कार्बेन्डाजिम (2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज) से उपचारित करके बुवाई करें।

भूमि उपचार एवं रोगो से बचाव के लिए फसल की बुवाई से पहले जैव फफूदीनाशी ट्राइकोडर्मा विरिडी (5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर) को 400 किलोग्राम गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई से पूर्व जुताई के समय खेत में डालें।

बीज की उपलब्धता – कृषक नजदीक कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विश्वविधालयों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों एवं राज्य सरकार के कृषि विभाग से उपरोक्त प्रजातियों के बीज खरीद सकते है।

डॉ. डी.के राना
वरिष्ठ वैज्ञानिक सह–अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली

FULL PAGE
RICE CROPPING SOLUTION
paryan
सादा/लाम्बा
मुक्त धान
FULL PAGE
RICE CROPPING SOLUTION
SQUAD
Hybrid Rice Seed
Vezir
Imazethapyr 10% SL
400 ml
खरपतवारों व सादा/लाम्बा का प्रभावी नियंत्रण
लेबर की समस्या से छुटकारा
पानी की बचत
SMART RICE
धान की सीधी बीजाई के लिए उपयुक्त
FULLPAGE
विशेष अनुसंधान से विकसित नई खरपतवारनाशक सहनशील तकनीक
Powered by
SQUAD
विशेष बीज उपचार दे बेहतर अंकुरण और स्वस्थ फसल
Vezir खरपतवारनाशक
खरपतवारों व जंगली धान का प्रभावी नियंत्रण
Paryan Alliance Pvt Ltd
FOLLOW US:
फुलपेज खेती की अधिक जानकारी के लिए यूट्यूब QR कोड को स्कैन करें

पशुपालन

मिल्किंग मशीनः व्यवसायिक डेयरी का महत्वपूर्ण स्तंभ

दूध दोहन डेयरी व्यवसाय का एक प्रमुख एवं अभिन्न कार्य है। पारम्परिक रूप से गाय अथवा भैंस पालन जब मुख्यतः पारिवारिक दूध की पूर्ति के लिए किया जाता हो और पशु की प्रतिदिन दूध उत्पादकता भी सीमित हो तो ऐसे में हाथों से गाय अथवा भैंस का दूध दोहन किया जाता रहा है। परन्तु उद्यम के रूप में जब कोई डेयरी व्यवसाय अपनाता है तो उसके पास स्वभाविक रूप से दुधारू पशुओं की संख्या अधिक होती है। और अच्छी नस्ल के पशुओं की उचित देखभाल और रखरखाव की जाये तो उनकी प्रतिदिन दूध की उत्पादकता भी अधिक होती है। ऐसे में केवल पारिवारिक श्रम या कुशल श्रमिकों द्वारा हाथों से दूध दोहन पर निर्भर रहना डेयरी फार्म की उत्पादकता व आय को प्रभावित कर सकता है।

हाथ से दूध दोहन वाले व्यक्ति के अवकाश पर जाने अथवा बदलने मात्र से डेयरी फार्म में पशुओं के दूध उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। कुशल दूध दोहन वाले ग्वाले पर अनावश्यक निर्भरता से बचने के लिए डेयरी उद्यमी अब दूध दोहन में मशीनों के उपयोग की तरफ बढ़ रहे हैं।

मिल्किंग मशीन अथवा दूध निकालने की मशीन के चार मुख्यः भाग होते हैं

वैक्यूम पंपः यह वैक्यूम अथवा चूशण दवाब उत्पन्न करता है। गायों में सुरक्षित दोहन के लिए वैक्यूम 360 मि.मि. मरकरी अथवा 45 किलो पास्कल और भैंसो में 400 मि.मि. मरकरी अथवा 50 से 52 किलो पास्कल होना चाहिए।

पल्सेटरः इसका मुख्य कार्य वैक्यूम अथवा चूशण दवाब को थनों पर लगाना और हटाना होता है। यह एक साथ चारों थनों पर अथवा बारी बारी से दो दो थनो पर चूशण दवाब बनाता है।

मिल्किंग ईकाईः इसके अंतर्गत थनो पर लगाये जाने वाले टीट कप और चारो टीट कप को जोड़ने वाला मिल्किंग क्लाव भाामिल है। सभी टीट कप में एक रबर लाइनर होता है जो थनो से सीधे जुड़ा होता है और वैक्यूम व वायुमंडलीय दवाब पड़ने पर सिकुड़ता और सामान्य अवस्था में आता है। यह एक तरह से बछड़े द्वारा थनो से दूध चूसने की प्रक्रिया की नकल करता है और थनो से दूध को प्रवाहित करवाता है।

संग्रहण ईकाईः यह स्टेनलैस स्टील अथवा पलास्टिक की कैन व बर्तन है जिसका मुख्य कार्य मिल्किंग ईकाई से आने वाले दूध का संग्रह करना होता है। मिल्किंग मशीन के चारो भाग आपस में विभिन्न तरह की टयूबो से जुड़े होते हैं। मिल्किंग मशीन में वैक्यूम दवाब का स्तर और पल्सेशन रेट मुख्य रूप से थनों से दूध के प्रवाह को प्रभावित करता है। आधुनिक दूध निकालने की मशीनें सैंसर युक्त होती हैं और जैसे ही थनो से दूध का प्रवाह बंद हो जाता है तो वह तुरंत थनो से टीट कप को हटा देती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ मशीनें दूध की गुणवता और मात्रा का भी आंकलन करने में सक्षम होती हैं।

मिल्किंग मशीन के प्रयोग लघु डेयरी उद्यमियों के लिए उपयुक्त माना जाता है जिनके पास 10 से 20 उच्च उत्पादकता वाले दूधारू पशु हों। इससे अधिक दूधारू पशु होने पर उद्यमी स्वचालित मिल्किंग पार्लर भी अपना रहे हैं। मिल्किंग पार्लर अनेक तरह के होते हैं जैसे टैंडम, हैरिंगबोन और रोटरी इत्यादि। मिल्किंग पार्लर में काम करने वाला

Great Place To Work. Certified
PARIJAT
नए जमाने का MORTEL PLUS
अब ज्यादा POWER के साथ
PARIJAT
MORTEL PLUS
FIPRONIL 0.6% GRANULES
POWERED BY
LDT
सर्वश्रेष्ठ कीट नियंत्रण
मजबूत जड़ें
अधिक पैदावार
ज्यादा मुनाफा
पारिजात
किसान ऐप
डाउनलोड करें
parijatagrochemicals.com
राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर
1800-12300-6141

श्रमिक दूध दोहन के समय गायों के स्तर से लगभग 3 फुट नीचे काम करता है जिससे गायो के थन व ऊहल उसकी नजरों के नजदीक हो जाते हैं और उनकी जांच आसान हो जाती है। इसके साथ ही थनो को धोना, साफ करना, टीट कप लगाना व हटाना भी सुगम हो जाता है।

डेयरी क्षेत्र में विकसित देशों में रोबोटिक मिल्किंग पार्लर भी स्थापित व प्रयोग किये जा रहे हैं। इनमें मानव श्रम की आवश्यकता नहीं के बराबर होती है और केवल सेंसर युक्त रोबोट ही दूधारू गायों का मिल्किंग के लिए चुनाव, प्रारंभिक जांच, थनों पर टीट कप लगाना व हटाना इत्यादि संभालते हैं।

मिल्किंग मशीन के लाभ

दूध दोहन में मशीन के उपयोग से डेयरी फार्म में श्रमिकों की संख्या और श्रम लागत को कम किया जा सकता है। विशेशकर कुशल दूध दोहन वाले श्रमिकों अथवा ग्वालों की निर्भरता कम की जा सकती है।

दूध दोहन में मिल्किंग मशीन के उपयोग से कम समय में अधिक दुधारू पशुओं को दक्षता से दुहा जा सकता है और यह दूध उत्पादन बढ़ाने में सहायक हो सकती है।

मिल्किंग मशीन अपनाने से सामान्यतः डेयरी ईकाई में दूध दोहने वाले ग्वाले के बार बार बदलने पर होने वाले नुक्सान से भी बचा जा सकता है।

मिल्किंग मशीन दोहन की अभयस्त गाय व भैंसो में तनाव में कमी देखी जाती है और इसे उच्च गुणवता वाला स्वच्छ दूध उत्पादित करने में भी सहायक माना जाता है।

मिल्किंग मशीन संबंधी सावधानियां

डेयरी ईकाई में स्वचालित दूध दोहन की मशीनो का उपयोग आरम्भ करते समय कुछ दिनो तक पशुओं में अधिक तनाव और दूध उत्पादन में कमी देखी जा सकती है। आमतौर पर यह अस्थाई होती है और जल्द ही उचित रखरखाव से पशुओं में मशीन से दूध दोहन की आदत पड़ जाती है।

मशीनो द्वारा दूध दोहन के लिए बिजली की निरंतर उपलब्धता आवश्यक है। दूध दोहन के समय बिजली की सप्लाई अवरूध होने की अवस्था में जनरेटर के प्रयोग से बिजली की सप्लाई और दूध दोहन के कार्य को सूचारू ढंग से किया जा सकता है।

दूध दोहन की मशीनों से दूध की गुणवता और पशुओं में विशेशकर थनैला रोग के संक्रमण से बचाने के लिए हर दोहन प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात मशीन की कड़ी सफाई और निर्जीवीकरण भी आवश्यक होता है। मशीनो की उचित सफाई के अभाव में वह दूध की गुणवता व पशु स्वास्थ्य पर नकारत्मक प्रभाव डाल सकती हैं।

इसके अलावा यह भी देखा गया है कि जिन पशुओं को पहले हस्त विधि से दोहन की आदत होती है, उन्हे जब स्वचालित मिल्किंग मशीन से दूहना भुारू करते हैं तो कुछ दिनो तक उनके थनो व ऊहल में कुछ प्रतिशत दूध रह जाता है जिसे रेसिडुअल मिल्क कहते हैं। इस दूध को हाथ से दूह लेना चाहिए अन्यथा दूध की गुणवता विशेशकर वसा की मात्रा में कमी और थनैला रोग की संभावनायें बढ़ जाती हैं।

राकेश ठाकुर एवं रोहित कुमार
पशुधन प्रबंधन विभाग,
चौ.स.कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हि. प्र. 176062

Fasal Kranti
New Vision for Agriculture

AGROXY CROPS SOLUTIONS PVT. LTD.
A-9, West Jyoti Nagar, Durgapuri Chowk Shahdara, Delhi -94
Phone: 011 - 2281 5345, 9625941688
Email: info@fasalkranti.in, Website: www.fasalkranti.in

सदस्यता फॉर्म

नाम.......
पिता का नाम.......
पता.......
जिला / शहर....... राज्य.......
पिनकोड....... मोबाईल....... ईमेल ....

Year	Issue	Price (Rs.)	Discount (Rs.)	Total Amount
☐ 1	12	720	0	720
☐ 2	24	1440	140	1320
☐ 3	36	2160	360	1800
☐ 5	60	3600	600	3000

तिथि
हस्ताक्षर

HURL

"समृद्ध कृषक एवं स्वस्थ मिट्टी"

हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड (HURL)

भारत के कृषि क्षेत्र में एक अग्रणी संस्था है, जो किसानों को सशक्त बनाने और कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए समर्पित है। HURL महारत्न CPSEs - NTPC, CIL, IOCL और अन्य दो कंपनियों FCIL और HFCL के संयुक्त उपक्रम के रूप में स्थापित है। HURL की उत्पादन इकाइयाँ गोरखपुर, बरौनी और सिंदरी में स्थित अपनी अत्याधुनिक उत्पादन सुविधाओं के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले यूरिया का उत्पादन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

HURL का उद्देश्य केवल उत्पादन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में भी अहम भूमिका निभा रहा है। नवीन उत्पादों के माध्यम से हम किसानों को फसल की पैदावार बढ़ाने और मिट्टी की उर्वरता सुधारने में सक्षम बनाते हैं, जिससे हरित और समृद्ध भविष्य की दिशा में मार्ग प्रशस्त होता है।

HURL में हम सहयोग में विश्वास रखते हैं और भारत के कृषि पारिस्थितिकी तंत्र को बदलने के दृष्टिकोण से समर्पित हैं। आइए, हमारे साथ इस यात्रा में जुड़ें और सतत कृषि और सशक्त कृषक समुदायों की दिशा में एक नई यात्रा की शुरुआत करें।

कार्य क्षेत्र एवं उपलब्धता

बिहार, असम, ओडिशा, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, झारखंड, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश

यूरिया में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर

॥ हर एक काम, देश के नाम ॥

हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड

(NTPC, CIL, IOCL, FCIL & HFCL का संयुक्त उपक्रम)

GHARDA
CHEMICALLIMITED

Public Health Products
Portfolio

RAHUL AGENCIES
Seeds,Pesticides,Spray Pump
Pest Control Material Suppliers

41, Shukrawar Peth, Mahatma Phule Market,
Rameshwar Chowk, Pune - 411002
Phone : 020-24451294 Mob. 9822814678
Email : rahulnikam.agency@gmail.com
GSTIN : 27ADIPN9437HIZ3

US Agriseeds
Seed that Works
SeedWorks
Happy Diwali
दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएं
www.seedworks.com
info@seedworks.com

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives
IFFCO KISAN DRONE
International Year of Cooperatives
2025
इफको नैनो उर्वरक अपनाएं
अधिक उपज और गुणवत्ता पाएं
इफको की असरदार जोड़ी
नैनो यूरिया प्लस
नैनो डीएपी
नैनो जिंक
नैनो कॉपर
NANO UREA PLUS
NANO DAP
(8:16:0)
CROP NUTRITION REDEFINED
NANO ZINC
(1.0% Zn w/w)
NANO COPPER
(0.8% Cu w/w)
अधिक जानकारी के लिए टोल फ्री न. 1800-103-1967
www.iffco.in | www.nanourea.in I www.nanodap.in

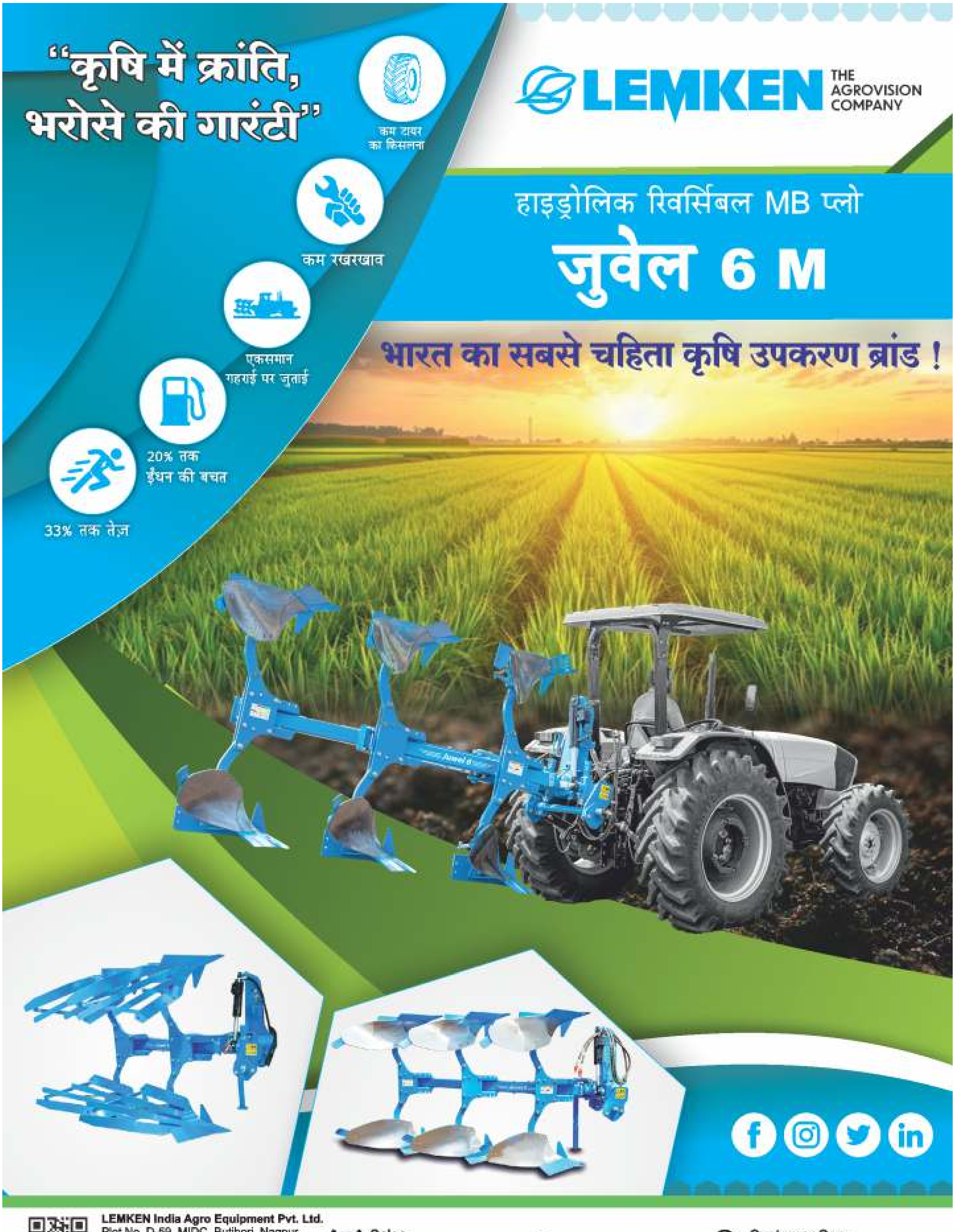

LEMKEN India Agro Equipment Pvt. Ltd.
Plot No. D-59. MIDC, Butibori, Nagpur,
Maharashtra, India. - 441108
Tel: 07104-285400
Web : www.lemken.in

Sales
9545501199
lemkenindia@lemken.com

Technical Support
95450 51218

Customer Care
95456 24422
customercare.india@lemken.com

वर्तमान परिपेक्ष्य में हरित पुस्तकालय की आवश्यकता

भारत में हरित पुस्तकालयों की अवधारणा अभी नवाचार के स्तर पर है, लेकिन धीरे–धीरे यह एक उभरती हुई आवश्यकता बनती जा रही है। हालाँकि विकसित देशों की तुलना में भारत में इस दिशा में प्रयास सीमित हैं, फिर भी कुछ संस्थान और पुस्तकालय पर्यावरण–अनुकूल प्रथाओं को अपनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। यह दुनिया भर के विद्वानों, शिक्षाविदों और पुस्तकालय पेशेवरों के बीच एक बढ़ते दृष्टिकोण के रूप में लोकप्रिय हो रहा है। हरित पुस्तकालय के बारे में जानकारी सीमित है। आज के समय में जब पर्यावरण संरक्षण एक वैश्विक मुद्दा बन चुका है, हरित पुस्तकालय की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक हो गई है। यह न केवल पुस्तकों और ज्ञान के संरक्षण का माध्यम है, बल्कि यह पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी और टिकाऊपन को बढ़ाने में भी सहयोग करता है। हरित पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य है पुस्तकालय की संरचना, संचालन और सेवाओं को पर्यावरण–अनुकूल बनाना। ''हरित पुस्तकालय वह पुस्तकालय होता है जिसे इस तरह डिजाइन, निर्मित और संचालित किया जाता है कि वह ऊर्जा की बचत करे, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करे, और पर्यावरणीय प्रभाव को न्यूनतम बनाए रखने में सहयोग करे''। इसका उद्देश्य पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना होता है।

वर्तमान में भारत के कई विश्वविद्यालय और संस्थान अपने पुस्तकालयों को हरित बनाने की दिशा में छोटे–छोटे लेकिन प्रभावी कदम उठा रहे हैं। जिसमें लाइब्रेरी भवन में सौर ऊर्जा का उपयोग करना, प्राकृतिक रोशनी और प्राकृतिक वायु संचार के उपयोग से ऊर्जा की खपत कम करना, ई–पुस्तकालय (ई–पुस्तकों, ई–जर्नल्स, क्लाउड स्टोरेज और ऑनलाइन डेटाबेस) को बढाना जिससे कागज का प्रयोग कम होता है, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता को प्राथमिकता देना एवं जल संरक्षण और अपशिष्ट प्रबंधन के उपाय अपनाने पर जोर देना आदि शामिल है। निचे कुछ हरित पुस्तकालयों की विशेषताओं का संक्षिप्त में वर्णन किया गया है।

हरित पुस्तकालय की आवश्यकता क्यों

हरित पुस्तकालय एवं पर्यावरण संरक्षण, संसाधनों की बचत और सतत विकास का प्रतीक है। वर्तमान समय में जब पर्यावरणीय संकट जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई, ऊर्जा संकट और जल की कमी जैसी समस्याएँ गंभीर रूप ले चुकी हैं, तब हरित पुस्तकालय की अवधारणा अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक हो जाती है।

1. **पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकताः–** पारंपरिक पुस्तकालयों में ऊर्जा, कागज, जल और अन्य संसाधनों का अत्यधिक उपयोग होता है। जबकि हरित पुस्तकालय इन संसाधनों की खपत को कम

44 FRUITFUL YEARS OF RICH LEGACY
Navbharat
Farmers First!
GCH-4
KOHINOOR
NBCH 22
HYBRID CASTOR
NBCH-22
NAVBHARAT GOLD BG II
NB GOLD
DEPARTMENT OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH, GOVT. OF INDIA
DSIR
RECOGNIZED
RECOGNITION FOR IN-HOUSE R&D
ISO 9001:2015
CERTIFIED
GLORY BG II
GLORY
GAURI
NB-4006
YAYATI
RAJA
NB111
NB-111
EVEREST
Hybrid Chilli ULTIMATE
Hybrid Chilli RANI
Hybrid Chilli PALLAVI
Hybrid Chilli KRATOS
ULTIMATE
RANI
PALLAVI
KRATOS
NAVBHARAT SEEDS
Navbharat SEEDS PVT. LTD.
8-2-293/82/A-714 & 714/1, 3rd Floor, Silver Square,
Opp. Croma Show Room, Road No.36, Jubilee Hills, Hyderabad - 33.

पुस्तकालय का नाम	जगह	देश	विशेषताएँ
ब्राइटन	ब्राइटन	यूएसए	पहली कार्बन–पॉजिटिव लाइब्रेरी
क्रोफुट शाखा, कैलगरी पब्लिक लाइब्रेरी	कैलगरी	कनाडा	इसमें ऊर्जा और दिन के उजाले का संचयन शामिल है, तथा पानी और पुनर्चक्रित सामग्रियों का उपयोग कम होता है।
अन्ना–शताब्दी पुस्तकालय	चेन्नई	भारत	लाइब्रेरी ब्लॉक को ऐसे कोण पर रखें जिससे अधिकतम दिन का प्रकाश मिले और यह पर्यावरण के अनुकूल हो
कर्नाटक विश्वविद्यालय पुस्तकालय	धारवाड़	भारत	पेड़ों के नीचे कोई पुस्तक शेल्फ, कुर्सियां या मेज नहीं लगाई गई हैं, बल्कि बेंच लगाई गई हैं ताकि छात्र बैठकर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से ली गई पुस्तकें पढ़ सकें।
राष्ट्रीय पुस्तकालय	सिंगापुर	सिंगापुर	बच्चों के लिए पहली हरित लाइब्रेरी।
स्त्रोतः– सोरनासुंदरी और सारा (2016)			

करता है और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को न्यूनतम करता है। यह प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, कम कार्बन उत्सर्जन और कम प्रदूषण सुनिश्चित करता है।

2. **ऊर्जा और जल संकट का समाधानः**– हमारे देश में प्राकृतिक ऊर्जा और जल संकट एक बड़ी चुनौती है। हरित पुस्तकालयों में सौर ऊर्जा, और जल संचयन प्रणाली का उपयोग करके इन संसाधनों का बेहतर प्रबंधन किया जा सकता है जिससे पुस्तकालय संचालन की लागत भी कम होती है।
3. **डिजिटल युग में प्रासंगिकता बनाए रखनाः**– तेजी से बढते डिजिटलकरण युग में पुस्तकालयों को भी इसके साथ बदलना आवश्यक है। अतः हरित पुस्तकालय ई–पुस्तकों, ई–जर्नल्स, क्लाउड स्टोरेज और ऑनलाइन डेटाबेस के माध्यम से डिजिटल ज्ञान प्रदान करता है।
4. **टिकाऊ शिक्षा प्रणालीः**– हरित पुस्तकालय शिक्षा के क्षेत्र में पर्यावरणीय चेतना लाने का कार्य करते हैं, जिससे भावी पीढ़ियाँ अधिक जागरूक बनती हैं।
5. **आर्थिक लाभः**– ऊर्जा और संसाधनों की बचत से लंबे समय में आर्थिक लाभ भी प्राप्त होता है।

हरित पुस्तकालय के सामान्य लाभ

हरित पुस्तकालय केवल पर्यावरण–अनुकूल भवन ही नहीं होता, बल्कि यह विभिन्न क्षेत्रों विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में भी सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। कृषि, जो स्वयं प्रकृति पर निर्भर क्षेत्र है, हरित पुस्तकालय के माध्यम से ज्ञान, जागरूकता और संसाधनों तक बेहतर पहुँच प्राप्त कर सकती है।

1. **ज्ञान और सूचना का प्रसारः**– हरित पुस्तकालयों में विभिन्न विषयों की पुस्तके, पत्रिकाओं, शोधपत्रों और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता होती है। विद्यार्थी, किसान, और कृषि वैज्ञानिक नवीनतम तकनीक, जैविक खेती, मौसम आधारित खेती, बीजों की गुणवत्ता एवं अन्य विषयों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
2. **ई–लर्निंग में सहायकः**– डिजिटल संसाधनों की मदद से कोई भी मोबाइल, टैबलेट या कंप्यूटर के माध्यम से ई–लर्निंग कोर्स कर सकते हैं। ड्रिप इरिगेशन, सटीक खेती, मौसम पूर्वानुमान आदि की जानकारी डिजिटल लाइब्रेरी से सुलभ हो सकती है।
3. **जल संरक्षण एवं भूमि प्रबंधन की जानकारीः**– पुस्तकालयों में जल प्रबंधन, जलवायु–स्थिर खेती, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, मल्चिंग आदि विषयों पर सामग्री उपलब्ध होती है।
4. **अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावाः**– विभिन्न विषयों से जुड़े छात्र, शोधकर्ता और वैज्ञानिक हरित पुस्तकालयों में अनुसंधान कर सकते हैं। यह नई–नई तकनीकों और विधियों पर शोध के लिए डाटा बैंक के रूप में काम करता है।
5. **डिजिटल और आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा**– ई–पुस्तकें, ऑनलाइन जर्नल्स, और डिजिटल डेटाबेस की मदद से विद्यार्थियों को आसानी से अद्यतन जानकारी मिलती है।
6. **पर्यावरण संरक्षण में सहायक**– हरित पुस्तकालय से ऊर्जा, जल और कागज जैसे प्राकृतिक संसाधनों की खपत कम होती है। अतः हरित पुस्तकालय वनों की कटाई, प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन को घटाता है साथ ही जलवायु परिवर्तन से लड़ने में सहायता करता है।
7. **जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायता**–कार्बन फुटप्रिंट को कम करके यह ग्लोबल वार्मिंग से निपटने में सहायक हो सकता है।

हरित पुस्तकालय की विशेषताएँ

एक आदर्श हरित पुस्तकालय, पर्यावरण–संवेदनशील सिद्धांतों को अपनाता है। इसका उद्देश्य पर्यावरण की रक्षा करना, ऊर्जा और संसाधनों का संरक्षण करना, तथा समाज को सतत विकास की दिशा में जागरूक करना होता है। एक आदर्श हरित पुस्तकालय की निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए–

1. **स्थान का चुनाव**– किसी भी विद्यालय, संस्थान, विश्वविद्यालय या विभाग की पुस्तकालय उसकी आत्मा होती है। अतः पढ़ने या अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने या प्रोत्साहित करने के लिए

mahindra Rise
mahindra FARM MACHINERY
इस दिवाली
तरक्की की रोशनी, खेतों तक लाइए
महिंद्रा फार्म मशीनरी प्रस्तुत करता है आधुनिक उपकरणों की रेंज
रोटावेटर | सुपर सीडर | थ्रेशर | लेज़र लेवलर | सीड ड्रिल |
स्क्वेयर बेलर और कई उन्नत मशीनें
Mahindra
महिंद्रा फार्म मशीनरी की ओर से आपको और आपके परिवार
को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।
अपने नज़दीकी महिंद्रा फार्म मशीनरी
डीलर से आज ही संपर्क करें।
टोल-फ्री नंबर:
1800 210 0700

उपयुक्त स्थान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। हरित पुस्तकालय का निर्माण करने के लिए एक विशेष स्थान का चुनाव करना चाहिए। हरित पुस्तकालय का निर्माण करते समय स्थान का चयन करना एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है, क्योंकि यही निर्णय भवन की ऊर्जा दक्षता, पर्यावरणीय प्रभाव, और दीर्घकालिक स्थिरता को प्रभावित करता है। एक अच्छे स्थान का चुनाव हरित सिद्धांतों के पालन में सहायक होता है। हरित पुस्तकालय का निर्माण करते समय प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता जैसे प्राकृतिक प्रकाश और वायु संचार (वेंटिलेशन) प्रचुर मात्रा में आता हो तथा सार्वजनिक परिवहन की सुविधा हो, प्रदूषण कम हो, पैदल और साइकिल चलाने वालों के लिए सुरक्षित रास्ते और स्टैंड की व्यवस्था हो साथ ही स्थान ऊँचाई पर स्थित होना चाहिए जिससे जलभराव की समस्या ना हो।

2. **ऊर्जा दक्षता** – एक आदर्श हरित पुस्तकालय में एलईडी लाइट्स, सौर ऊर्जा, प्राकृतिक वेंटिलेशन एवं पवन ऊर्जा जैसे वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग, सेंसर–आधारित लाइट या फैन, और ऊर्जा कुशल उपकरणों का प्रयोग आदि शामील करना चाहिए। भवन का निर्माण इस प्रकार डिजाइन करना चाहिए कि अधिकतम प्राकृतिक प्रकाश और वेंटिलेशन मिल सके।

3. **पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकी का उपयोग**– पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चाहिए जैसे – **जल संरक्षण** के लिए वर्षा जल संचयन और जल पुनर्चक्रण की व्यवस्था एवं कम पानी खर्च करने वाले उपकरण आदि लगे होने चाहिए। **अपशिष्ट प्रबंधन**– ठोस और जैविक कचरे का पृथक्करण, पुनर्चक्रण या पुनर्नवीनीकरण। और कंपोस्टिंग की सुविधा एवं ई–कचरा प्रबंधन के लिए पृथक व्यवस्था होनी चाहिए।

4. **डिजिटल संसाधनों और सीमित कागज का प्रयोग**– ई–पुस्तकें, ऑनलाइन जर्नल्स, डिजिटल लाइब्रेरी पोर्टल का अधिकतम उपयोग, दस्तावेजों और संचार के लिए डिजिटल माध्यमों जैसे ऑनलाइन डेटाबेस और क्लाउड स्टोरेज को प्राथमिकता देना जिससे कागज की खपत में कमी होगी एवं प्रिंटिंग और फोटोकॉपी का सीमित उपयोग करना भी हरित पुस्तकालय की प्रमुख विशेषता है।

5. **हरियाली और जैव विविधता**– पुस्तकालय परिसर में हरियाली को बढ़ावा देना के लिए वृक्षारोपण, हरित छत, और उद्यान आदि स्थापित होने चाहिए।

6. **हरित भवन सामग्री**– पर्यावरण–अनुकूल निर्माण सामग्री का उपयोग जैसे बांस, पुनः चक्रण योग्य, इन्सुलेटिंग खिड़कियों एवं दिवारों का उपयोग। हरित पुस्तकालय ऐसा होना चाहिए कि उसमें ताजा और स्वस्थ हवा का संचारण लगातार होता हो।

7. **पर्यावरण शिक्षा**– जागरूकता कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और संगोष्ठियाँ जो पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दें।

हरित पुस्तकालय स्थापित करने में सामान्य चुनौतियाँ

हरित पुस्तकालय की स्थापना वर्तमान समय में एक आवश्यक कदम है, लेकिन इसके क्रियान्वयन में कई व्यावहारिक, वित्तीय और नीतिगत चुनौतियाँ सामने आती हैं जो निम्नलिखित हो सकती हैः–

1. **वित्तीय बाधाएँ एवं उच्च प्रारंभिक लागत**– हरित पुस्तकालय स्थापित करने में सौर पैनल, ऊर्जा दक्ष उपकरण, हरित निर्माण सामग्री आदि की आवश्यकता होती है जिनकी लागत पारंपरिक विकल्पों की तुलना में अधिक होती है।

2. **जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी**– पुस्तकालय प्रबंधकों और कर्मचारीयों को हरित तकनीकों की पूरी जानकारी नहीं होने के साथ ही जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी के कारण कई परेशानियों को झेलना पडता है। जैसे– पर्यावरणीय डिजाइन, ऊर्जा प्रबंधन या अपशिष्ट निपटान जैसे पहलुओं पर प्रशिक्षण की कमी का होना।

3. **नीतिगत समर्थन का अभाव**–अधिकांश शैक्षणिक नीतियों में ''हरित पुस्तकालय'' को शामिल ही नहीं किया जाता है।

4. **तकनीकी चुनौतियाँ**– हरित निर्माण में इस्तेमाल होने वाली तकनीकें जैसे ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली, स्मार्ट लाइटिंग, और जल पुनर्चक्रण प्रणाली सभी स्थानों पर उपलब्ध नहीं हो पाती है विशेषकर ऐसे विद्यालयों एवं महाविद्यालय जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित होते है। अतः छोटे या ग्रामीण क्षेत्रों में आवश्यक तकनीकी विशेषज्ञता की भारी कमी होती है।

5. **स्थान और इन्फ्रास्ट्रक्चर की सीमाएँ**– पुराने पुस्तकालय भवनों को ''हरित पुस्तकालय'' में बदलना कठिन और महँगा होता है। कई बार पर्याप्त स्थान न होने के कारण सौर पैनल, रेनवॉटर हार्वेस्टिंग जैसी सुविधाएँ लगाना संभव नहीं होता।

6. **सतत रख–रखाव और निगरानी की चुनौती**– हरित सुविधाओं को स्थापित करने के बाद उनके नियमित रख–रखाव और प्रभावी उपयोग के लिए समर्पित संसाधनों और विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है।

7. **उपयोगकर्ताओं की भागीदारी की कमी**– पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं जैसे छात्रों, शोधार्थियों, शिक्षकों में हरित प्रथाओं को लेकर जागरूकता की कमी होती है, जैसे– प्रिंटिंग में कमी, डिजिटल संसाधनों का उपयोग, कचरा पृथक्करण आदि।

निष्कर्ष

हरित पुस्तकाल एक आधुनिक पुस्तकाल है जो पर्यावरण के अनुकूल होती है एवं प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग, अपशिष्ट को कम करना, नवीकरणीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग और अपने संचालन को अधिक लागत प्रभावी और कुशल तरीके से संचालित करने में सहयोग करती है। भारत में हरित पुस्तकालयों की अवधारणा अभी अपने आरंभिक चरण में है, लेकिन डिजिटल प्रगति, पर्यावरणीय चेतना, और नीति–निर्माताओं की सक्रिय भूमिका से यह क्षेत्र तेजी से विकसित हो सकता है। आने वाले वर्षों में, जब प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान अपने पर्यावरणीय दायित्वों को समझेगा, तब हरित पुस्तकालय भारत के ज्ञान संसाधनों का स्थायी और टिकाऊ आधार बन सकता है।

विजय पाराशर, मनीष कुमार, लक्ष्मी नारायण बैरवा, हनुमान प्रसाद परेवा, अशोक चौधरी एवं सौरभ सिंगला
उद्यानिकी महाविद्यालय (श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर), दुर्गापुरा–जयपुर, राजस्थान

मकड़ीयों की करें हवा टाईट,
शुरू से ही जापानी कानेमाइट
mahindra
SUMMIT
KANEMITE
Acequinocyl 15% SC
Acaricide
कानेमाइट
"An innovative technology from Japan"
Net Content : 1 L
मकड़ीयों की सभी अवस्थाओं पर असरदार
लंबी अवधि तक असरदार
मकड़ीयों को तेजी से मार गिराए
बढ़िया गुणवत्ता एवं उपज
मात्रा : 200 मिली प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में छिड़काव करें
follow us!
follow us!
Mahindra Summit Agriscience Limited
अधिक जानकारी के लिए हमसे यहां संपर्क करें,
टोल फ्री नं.: 18002661222
महिंद्रा समिट एग्रीसाइंस लिमिटेड,
लोटस कॉर्पोरेट पार्क, जी-11, राम मंदिर लेन, जय कोच जंक्शन, ऑफ वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, गोरेगांव, मुंबई, 400063, महाराष्ट्र, भारत।
www.mahindraagri.com

अक्टूबर महीने के कृषि कार्य

कृषि कार्यों की द्रस्ती से अक्टूबर माह बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इस महीने में कृषि के कई महत्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं। खरीफ ऋतू में बोई गई विभिन्न फसलों की कटाई प्रारंभ हो जाती है तथा रबी ऋतु की विभिन्न फसलों विशेष रूप से तिलहन फसलों में सरसों, तोरिया दलहन फसलों में चना तथा शरद कालीन गन्ना, बरसीम, विभिन्न सब्जियों वाली फसलों की बुवाई प्रारंभ हो जाती है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में अच्छी फसल प्राप्त करने एवं संरक्षित की गई नमी का सही उपयोग करने हेतु अक्टूबर माह में अगेती बुवाई करना आवश्यक है यहां अक्टूबर माह में की जाने वाली विभिन्न कृषि क्रियाओं कीजानकारी दी गई है:

खरीफ फसलों की कटाई एवं मड़ाई

- खरीफ ऋतु में बोई गई विभिन्न फसलों जैसे धान, मक्का, जवार, बाजरा , मूंग, उर्द, अरहर, सोयाबीन, मूंगफली, इत्यादि को पकने के बाद उचित अवस्था पर कटाई कर लेनी चाहिए। काटे में देरी होने से फसल उपज में हानि होने की आशंका रहती है।
- कटाई के बाद जब दानों में 12–15 प्रतिशत नमी रह जाए तो मंड़ाई कर लेनी चाहिए तथा फसल उपज को अच्छी प्रकार सुखाकर दानों में 8–10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारित कर लेना चाहिए। भंडारण करते समाये सभी प्रकार की सावधानियां रखनी चाहिए जिससे कि भंडारित किये गए अनाज को किसी प्रकार की हानि न हो।
- बीज हेतु प्रयोग किये जाने वाले फसल उत्पाद का विशेष ध्यान रखना जरुरी है उसमे अधिक नमी नहीं होनी चाहिए तथा स्वस्थ एवं साफ फसल उपज ग्रेडिंग एवं यूचित कीटनाशी एवं कवक नाशी से उपचारित करके भण्डारण की सभी सावधानियों का ध्यान रखते हुवे भंडारित करना चाहिए।
- बीज के सुरक्षित भण्डारण हेतु नीम या अरंडी का तेल की 4 से 10 मिलीलीटर मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर या विटावेक्स की 3–5 ग्राम मात्रा प्रति ग्राम या कार्बेन्डाजिम तथा मंकोजेब के मिश्रण की 2 से 4 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित किया जा सकता है।

रबी दलहन फसलों की बुवाई

- रबी ऋतु में बोई जाने वाली फसलों में चना, मटर एवं मसूर प्रमुख दलहनी फसलें हैं। बारानी क्षेत्रों में उग्गाई जाने वाली फसलों में चना मुख्य फसल है। चना, मटर और मसूर की बुवाई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े से नवंबर के प्रथम पखवाड़े के मध्य तक समाप्त कर लेनी चाहिए।
- सभी फसलों की उन्नतशील किस्मों का चुनाव करके बीज को राइजोबियम एवं पी.एस.बी. से अवश्य उपचारित करें।
- मटर की उन्नत किस्मों में पंत मटर 5, अपर्णा, के पी एफ. 103, पंत मटर 74, पंत मटर 42, एच एफ पी 9426, डी एम आर 7, उत्तरा, स्वाती, डी डी आर 27, के पी एम आर 522, एच एफ पी 9907 बी, आई पी एफ 5–19, मालवीय मटर 2, मालवीय मटर 15, डी डी आर 23, वी एल 42, टी आर सी पी 8, दांतिवाड़ा फील्डपी 1आदि प्रमुख किस्में हैं जो बुवाई के लिए प्रयोग की जा सकती है।
- चने की देशी किस्मों में पूसा 256, पूसा 372, पूसा 362, पूसा 1103, पूसा 547, आधार, गंगौर, राजस, पूसा 256, पूसा 372, गुजरात चना 4, उदय आदि प्रमुख हैं। काबुली चने की पूसा 1088, पूसा 1105, पूसा 1053, पूसा 1108, पूसा 2024, गौरी, पूसा 1003, एच के 2, के डब्लू आर 108, पंत कसूली चना 1(काबुली) प्रमुख किस्में है।
- मसूर की आई पी एल 404, पंत मसूर 24, पूसा वैभव, पूसा शिवालिक, पूसा अगेती, डी पी एल 62, डी पी एल 15, पंत मसूर 4, लैंस 4076, डब्लू बी एल 77, पंत मसूर 406, पंत मसूर 639, पंत मसूर 24, पूसा वैभव, जे एल 13, आई पी एल 81 (नूरी), पूसा शिवालिक, जवाहर मसूर 3 आदि किस्मों की बुवाई की जा सकती है।
- चने के छोटे एवं मध्यम आकार के दाने वाली किस्मों के लिए 60–80 कि.ग्रा. तथा बड़े दाने वाली किस्मों के लिए 80–100 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई 30–35 सें.मी. दूर कतारों में करनी चाहिए।
- मटर और मसूर के लिए क्रमशः 80–120 एवं 30–40 कि.ग्रा. प्रति है. बीज की आवश्यकता होती है। मटर की फसल के लिए कतार से कतार की दूरी 30 सें.मी. एवं मसूर के लिए 25 सें.मी. पर्याप्त होती है।
- सभी दलहन फसलों में लगभग नाइट्रोजन 15–20 कि.ग्रा./हे., 60 कि.ग्रा./हे. फास्फोरस एवं 40 कि.ग्रा./हे. पोटाश की आवश्यकता होती है।

रबी ऋतु में तिलहन फसलों की बुवाई

- तोरिया, राई एवं सरसों, अलसी और कुसुम आदि प्रमुख तिलहन फसलें हैं जिनकी बुआई अक्टूबर माह में की जा सकती है। तोरिया, तारामीरा, राई व सरसों की बुवाई अक्टूबर के तीसरे सप्ताह तक अवश्य समाप्त कर लेनी चाहिए।
- तोरिया, राई व सरसों के लिए सिंचित दशा में उर्वरकों की मात्रा नाइट्रोजन 60–80 कि.ग्रा., फास्फोरस 40–50 कि.ग्रा., पोटाश 30–40 कि.ग्रा. एवं 20–30 कि.ग्रा. गंधक (सल्फर) प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता होती है। बारानी (शुष्क) या असिंचित क्षेत्रों के लिए 30–40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 20–25 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 15–20 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता पड़ती है।
- कम फैलने वाली किस्मों की बुवाई 30 सें.मी. और अधिक फैलने वाली किस्मों की बुवाई 45–50 सें.मी. दूरी पर बनी पंक्तियों में करें।
- सरसों की प्रमुख उन्नतशील किस्में जैसे पूसा सरसों (पीऍम) 25, 26, 28, 30, 31, पूसा विजय, आर एच 30, 749, 406, 1424,1706, पूसा बोल्ड, जी एस सी 6, टाइप 59 इत्यादि किस्में बुवाई के लिए प्रयोग की जा सकती है।
- तोरिया की तपेश्वरी, टी एल 15, 17 तथा पी बी टी 37, वी एल तोरिया–3, पी टी 2002–25, जवाहर तोरिया इत्यादि किस्मों की बुवाई की जा सकती है ।
- तारामीरा की वल्लभ तारामीरा –1, आर टी एम् 1344, 314 इत्यादि किस्मों की बुवाई की जा सकती है।

अब बनो अपनी
गेहूँ की फ़सल के लिये
सुपरहीरो
भारत में पहली बार
Mateno MORE
Triple Action Innovation
अनेक प्रकार के खरपतवार पर असरदार सुरक्षा
मंडूसी जैसे ज़िद्दी खरपतवारों की अत्याधुनिक कई-स्तर की रोकथाम
लंबे समय तक असरदार अवशेष कार्यकुशलता
सिर्फ एक इस्तेमाल में दमदार असर
BAYER
मटेनो मोर
ज्यादा सुरक्षा, ज्यादा शक्ति,
मंडूसी से मुक्ती
फार्मराइज़
अभी डाउनलोड करें
स्कैन करेंगे तो फायदे में रहेंगे।
हैलो बायर
1800-120-4049

- अलसी की प्रमुख उन्नतशील किस्में जैसे हीरा, जवाहर 1, जवाहर 7, जवाहर 17, जवाहर 23, जवाहर 552, गरिमा, श्वेता, शुभ्रा, सुरभि, पूसा 2, पूसा 3, लक्ष्मी 27 एवं शीतल, आदि को बुवाई के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
- फसल में उर्वरक की मात्रा सिंचित दशा में 90–100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 किग्रा० फास्फोरस एवं 40 किग्रा० पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। असिंचित दशा में उर्वरकों (40–60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन एवं 20–40 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हैक्टेयर) की सम्पूर्ण मात्रा को बुवाई के समय खेत में प्रयोग करें।

चारा फसलों की बुवाई

- रबी मौसम मे चारा वाली फसलों का बड़ा ही महत्व है, रबी ऋतु मे ली जाने वाली चारा फसलों में बरसीम, रिजका (लुसर्न) और जई आदि शामिल हैं। इन फसलों की बुवाई का समय अक्तूबर–नवम्बर माह होता है।
- जई फसल की उन्नतशील किस्में जैसे– बुंदेल जई 2001–3, बुंदेल जई 991, हरिता, बुंदेल जई 2004, बुंदेल जई 992, जे एच ओ 822, जे एच ओ 851, यू पी ओ 222 आदि प्रमुख है। जई की बीज दर 80–100 कि.ग्रा./हे तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20–25 सें.मी रखनी चाहिए। जई के लिए 90–100 नाइट्रोजन, 40–50 फास्फोरस तथा 20–30 कि.ग्रा./हे .पोटाश की आवश्यकता होती है। इसके चारे की उपज 500–600 कु. प्रति हे. तक उपज प्राप्त हो जाती है।
- रिजका (लुसर्न) की उन्नतशील किस्में जैसे एन डी आर आई सलेक्शन 1, रिजका आनंद 2, आनंद 3, एल एल सी 3, एल एल सी 5, आर एल 88 आदि किस्में बुवाई के लिए उपयुक्त है। बीज दर 12–15 कि.ग्रा./हे. तथा बुआई लाइन से लाइन की दूरी 25–30 सें. मी. रखनी चाहिए। रिजका के लिए 20–25 नाइट्रोजन, 60–75 फास्फोरस तथा 30–40 किग्रा० प्रति हे० पोटाश की मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। रिजका की उपज 800–1000 कुं० प्रति हे. प्राप्त हो जाती है।

रबी ऋतु में मक्का की बुवाई

- बुआई हेतु पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सें.मी. तथा पौधों की दूरी 18–20 सें.मी. रखी जाती है। इसके अलावा अतिरिक्त आय हेतु अन्तः फसल (इंटरक्रापिंग) अपनाकर कम समय में तैयार होने वाली फसलों मे दालें व सब्जियाँ जैसे मटर (सब्जी), राजमा, बाकला, टमाटर, गाजर, चुकन्दर, तथा प्याज, आदि को मक्का की कतारों के बीच बुआई कर के अतिरिक्त मुनाफा कमाया जा सकता है।
- शीतकालीन संकर मक्का की उन्नतशील किस्में जैसे– गंगा–11, डेक्कन–103, डेक्कन–105, त्रिशूलता और शक्तिमान–1, आदि तथा संकुल मक्का की किस्मों में धवल, शरदमनी व शक्ति–1 आदि प्रमुख हैं।
- संकर मक्का के लिए 150 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 75 कि.ग्रा. फास्फोरस, 60 कि.ग्रा. पोटाश एवं 40 कि. ग्रा. गंधक (सल्फर) प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता होती है। जबकिसंकुल मक्का के लिए 120 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस, 40 कि.ग्रा. पोटाश एवं 30 कि.ग्रा. गंधक की मात्रा प्रति हैक्टेयर पर्याप्त होती है।

शरदकालीन गन्ने की बुवाई

- अक्तूबर माह शरदकालीन गन्ने की बुवाई के लिए अनुकूल माना जाता है। इसकी बुवाई सम्पूर्ण माह में अच्छी रहती है, परंतु पंद्रह नवंबर तक बुवाई अवश्य कर लेनी चाहिए। बुवाई के लिए विभिन्न उन्नतशील किस्मों जैसे को.शा. 8436, 88230, 96268, को.से. 95436, 98231, 00231 व को.से. 01235। सामान्य प्रजातियों में को. शा. 8432, को.शा. 96275, को.शा. 97261, यू.पी. 0097, को.शा. 97264 आदि को बुवाई के लिए प्रयोग किया जा सकता हैं।
- बुआई यदि पंक्ति विधि से की जा रही है। तो पंक्ति से पंक्ति की दूरी 90 सेमी एवं कूड़ों की गहराई 10 सेमी रखनी चाहिए।
- गन्ने की दो पंक्तियों के मध्य में आलू की (एक पंक्ति) मटर की (दो पंक्ति), लाही की (दो पंक्ति), सौंफ, धनिया, मसूर, आदि को बो कर कम लागत मे अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है।
- गन्ना बुवाई के समय उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करना आवश्यक है। गन्ने की फसल के लिए नाइट्रोजन 300, फास्फोरस 100 तथा पोटाश की 200 किग्रा मात्रा प्रति ह. की आवश्यकता होती है। इसके साथ–साथ जिंक सल्फेट की 35–38 किग्रा मात्रा प्रति हे. उपयोग की जाती है।

सब्जियाँ

- इस माह के शुरू से अंत तक आलू की मुख्य फसल बोई जा सकती है। बीजदर 30–35 कुंतल प्रति हे. तथा उन्नत किस्मों का चुनाव करके बुआई की जानी चाहिए। आलू की उन्नत किस्में जैसे कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी अलंकार, कुफरी चंद्रमुखी आदि की कतारों से कतारों तथा पौध से पौध से दूरी 45 से.मी. 20 से.मी. या 60 से.मी. 15 से.मी.पर बुवाई करनी चाहिए।
- लहसुन की उन्नतशील किस्में जैसे जी–1, जी–41, जी–50, जी–282, लोहित आदि की बुवाई 5–6 क्विंटल/हे० बीज दर प्रति हेक्टेयर रखते हुवे की अक्टूबर माह में की जा सकती है
- शीतकालीन मे ली जाने वाली सब्जियाँ– ब्रोकली, फूलगोभी, बन्दगोभी तथा टमाटर की तैयार पौध को इस माह मे रोपा जा सकता है।

उद्यान (बागवानी)

- नींबू के पौधों की आवश्यकता से अधिक बढ़ी हुई और रोग–ग्रस्त शाखाओं की कटाई–छंटाई कर देनी चाहिए।
- किसान भाई गुलाब के पौधों की कटाई–छटाई करें। कटाई के बाद बाविस्टीन का लेप आसमान साफ होने पर लगाएं ताकि कवको का आक्रमण न हों।
- गुलदाउदी पर समय से पहले आई पुष्प–कलिकाओं को तोड़ देना चाहिए ताकि बाद में आने वाले पुष्प बड़े आकार के बन सकें। डहलिया को गमलों अथवा क्यारियों में लगाने का यह उपयुक्त समय है। गेंदे की तैयार पौध की मेड़ों पर रोपाई करें।
- ग्लेडिओलस की बुवाई भी इस समय कर सकते हैं। उन्नतशील किस्में– पूसा मनमोहक, पूसा विदुषी, पूसा शुभम, पूसा किरन, तथा पूसा उन्नती आदि किस्मों की बुवाई की जा सकती है। ग्लेडियोलस के लिए बीज दर लगभग 1.4–1.5 लाख कन्द प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता पड़ती है।

राज सिंह – मंजेश कुमार गौतम
सस्य विज्ञान संभाग
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली110012

ADVANTA
ADV 12
तोड़ो मुनाफे का मटर
उत्तम क्वालिटी
के दाने व फली
गर्मी के प्रति
सहनशील
अधिक मीठा
ADVANTA
Green Peas
ADV 12 | एडीवी 12

रसोई

दिवाली स्पेशल– नारियल लड्डू

दिवाली का त्योहार मिठाइयों के बिना अधूरा लगता है। इस दिन घर–घर में तरह–तरह की मिठाइयाँ और पकवान बनाए जाते हैं। अगर आप कुछ आसान, स्वादिष्ट और झटपट बनने वाली मिठाई बनाना चाहते हैं, तो नारियल लड्डू सबसे अच्छा विकल्प है। यह न सिर्फ स्वाद में बेहतरीन है बल्कि पोषण से भरपूर भी है। बच्चे हों या बड़े, सभी को यह लड्डू बहुत पसंद आते हैं। आइए जानते हैं इसे बनाने की विधि।

सामग्री (4–5 लोगों के लिए)

- नारियल का बुरादा (ड्राई कोकोनट पाउडर)– 2 कप
- गाढ़ा दूध (कंडेंस्ड मिल्क)– 1 कप
- घी– 2 चम्मच
- इलायची पाउडर– ½ चम्मच
- काजू, बादाम या पिस्ता– 2–3 चम्मच (बारीक कटे हुए)
- सजावट के लिए– थोड़ा सा नारियल बुरादा अलग रख लें

विधि

सबसे पहले एक कड़ाही या नॉन–स्टिक पैन गर्म करें और उसमें 2 चम्मच घी डालें। अब इसमें नारियल का बुरादा डालकर हल्की आंच पर 2–3 मिनट तक भून लें। ध्यान रखें कि नारियल का रंग न बदले, बस हल्की खुशबू आने लगे। अब इसमें कंडेंस्ड मिल्क डालें और अच्छे से मिलाते रहें। धीरे–धीरे यह मिश्रण गाढ़ा होने लगेगा। मिश्रण में इलायची पाउडर और कटे हुए मेवे डाल दें। लगातार चलाते रहें ताकि यह तले में चिपके नहीं। जब मिश्रण कड़ाही छोड़ने लगे और एक जगह इकट्ठा होने लगे, तो गैस बंद कर दें। अब इसे हल्का ठंडा होने दें, लेकिन पूरी तरह ठंडा न करें वरना लड्डू बनाना मुश्किल होगा। हाथ में थोड़ा सा घी लगाएँ और मिश्रण से छोटे–छोटे गोले बनाकर लड्डू तैयार करें। चाहें तो इन लड्डुओं को नारियल के बुरादे में रोल कर लें। इससे इनकी सुंदरता और स्वाद दोनों बढ़ जाते हैं।

खास टिप्स

- अगर आप इसे और हेल्दी बनाना चाहते हैं तो सफेद चीनी के बजाय गुड़ का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।
- बच्चों के लिए आप इसमें चॉकलेट पाउडर मिलाकर चॉकलेट नारियल लड्डू बना सकते हैं।
- एयरटाइट डिब्बे में रखकर ये लड्डू 5–6 दिन तक ताजा रहते हैं।

दिवाली मिठास और खुशियों का पर्व है। ऐसे में नारियल लड्डू बनाना न सिर्फ आसान है बल्कि त्योहार को और खास बना देता है। इस दिवाली परिवार और दोस्तों को घर के बने स्वादिष्ट नारियल लड्डू खिलाइए और साथ में सेहत व खुशियों का आनंद लीजिए।

Amul
Organic
Fertilizer

शुभ दिवाली

हर फसल के लिए विशेष रूप से तैयार
अमूल ऑर्गेनिक फर्टिलाइज़र

(ह्यूमिक एसिड, माइकोराइजा, सूक्ष्म शैवाल और अमीनो एसिड से भरपूर)

अमूल डेरी, आणंद द्वारा निर्मित

श्री भानु त्यागी - 99833 01808, श्री अभिषेक तिवारी - 88277 63501

सेहतमंद जीवन के आसान टिप्स

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अक्सर अपनी सेहत को नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन यह सच है कि अगर स्वास्थ्य अच्छा हो, तो जीवन की हर चुनौती आसान लगती है। अच्छी सेहत सिर्फ महंगे सप्लीमेंट्स, जिम या दवाइयों से नहीं आती, बल्कि रोजाना की छोटी–छोटी आदतों से मिलती है। आइए जानते हैं कुछ आसान और व्यवहारिक हेल्थ टिप्स, जिन्हें अपनाकर आप लंबे समय तक स्वस्थ रह सकते हैं।

1. दिन की शुरुआत पानी से करें

सुबह उठते ही एक से दो गिलास गुनगुना पानी पीने की आदत डालें। यह शरीर से विषैले तत्व बाहर निकालने, पाचन सुधारने और त्वचा को चमकदार बनाने में मदद करता है। चाहें तो इसमें नींबू की कुछ बूंदें डाल सकते हैं।

2. संतुलित आहार लें

हम अक्सर पेट भरने के लिए खाते हैं, लेकिन शरीर को पोषण देने वाला भोजन ही असली आहार है। थाली में दाल, हरी सब्जियां, अनाज, फल और दूध जैसे पदार्थ जरूर शामिल करें। जंक फूड, अधिक तली–भुनी और मीठी चीजों से दूरी बनाएँ।

3. नाश्ता कभी न छोड़ें

सुबह का नाश्ता पूरे दिन के लिए ऊर्जा का स्रोत होता है। हल्का और पौष्टिक नाश्ता जैसे दृ अंकुरित दाने, ओट्स, उपमा, पोहा या पराठे के साथ दही लेना शरीर को सक्रिय और दिमाग को चौकस रखता है।

4. नियमित व्यायाम जरूरी

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए रोजाना कम से कम 30 मिनट व्यायाम करें। यह पैदल चलना, योग, प्राणायाम या साधारण स्ट्रेचिंग कुछ भी हो सकता है। नियमित कसरत से न केवल वजन नियंत्रित रहता है बल्कि दिल, हड्डियाँ और मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं।

5. पर्याप्त नींद लें

आजकल मोबाइल और टीवी की वजह से लोग देर रात तक जागते हैं। नींद पूरी न होना मोटापा, तनाव, डिप्रेशन और दिल की बीमारियों का कारण बन सकती है। हर दिन 7–8 घंटे गहरी नींद लेने की आदत डालें।

6. तनाव कम करें

मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही जरूरी है जितना शारीरिक। रोज कुछ समय अपने लिए निकालें। ध्यान, गहरी साँस लेना, मनपसंद संगीत सुनना या प्रकृति में टहलना तनाव कम करने के सरल उपाय हैं।

7. पानी और तरल पदार्थ पिएँ

गर्मियों में ही नहीं, हर मौसम में शरीर को पानी की जरूरत होती है। दिन भर में कम से कम 8–10 गिलास पानी पिएँ। साथ ही नारियल पानी, छाछ, सूप आदि का सेवन करें। यह शरीर को ठंडा और हाइड्रेटेड रखते हैं।

8. धूम्रपान और शराब से बचें

ये दोनों ही आदतें शरीर को धीरे–धीरे अंदर से खोखला कर देती हैं। कैंसर, लिवर रोग और दिल की बीमारियों का बड़ा कारण यही हैं। इन्हें त्यागकर आप लंबी और स्वस्थ जिंदगी पा सकते हैं।

9. समय पर स्वास्थ्य जाँच कराएँ

अक्सर लोग सोचते हैं कि डॉक्टर तभी दिखाना चाहिए जब कोई बड़ी समस्या हो। जबकि समय–समय पर स्वास्थ्य परीक्षण करवाना आवश्यक है। ब्लड प्रेशर, शुगर, कोलेस्ट्रॉल जैसे टेस्ट करवाते रहने से बीमारियों को समय रहते रोका जा सकता है।

MASSEY FERGUSON
खेत में मैसी
दिल में टैफे
TAFE
65 YEARS
MF 7250 DI
46HP रेंज (33.82 kW)
MF 7250 करे
भारी से भारी धुलाई
झट से, आराम से
हेवी रियर बुल एक्सल
दे अधिकतम स्पीड।
कम रखरखाव। सर्वोत्तम माइलेज
Bull Gear System
बुल गियर रिडक्शन
हेवी बम्पर
ड्यूअल क्लच
14.9" x 28" टायर्स (37.85cm x 71.12cm)
2+2 YEARS WARRANTY
मैसी हॉलेज धमाका
ख़ास ऑफर के लिए निकटतम डीलर से सम्पर्क करें
सर्विस आप के द्वार
* नियम एवं शर्तें लागू।
Product of Superior Technology from TAFE
masseyfergusonindia.com
टोल फ्री: 1800 4 200 200

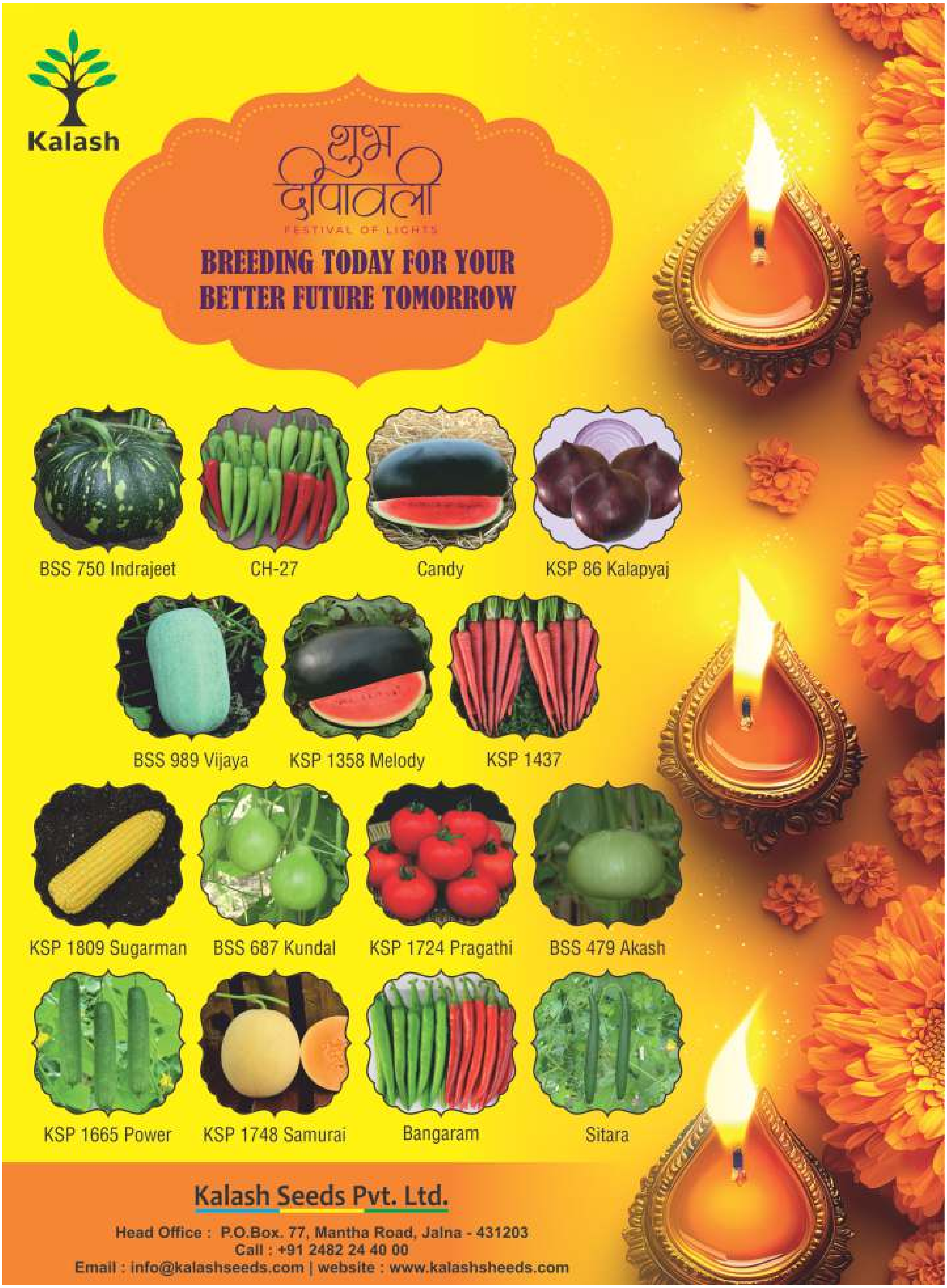
Kalash
शुभ दीपावली
FESTIVAL OF LIGHTS
BREEDING TODAY FOR YOUR BETTER FUTURE TOMORROW
BSS 750 Indrajeet
CH-27
Candy
KSP 86 Kalapyaj
BSS 989 Vijaya
KSP 1358 Melody
KSP 1437
KSP 1809 Sugarman
BSS 687 Kundal
KSP 1724 Pragathi
BSS 479 Akash
KSP 1665 Power
KSP 1748 Samurai
Bangaram
Sitara
Kalash Seeds Pvt. Ltd.
Head Office : P.O.Box. 77, Mantha Road, Jalna - 431203
Call : +91 2482 24 40 00
Email : info@kalashseeds.com | website : www.kalashsheeds.com

मॉडल्स	विशेष ऑन–रोड कीमत	EMI शुरू @
Grand i10 NIOS	₹5.99* लाख	₹6 499#
EXTER	₹6.29* लाख	₹6 999#
i20	₹7.29* लाख	₹7 999#

Scan to chat with us or give a missed call at 9555295868

HYUNDAI

CSD और KPKB ग्राहकों के लिए अतिरिक्त फायदे## | अतिरिक्त स्क्रैपेज बोनस डिपॉजिट के वैध सार्टिफिकेट के बदले उपलब्ध है~~ |

LUCKNOW: SAS HYUNDAI: STATION ROAD: CALL: 9919800464. **KANPUR ROAD:** CALL: 9919800458. **TELIBAGH:** CALL: 7408221166. **ARJUNGANJ:** CALL: 9919800463. **BEEAAR HYUNDAI: MAHANAGAR:** CALL: 9724777048. **SHAHNAJAF ROAD:** CALL: 9724777048. **GOMTI NAGAR:** CITY MALL, VIPUL KHAND 4. CALL: 9724777048. **JSV HYUNDAI: GOMTINAGAR:** GOMTI NAGAR, CHINHAT TIRAHA. CALL: 7897703434, 9044038102. **RING ROAD:** RING ROAD, ENGINEERING COLLEGE CHAURAHA. CALL: 7705802681, 7897771166. **PR HYUNDAI: CHOWK:** CALL: 8112377777, 8112580000. **BAKSHI KA TALAB:** REWATHY SQUARE, SITAPUR ROAD, LUCKNOW. CALL: 7052000148, 7052000155. **BARABANKI: JSV HYUNDAI:** NEAR ALAPUR MAZAR. CALL: 7897700018, 7897770055. **SITAPUR: BEEAAR HYUNDAI:** JAMAYATPUR. CALL: 9724777048. **BALRAMPUR: BEEAAR HYUNDAI:** BISHNIPUR. CALL: 9724777048. **JAGDISHPUR: SAS HYUNDAI:** CALL: 9580508194. **SALON: SAS HYUNDAI:** CALL: 6389500088. **RAEBARELI: SAS HYUNDAI:** DIDAULI RAEBARELI - LUCKNOW, HIGHWAY. CALL: 6389500086. **SULTANPUR: SAS HYUNDAI:** GAURA BARIK, JAIL ROAD. CALL: 9919800561. **AYODHYA: GEETA HYUNDAI:** LUCKNOW ROAD. CALL: 9918300842. **GONDA: GEETA HYUNDAI:** NEAR BHELLAI MATA MANDIR MORE BAHRAICH ROAD, JANKINAGAR, GONDA. CALL: 9918300387. **AMBEDKAR NAGAR: GEETA HYUNDAI:** BARWA BAIRAMPUR, AKBARPUR, AMBEDKAR NAGAR. CALL: 9918300832. **LAKHIMPUR: AKC HYUNDAI:** BHARICH ROAD. CALL: 7565900193, 9235258558. **HARDOI: BALAJEE HYUNDAI:** NANAKGANJ, LUCKNOW ROAD. CALL: 8601872072, 8601872054. **BAHRAICH: BALAJEE HYUNDAI:** TENDWA BASANTPUR, LUCKNOW ROAD, BAHRAICH. CALL: 8601872057, 7525024685. **KANPUR: KHANNA HYUNDAI:** SWAROOP NAGAR. CALL: 9918801075, 9918801002. KESHAV PURAM, KALYANPUR. CALL: 8400450375, 8948222283. **TIRUPATI HYUNDAI:** G.T. ROAD. CALL: 9935532304, 7905625951. NIRALA NAGAR, CALL: 9935532307. **SWAMI HYUNDAI:** ARZI NO. 97, MAUJA ROOMA, KANPUR NAGAR. CALL: 7080210545, 7518902691. **UNNAO: KHANNA HYUNDAI:**PRIYADARSHANI NAGAR. CALL: 9918801004, 9918801014. **FATEHPUR: KHANNA HYUNDAI:** CIVIL LINES. CALL: 8948222274, 9918801014. **AKBARPUR: KHANNA HYUNDAI:** CALL: 9918801033, 9918801014. **FARRUKHABAD: TIRUPATI HYUNDAI:** THANDI SADAK. CALL: 9793002291, 7607202121. **KANNAUJ: TIRUPATI HYUNDAI:** G.T. ROAD, MAKRAND NAGAR. CALL: 7607770848, 7607770847. **ETAWAH: RAJENDRA HYUNDAI:** TAKIYA AZAD GAAN. CALL: 8650501205, 7617587022. **AURAIYA: RAJENDRA HYUNDAI:** KAKHAUTU BAMBA, DIBIYAPUR ROAD. CALL: 8650501210, 8392927007. **MAINPURI: RAJENDRA HYUNDAI:** BHOGAON ROAD NEAR AKANKSHA GLOBAL ACADEMY MAINPURI. CALL: 8650501207, 8650501219. **HARDOI: BALAJEE HYUNDAI:** NANAKGANJ, LUCKNOW ROAD. CALL: 8601872072, 8601872054. **SHAHABAD: BALAJEE HYUNDAI:** NEAR LIC OFFICE, SHAHAJANPUR ROAD, SHAHABAD HARDOI. CALL: 8601872080, 8601872054. **VARANASI: RL HYUNDAI:** S-2/656-B, SIKRAUL SHIVPUR OPP. CIRCUIT HOUSE. CALL: 9219811461, 07314599892. **ADITYA NARAIN HYUNDAI:** NAGWA, NEAR BHU TRAUMA CENTER, CALL: 7052834000, 7571800309. **KRISHNA HYUNDAI:** LAHARTARA. CALL: 7375939001. **CHANDAULI: ADITYA NARAIN HYUNDAI:** CALL: 7571800322. **SONEBHADRA: SONEBHADRA HYUNDAI:** RENUKOOT. CALL: 9792201404. **ROBERTSGANJ: SONEBHADRA HYUNDAI:** OPP. NAVEEN MANDI SAMITI. CALL: 9792201411, 9792201412. **MIRZAPUR: KSHITIJ HYUNDAI:** NATWA, JANGI ROAD, NEAR NATWA CHOWKI. CALL: 9289937570. **JAUNPUR: VENKATESH HYUNDAI:** VISHESWARPUR. CALL: 7607003775, 7607003777. **BHADOHI: VENKATESH HYUNDAI:** RAJPURA CHAURAHA, SANT RAVIDAAS NAGAR, LANDMARK NEAR THIKANA DHABA. CALL: 7752802168. **AZAMGARH: SHIVA HYUNDAI:** CHAK KHIRULLA, BELAISA, VARANASI ROAD. CALL: 8601879928. **BALLIA: SHIVA HYUNDAI:** NEER KRISHNA TAKIJ RAJDHANI ROAD. CALL: 8601879924. **MAU: SHIVA HYUNDAI:** ARAJI NO. 150 BAKWAL NEAR ROYAL ENFIELD SHOWROOM. CALL: 8601879938. **GHAZIPUR: SHIVA HYUNDAI:** FATEHULLAHPUR, VARANASI ROAD, NEAR RELIANCE PETROL PUMP, GAZIPUR. CALL: 8601879935. **ALIGARH: SHIVANG HYUNDAI:** BHUKRAWALI, CALL: 9667710711. **KHAIR: SHIVANG HYUNDAI:** CALL: 7088952000. **JHANSI: NATARAJ HYUNDAI:** GORAMACHHIYA, CALL: 7392973707, 9415401194. STATION ROAD CIVIL LINES, CALL: 7705023461, 9415401194. **ORAI: NATARAJ HYUNDAI:** KALPI ROAD NEAR JAISWAL TOWER ORAI. DIST. JALAUN, CALL: 8726034999, 8808808221. **MAHOBA: NATARAJ HYUNDAI:** NEAR D.M BANGLOW GANDHI NAGAR, CALL: 9415113519, 8808808221. **HAMIRPUR: NATARAJ HYUNDAI:** NEAR YAMUNA BRIDGE. CALL: 9415113522. **LALITPUR: NATARAJ HYUNDAI:** NEAR ELITE CHAURAHA, CALL: 7571004868, 8808808221. **BANDA: NATARAJ HYUNDAI:** TINDWARI ROAD KALU KUAN, CALL: 8808196030, 8808808221. **PRAYAGRAJ: G.P. HYUNDAI:** 11/13 TASHKENT MARG, CIVIL LINES. CALL: 7510000976, 7510000971. **SANGAM HYUNDAI:** JHUNSI SARAINAYAT, PRAYAGRAJ. CALL: 9610161812, 8858425556. **DEE HYUNDAI:** 4, S.P. MARG CIVIL LINES. CALL: 7607000530, 7607000537, 7607000515. **GORAKHPUR: MB HYUNDAI:** AUTO ZONE, GULHARIYA, MAHARAJGANJ ROAD. CALL: 8127166666, 8173004001. **BEEAAR HYUNDAI:** PAIDLEY GANJ, 33 KASIYA ROAD. CALL: 7309031901, 7309031909. **JAI HYUNDAI:** MOHADDIPUR ROAD, MOHADDIPUR, GORAKHPUR. CALL: 9236376912, 9236376922. **SIDDHARTHNAGAR : BEEAAR HYUNDAI:** HABIB COMPLEX, DUM DUMWA. CALL : 9724777048. **BASTI: BEEAAR HYUNDAI:** POLYTECHNIC CHAURAHA, MAHUDAR. CALL: 9724777048. **DEORIA: GANPATI HYUNDAI:** OPP. SURYA ACADEMY SCHOOL, RUCCHAPAR GORAKHPUR ROAD, DEORIA. CALL: 6390004601, 6390004602. **PADRAUNA: GANPATI HYUNDAI:** OPPOSITE GUPTA BAJAJ, KASIA ROAD, CHHAWANI, PADRAUNA KUSHINAGAR. CALL: 6390004610.

*Terms & conditions apply. On-road price mentioned is for base variant. Delivery timeline may vary and is dependent upon various factors including model, variant, colour, stock availability, etc. *Offer valid till 31st Octoberber, 2025. HMIL reserves the right to alter or discontinue the deals, benefits or offers at its sole discretion at any time. For more details, visit your nearest Hyundai showroom. Offers mentioned include cash, corporate, either exchange or scrappage benefits as applicable. Offers may vary from variant to variant. Offers may vary from city to city. #EMI may differ basis the bank interest, tenure, customer profile, etc. Finance at the sole discretion of the financier. ~~Scrappage bonus will be applicable against a valid certificate of deposit (issued by government approved and operational scrappage center) and exchange of old car. In case the customer is giving certificate of deposit but not physically exchanging his old car and buying a new car – then only scrappage bonus of ₹5 000 will be paid. This advertisement and car shown here is for creative representation purposes only and the depictions are for illustrative purposes. Features and specifications shown may or may not be part of standard fitment and are subject to change without prior notice. Hyundai Motor India Limited reserves the right to change specifications, colour, equipment and schemes at any time without prior notice. The black shade on glass are due to lighting effect. Size and colour may appear to vary due to lighting and position effect. Shield of Trust & Super are on payable basis. For more details on warranty, please refer owner's manual. ##CSD: Canteen Stores Department, KPKB: Kendriya Police Kalyan Bhandar.

उत्तम उत्पाद
उत्तम
सुपरराइजा और PRANAAM उत्तम का जादू है ख़ास
पोषण मिलेगा पूरा, फसल होगी लाजवाब
उत्तम उत्पाद
उत्तम SUPERRHIZA™
CHAMBAL FERTILISERS AND CHEMICALS LIMITED
FERTILISER
उत्तम उत्पाद
PRANAAM
Nano Phosphorus
PIB TECHNOLOGY
CHAMBAL FERTILISERS AND CHEMICALS LIMITED
K
Mg
Fe
P
S
Mn
Ca
उत्तम का योगदान : सम्पूर्ण कृषि समाधान
कृषि सम्बन्धित जानकारी के लिए सम्पर्क करें
1800 180 5550
चम्बल फर्टिलाइज़र्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड

अलबाग के प्रमुख उत्पाद

खरपतवारनाशक

- लूफोसैट
- नोक्सुला मैक्स
- निशूदक
- पिनाक्सो
- रॉबिस्बेक
- टेस्सा

कीटनाशक

- यूकाडो
- एक्सेस प्लस
- मायझोएट
- मायझोएट गोल्ड
- ओबोलो
- पाराडाइस
- पाइट्रोज़
- रॉट्रीफ अल्ट्रा
- रॉट्रीफ सुपर
- साल्वियो

फफूंदीनाशक

- डिफंग
- इम्पेटू
- रॉस्टॉक
- टोलेडो एस
- एक्ट्राटा गोल्ड

पौध विकास नियंत्रक

- ऑलराईजा
- जी-रेलिक
- पीपी मिक्स
- कॉनटॅन

कीटनाशक

खरपतवारनाशक

फफूंदीनाशक

पौध विकास नियंत्रक

Customer Care No.: 1800 3000 3335
Email : contactin@albaughllc.com

ALBAUGH® your alternative

टीवीएस क्रेडिट
TVS CREDIT
आपकी खुशियों का साथी
इस त्यौहारों के मौसम का उत्सव मनाएं
आसान लोन के साथ अपना पसंदीदा ट्रैक्टर घर ले जाएँ
ट्रैक्टर लोन
यूज़्ड ट्रैक्टर लोन
कृषि उपकरण लोन
तत्काल अप्रूवल
न्यूनतम पेपरवर्क
अधिकतम फंडिंग
1800 572 2121
www.tvscredit.com
स्कैन एंड अप्लाई
*नियम एवं शर्तें लागू। लोन टीवीएस क्रेडिट सर्विसेज लिमिटेड के पूर्ण विवेक पर।

TATA MOTORS
COMMERCIAL VEHICLES
Better Always
TATA
सबसे किफायती मिनी ट्रक**
ACE pro
अब मेरी बारी
TATA KA BHAROSA
सब्ज़ी, अनाज या रोज़ का सामान - ACE pro हर रास्ते, हर सफर पर आपका साथ निभाता है। कम लागत, ज़्यादा मुनाफ़े के साथ आपके बिज़नेस को सफल बनाता है। अपने कारोबार को नई उड़ान देने की, अब आपकी बारी!
EV
PETROL
BiFUEL
750 kg पेलोड
2 046 mm (6'8") लंबी लोड बॉडी
AIS-096 सुरक्षा मानदंडों का अनुपालन#
शुरुआत मात्र
₹3.67* लाख से

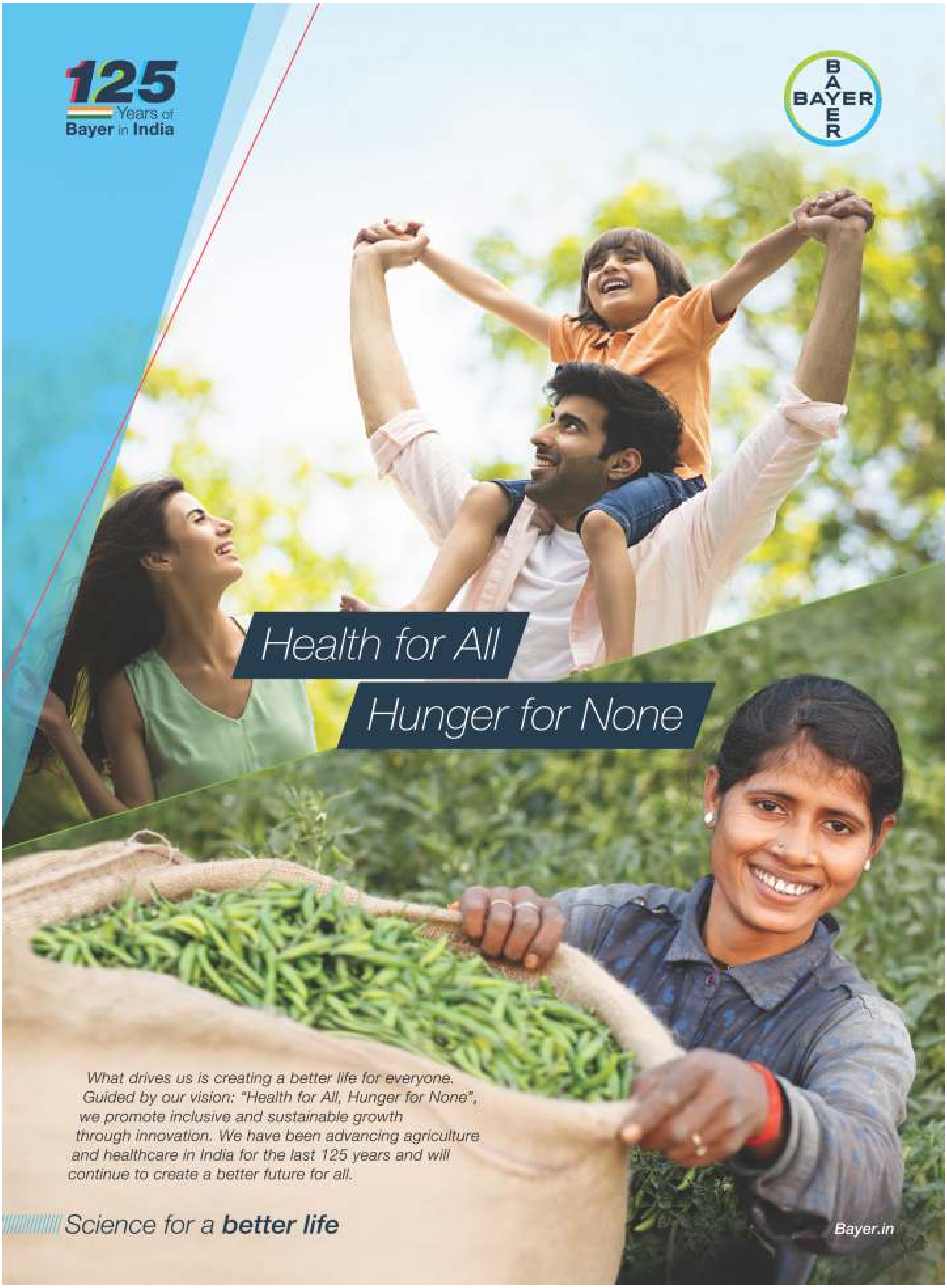
125
Years of
Bayer in India
BAYER
Health for All
Hunger for None
What drives us is creating a better life for everyone. Guided by our vision: "Health for All, Hunger for None", we promote inclusive and sustainable growth through innovation. We have been advancing agriculture and healthcare in India for the last 125 years and will continue to create a better future for all.
Science for a better life
Bayer.in

Savannah
सवा 7501, सवा 7301
हर एकड़
ज्यादा पैदावार
Savannah
Sava 7501
Hybrid Paddy
Savannah
Sava 7301
Hybrid Paddy
110-115 दिन में तैयार
125-130 दिन में तैयार
सवाना की कहानी जानने के लिए स्कैन करें
गिरने के प्रति सहनशील पौधे
बेहतर मिलिंग प्रतिशत व बाजार भाव
खरखरा बदरा मुक्त बालियाँ
भरपूर पैदावार
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 1800 572 9757
FOLLOW US:

वाइब्रेंस इंटेग्रल
3 शक्तियों वाला
सही बीजोपचार जो दे...
ट्रिपल सुरक्षा
Vibrance Integral
syngenta
100 ml
बेहतर गुणवत्ता
बेहतर कल
के लिये
सर्वम
Simodis
Miravis Duo
200 ml
syngenta

ichiban
CROP SCIENCE LTD.
(Powered by Japanese Technology)

PROUDLY PRESENTING

"ICHIBAN'S IN-HOUSE TECHNICAL RANGE FOR MILDEW SOLUTION"

Ichiban Crop Science Ltd.

708-712, Best Sky Tower, Netaji Subhash Place, Pitampura, Delhi-110034
info@ichiban.net.in 011-45271800 (100 lines) www.ichiban.net.in
@ichibancrop @ichibancrop @ichibancrop @ichibancrop

KRISHAJ
50 Years of Cultivating Prosperity
स्वस्थ फसलों के लिए
नवीनतम एवं शक्तिशाली
फफूंदीनाशक समाधान
PATENT APPLIED
PATENT APPLIED
KEY SHIELD
FUNGICIDE
Mancozeb 64% + Thiophanate Methyl 12% WP
KRILAXYL
SYSTEMIC AND CONTACT FUNGICIDE
Metalaxyl 8%+Mancozeb 64% W.P.
KOKSY55
FUNGICIDE
KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.
स्कैन करें और हमारे अन्य उत्पादों को देखें।
कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड
1115, हेमकुंट टावर, 98, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली , 110019 (भारत)
टोल फ्री नंबर: 1800-572-5065 I वेबसाइट: www.krepl.in
Follow us on: @krishirasayan73

AGMA
Energy Pvt. Ltd.
आपके साथ
हर फसल में,
हर ख़ुशी में
MIKOZEN
K MAX
ENERGY
UPT
Gallant - EG
Cultivo
AGRO POWER
ENERGY
AGRO LIFE SCIENCE
CORPORATION
YOSHI
KAZUKI

हल ब्राण्ड

सभी किसान भाईयों को
दिपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

BE SMART
AGRI ENTRPRENEUR

Changing
Farmers Life

amber®

AN ISO 9001: 2015 CERTIFIED CO.

NEST

VIJASU ECOTEC

• Patented Technology • Power Packed Product
• Multi Stage Application

Constant Transformation. Sustainable Tomorrow.
सतत परिवर्तन. शाश्वत कल.

Certified as pesticide residue free by Government Lab in Maharashtra

Corporate Office: 601, De Elmas Building, Sonawala IT Park Lane, Goregaon (E), Mumbai - 400063
Customer Care: 908 296 4680 | **Website:** www.vijasu.com

JAI KISAAN
NAVRATNA
Paradeep Phosphates
PPL
46% फ़ॉस्फ़ोरस का
वरदान, फ़सल में लाये जान!
खाद दमदार, फ़सल ज़ोरदार!
जय किसान नवरत्ना
टी एस पी 46% P
• उपज की गुणवत्ता और मात्रा में बढ़ोतरी
• कम pH यानी पोषक तत्वों का अधिकतम उपयोग
• जड़ों और तनों के विकास में सहायक
PRADHANMANTRI
Bhartiya Jan Urvarak Pariyojna
भारत टी एस पी
BHARAT TSP
TRIPLE SUPERPHOSPHATE FERTILISER
PARADEEP PHOSPHATES LTD.
JAI KISAAN NAVRATNA
BHARAT TSP 46% P2O5
जय किसान नवरत्ना
EMPOWERED FARMERS, SELF-RELIANT INDIA

महिंद्रा ट्रैक्टर्स

महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड, फॉर्म इक्विपमेन्ट सेक्टर, फॉर्म डिवीजन, एएफएस हैडक्वार्टर्स, महिंद्रा टावर्स, पहली मंजिल, आकुर्ली रोड, कांदिवली (पू), मुंबई - 400101, भारत. फ़ोन: 28849588, फ़ैक्स: 28465813.
टोल-फ्री नंबर 08037749101 | www.mahindratractor.com facebook.com/MahindraTractorsIndia
x.com/TractorMahindra youtube.com/MahindraTractorsofficial www.instagram.com/mahindratractorsofficial
नियम और शर्तें लागू। यह ऑफर महिंद्रा डीलर्स के सौजन्य से। ऑफर सिमीत समय के लिए उपलब्ध। अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर 1800 2100 700 पे कॉल करें।

Leading

Manufacturer of

- Agro Chemicals
- Bio Pesticides
- Azadirachtin Technical
- Neem Based Products
- 300 PPM, 1500 PPM, 3000 PPM, 10000 PPM, 50000 PPM

Sunshiv Botanics Private Limited

+91 701 182 3838 | info@sunshivbotanics.com | www.sunshivbotanics.com

Unit-1: Plot No. 5E, Opp. Yamaha Plant, Add. Industrial Area, Mathura Road, Faridabad, Haryana, India-121001

Unit-2: Kila No. 6,7,8 phulwari road, Palwal, Haryana, India-121105

Bharat Certis AgriScience Ltd.

A Group Company of Mitsui & Co., Ltd., Japan

आधुनिक तकनीक का भरोसा !
अधिक उत्पादन एवं उत्तम सुरक्षा !!

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं !

संपर्क करें

8882 426 426

भारत सर्टिस किसान ऐप

BCA

प्ले स्टोर से डाउनलोड करें

Ellora® Natural Seeds

From Seed to market.....!

एलोरा® नॅचरल सिड्स प्रा.लि.

From Seed to market.....!

सभी किसान और विक्रेता भाइयों को एलोरा परिवार कि ओर से

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें...।

DSIR

DEPARTMENT OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH, GOVT. OF INDIA RECOGNIZED IN-HOUSE R&D

NABL

NATIONAL ACCREDITATION BOARD FOR TESTING & CALIBRATION LABORATORIES

एलोरा सिड्स®

बीज से बाजार तक आपके साथ।

उत्कृष्ट एवंम दर्जेदार प्याज बीज, मक्का बीज व अन्य सब्जी बीज देणेवाली भारत की अग्रगन्य कंपनी...!

भिंडी : एलोरा गौरी (5960)

भिंडी : एलोरा सुकन्या (1016)

भिंडी : एलोरा प्रियंका (2526)

मिर्च : एलोरा तेज (505)

ककडी : मंदाकिनी (12)

टोमॅटो : अंबूजा (34)

लौकी : एलोरा सम्राट (7759)

खरबूज: एलोरा सिंधू (596)

गाजर : देशी रेड

करेला : एलोरा लक्ष्मी (116)

तरबूज : एलोरा महंत (12)

उत्तरप्रदेश के सभी प्रमुख वितरक के पास मौसम के अनुसार उपलब्ध ।

रजि. ऑफिस : प्लॉट नं. ४, गट नं. ११७, नक्षत्रवाडी, एच.डी.एफ.सी. बँक के पास, पैठण रोड, छत्रपती संभाजीनगर (औरंगाबाद) (महाराष्ट्र). ग्राहक सेवा केंद्र :- 7030643643

Contact : UP - ASM - 9028074919, RM - 7768005383.

Coromandel
FUTURE POSITIVE
क्योंकि हम किसान जानते हैं,
सब हमारे भरोसे हैं,
इसलिए हमारा भरोसा! GROMOR
जिनके भरोसे दुनिया,
उनका भरोसा ग्रोमोर
DON'T USE HOOKS
FERTILISER
GROMOR
GroPlus
ग्रोमोर ग्रोप्लस
20:20:0:13 GROMOR
14:35:14 GROSHAKTI
15:15:15:09 (S) GROMOR

HAPPY Diwali

Laxmi Inputs
Seeds for Prosperity

अमेलिया

- मजबूत बेल वाला फैलावदार पौधा।
- जल्दी तुड़ाई देने वाली किस्म (35-38 दिन में)।
- बेलनाकार हरे रंग के आकर्षक चमकदार मजबूत फल।
- फल की लम्बाई 20-25 सें.मी.।
- बिमारियों के प्रति सहनशील एवं अत्यधिक
- पैदावार देने वाली किस्म।
- **PM & DM** के प्रति अधिक सहनशील।

LHT-नन्दी

- 3.5 से 4 फुट का मजबूत फैलावदार पौधा।
- जल्दी तुड़ाई (65 से 70 दिन) एवं अधिक उत्पादन देने वाली किस्म।
- फल गोल, वजनदार एवं मजबूत।
- फल का वजन 90 से 100 ग्राम।
- TLCV एवं अगेती झुलसा के प्रति सहनशील
- खरीफ एवं पछेती रबी मौसम के लिए उत्तम किस्म।
- दूर मण्डियों के लिए उपयुक्त किस्म।

हाईब्रिड टमाटर

LHC-दिया

- मजबूत शाखाओं वाला झाड़ीनुमा पौधा।
- फल की पहली तुड़ाई 58-62 दिन।
- फल का रंग आकर्षक गहरा हरा एवं लम्बाई 8-9 सें.मी.।
- अधिक उत्पादन क्षमता हरे एवं लाल रंग के लिए उत्तम किस्म।
- रोगों के प्रति अत्यधिक सहनशील किस्म।
- मंडी आढ़तीयों की पहली पंसद एवं दूर दराज की मंडी के लिए उपयुक्त किस्म।

LHT-डॉन

- मध्यम ऊँचाई वाला फैलावदार मज़बूत पौधा
- पहली तुड़ाई 68 से 70 दिनों में
- 100 से 110 ग्रा. के अण्डाकार गहरे लाल रंग के ठोस फल
- TLCV व अन्य बिमारियों एवं गर्मी के प्रति अधिक सहनशील किस्म
- अत्यधिक पैदावार एवं दूर यातायात के लिए उत्तम किस्म दूर मण्डियों एवं आढ़तियों की पहली पसंद

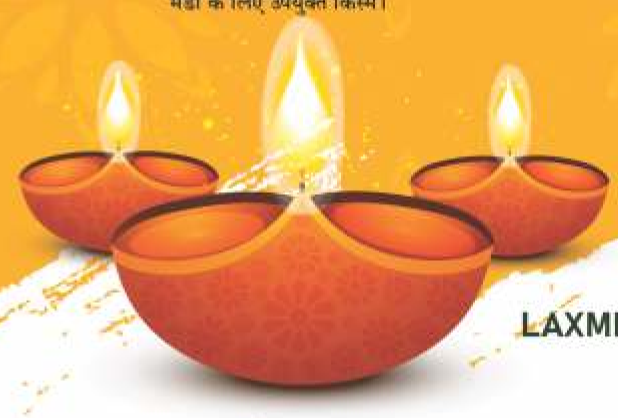

लम्बे समय तक तुड़ाई देने वाली किस्म

LAXMI INPUTS (INDIA) PRIVATE LIMITED, Bengaluru

www.laxmiinputs.in

आयशर ट्रैक्टर्स
66 वर्षों के
विश्वाश का महोत्सव
ट्रिपल धमाका ऑफ़र !
1st GST की महाबचत
2nd 66 वीं वर्षगाँठ स्पेशल ऑफ़र
3rd निश्चित व आकर्षक उपहार
₹68 000* तक
लकी ड्रॉ द्वारा पाएं बंपर इनाम
6 ट्रैक्टर
6 रोटोटिलर
6 बुलेट (रॉयल एनफील्ड)
6 विदेश यात्रा
66 मोटर साइकिल (125cc)
666 LED टीवी
66 लैपटॉप
666 कैश बैक
6666 चाँदी के सिक्के
प्रत्येक ट्रैक्टर की खरीद पर तुरंत पाएँ
निश्चित व आकर्षक उपहार
6 Ltr. डीज़ल
+
डिजिटल स्मार्ट वॉच
1800 2020 200
ऑफ़र आयशर ट्रैक्टर डीलर्स की ओर से सीमित समय के लिए मान्य। उपहारों पर सरकारी टैक्स लागू होंगे। दर्शाए गए चित्र वास्तविक से भिन्न हो सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए नज़दीकी डीलरशिप से संपर्क करें। *नियम व शर्तें लागू
Manufactured and Marketed by TAFE Motors and Tractors Limited, Under a Licence from Eicher Goodearth Private Limited. Eicher is the Exclusive Trademark of Eicher Goodearth Private Limited.

RNI No. DELHIN/2014/59516
Delhi Postal Regd. No.:DL(E)-20/5477/2024-26
Published on 5th & Posted on 7th - 8th of Every Month